vol. 1 (nos 3, 4, 5, 6, 8, 9, 10, 11, 12,)
1877–78

(Formerly vols. 1, 2, 3 & 4
were bound in one vol.
and named as v. 1)

REGISTERED NO. 93.

THE HINDIPRADIPA.

हिन्दीप्रदीप।

मासिकपत्र।

विद्या, नाटक, समाचारावली, इतिहास, परिहास, साहित्य, दर्शन, राजसम्बन्धी इत्यादि के विषय में

हर महीने को १ ली को छपता है॥

शुभ सरस देशसनेह पूरित प्रगट ह्वै आनंद भरै।
बचि दुसह दुरजन बायु सों मणिदीपसम थिर नहिं टरै॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरै।
हिन्दीप्रदीप प्रकाशि मूरखतादि भारत तम हरै॥

ALLAHABAD.—1st Nov. 1877. [Vol. I. No. 3.]

प्रयाग कार्तिक कृष्ण ११ सं० १९३४ [जि० १ संख्या ३]

भारतजननी और इङ्गलंडेश्वरी का सम्वाद।

इङ्गलण्डेश्वरी भारतजननी से—बहिन तुमने तो बहुत गहरी नींद लिया अब तो उठो देखो इतने दिन की कमाई जो कुछ तुम्हारे पास थी सब गवांई असभ्य अर्द्ध शिक्षित वन्य और दास की पदवी पाई तो भी तुम्हारी आंख नहीं खुलती अब क्या रहा है जिस पर तुम भरोसा किए हो॥

भारतजननी—(चौंक कर) ऐं यह तुमने क्या कहा तनिक फिर तो कह.

असभ्य अर्द्ध शिक्षित और दास की पदवी क्या मेरे ही लिए नियत की गई है? मेरी सभ्यता और बुद्धिमानी की याद क्या तुम्हें भूल गई कि किसी समय मैं गुरुओं की गुरू उस्तादों की उस्ताद मुअल्लिमों की मुअल्लिमा और राजाधिराजों की भी महारानी थी मेरी सभ्यता का प्रकाश और मेरा नाम सब दिशाओं में उस समय से उजागर है जब तुम्हारा कहीं नाम निशान और पता भी न था; मिसिर, यूनान, और क्याल्डिया, ने किसकी चरण सेवा कर बुद्धि और विद्या पाई ज्योतिषशास्त्र, अङ्कविद्या, पदार्थ विद्या, वैद्य विद्या, कलाकौशल, कविता और दर्शनों का केन्द्र स्थान कौन था बहुमूल्य रत्नों की खान से रत्नगर्भा यह वसुधा का नाम किसके कारण से हुआ यह हीरा जो तुम्हारी मुकट में चमक रहा है इस की उत्पत्ति कहां से हुई कहां तुम्हारा ध्यान है छोटे मुह बड़ी बात तनिक होश की दवा करो॥

इङ्ग०—हां हां यह कौन कहता है कि किसी समय तुम इन सब गुणों से भरी पूरी थी रंजो पंजो नहीं रही हो परन्तु अब तो तुम्हारी वह कोई बात बाकी न रह गई अब तुम्हें किस बात का अभिमान है यह सब पुराना किस्सा सुन हमे वही कहावत याद आती है कि "हमारे बाप ने घी खाया है तुम्हें विश्वास न हो हमारा हाथ सूंघ लो" बहिना तुम तो हम से बहुत बड़ी हो हम तुम्हें भला क्या उपदेश करें यह सब हम शिक्षा की राह से नहीं कहतीं किंतु तुम्हारी यह वर्तमान दीन दशा देख हमें दया आती है॥

भारतजननी—(दुःख से) हाय हाय मेरे वे दिन कहां गए मेरे वे सत्पुत्र कहां मर बिलाने जिनके असम साहस वीर्य और धैर्य से मैं सबों की शिरोमणि थी; सखी मैं तुम्हारा धन्यबाद करती हूं जो तुम मेरी इस दीन दशा पर तर्स खाकर मुझे धीरज दे रही हो अच्छा बताओ मैं क्या यतन करूं॥

इङ्ग०—और यतन हम क्या बतावैं तुम अपने सन्तानों से कहो वे हमारे सत्पुत्रों से निष्कपट होकर मिलें और परस्पर ऐसा प्रेम बढ़ावें जिसमें हम दोनों की नित नित बढ़ती होती जाय बहिना तुम हमें बढ़ाओ हम तुम्हें बढ़ावें "परस्परंभावयन्तः श्रेयःपरमवाप्स्यथ" देखो वे उपद्रवी जो तुम्हें सदा पीड़ा दिया करते थे उनका निर्मूल हो गया; हां एक

रूसियों का तनिक खटका है सो उसको भी हम सब उपाय कर चुके हैं अब तुम्हें सब ओर से शान्ति और स्थिरता है॥

भारतजननी – यही बात तो कठिन और अनहोनी है क्योंकि मेल और एका किसे कहते हैं यह तो हमारे पुत्र जानते ही नहीं यदि यही होता तो हमारी यह दशा क्यों हो जाती; फिर भी हमारे सन्तान किसी तरह मिला भी चाहें तो तुम्हारे सत्पुत्र उनसे कब मिलने वाले हैं वे भला काहे को जित और जेता का भाव त्याग करेंगे काले और गोरे का भेद उनके मनसे कब दूर होनेवाला है; रात को जब हमारे सन्तान घर में आते हैं तब वे ऐसा तरह २ का दुखरोना मेरे सामने रोते हैं कि उसे सुन मेरा भी जी भर आता है उनमें वे जो अनपढ़े और मूढ़ हैं जो इतनी बुद्धि नहीं रखते कि तुम्हारे मायावी पुत्रों की काट ब्योंत समझ सकें वे तो भला किसी भांति सन्तोष भी कर लेते हैं पर वे जो पढ़े लिखे और समझदार हैं उनका दुख सुन मेरी छाती धड़कने लगती है; कोई कहते हैं अच्छे अच्छे ओहदे ये सब आप लेलेते हैं केवल पिसौनी और मेहनत का काम हमें देते हैं उसमें भी हमारा बिश्वास तनिक नहीं करते; कोई २ कहते हैं हमारे परिश्रम से जो कुछ उत्पन्न होता है उसका हीर मक्खन मसान सो कुछ होता है उसे ये आप लेलेते हैं केवल छाछ और खूंद हमारे लिए छोड़ते हैं; कोई कहते हैं मा चुङ्गी और टैक्स हमें निगले लेती है कोई राज कर के बोझ से दब अङ्ग भङ्ग हो दीर्घ स्वर से सिगरी रात पड़े २ चिल्लाया करते हैं कोई कहते हैं पहिले तो ये हमें लालच देते हैं कि यह पद हम तुम्हीं को देंगे तुम योग्यता तो सीखो पीछे से तनिक भी झलक देखाय द्वार बन्द कर लेते हैं यह सब तुम्हारे सत्पुत्रों के लच्छन हैं इन बातों से भला हमें कैसे बिश्वास हो कि वे हमारा उपकार करेंगे॥

इङ्गलण्डेश्वरी – सखी तुम ठीक कहती हो तुम्हारे पुत्रों के रोने का शब्द कभी २ मेरे कान तक भी पहुंचता है इसी लिए मैंने अपने प्रियपुत्र प्रिन्स को भी भेजा था सो उसने भी आकर इन सब बातों का अनुभव किया होगा तुम दुखी मत हो मैं जाती हूं उसी से इस का परामर्श कर जो कुछ तुम्हारा हित होगा वही करूंगी॥

[प्रस्थान]

चन्द्रसेननाटक ॥

चन्द्रसेन नाटक दूसरे नम्बर के १६वें पेज के आगे से ।

विज—(ठंढी सांसें भर) हा ! सच है "छिद्रेष्वनर्थाबहुलीभवन्ति" सागरचंद्र तो अब अलाउद्दीन के सिरदारों ने क्या करना बिचारा है ॥

सागर—उन सबों ने सलाह कर इन्द्रमणि को कैद कर लिया है और मदन लतिका को उसके घरसे निकाल लाए हैं और महा कुरूप एक कुबड़े के साथ इस चन्द्रबदनी को क्वों ी फिरवाय दिल्लीपति अलाउद्दीन के पास भेज देंगे ; महाराज बड़ा अन्याय है परन्तु क्या कीजिये केवल हाथ मीजने के सिवा हम लोग कोई उपाय नहीं कर सकते अस्तु दैवेच्छा बलीयसी ॥

विज—क्यों उपाय क्यों नहीं है तुम सेनापति अमर सिंह से जाकर कह दो कि हमारी सब सेना साज रक्खे और दुर्ग रक्षक कामपाल से कहो कि गढ़ी में तोपें चढ़ा दे हम लोग भी कट मरेंगे जो कुल में कलङ्क लगा और सदा के लिए गरदन नीची हुई तो जीही क्या करेंगे ॥

सागर—जो आज्ञा (रोता हुआ बाहर गया)

विजय—जांय एक बार रनवांस में जाकर रानियों से मिल भेंट उन्हें दिलासा दे आवें क्योंकि कौन आशा है कि संग्राम से जीते लौटेंगे (जाता है)

यवनिका पतन ।

(प्रथमोऽङ्कः)

दूसरे अङ्क के पात्र ॥

चन्द्रसेन—राणा के कुल का एक क्षत्री ॥

कलानाथ—चन्द्रसेन का लड़का ॥

विनोदिनी—चन्द्रसेन की स्त्री ॥

तुराब खां, मौजू खां, फज़लखां—अलाउद्दीन की फौज के तीन सरदार ॥

द्वितिय अङ्क ।

प्रथम गर्भाङ्क ।

स्थान् ।

उदयपुर में चन्द्रसेन का शयन गृह । चन्द्रसेन उदासीन बैठा है और उसकी स्त्री विनोदिनी पास बैठी है ।

बनो—नाथ इन दिनों आप उदास क्यों रहते हो ? हम उदासी का कुछ कारन हमें नहीं जान पड़ता, आप क्यों मन मलीन हो रहे हो ? जीविनेश आप का

यह चित्त विक्षेप देख हमारी छाती फटी जाती है, पहिले हम सदा तुम्हे प्रसन्न मुख देखती थीं पर अब कुछ थोड़े दिनों से प्राण धन के मुख चन्द्र की द्युति मलिन देख मुझे भांत २ के सन्देह होते हैं यदि कहने में आप की कुछ हानि न होती हो तो इस दासी से इसका हेतु अवश्य कहिए।

चन्द्र—प्रिये क्या करोगी हमारा वृत्तान्त पूछ तुम अबला हो हमारा दुख सुन धीरज छोड़ तुम भी दुखी होगी तुम्हें जो कुछ जुरै मिले खाओ पिओ गृहस्थी के सब काम काज किया करो संसार के पचड़ों से तुम्हें क्या प्रयोजन है; हम तो पुरूष व्यक्ति हैं दिन भर मे न जानिए कैसे २ लोगों से हमे मिलना पड़ता है और कितनी उलटी सीधी बातें हम पर आ पड़ती है उन सबों को हम तुम से कहां लो सुनाया करें।

स्त्री—नाथ यह आप क्या कहते हैं तुम्हारे दुख वा सुख को हम साथ देने वाली न भई तो तुम्हारी अर्द्धाङ्गिनी कैसी; कुलवधून का यह काम नहीं है कि हम आत्म सुख रत रहें और आप हमारे भरण पोषण निमित्त भांत २ के क्लेश उठाओ; हाय धिक्कार हमारे जीवन को; नाथ तुम क्या मुझे भी उन्ही असती स्त्रियों में गिनते हो जो अपने पति को केवल प्राण शोषिणी और स्वार्थपोषिणी हो इन दिनों भारतबर्ष की स्त्रियों को कलङ्कित करती हैं प्राण प्रिये हम कुल कामिनी कैसी जो तुम्हारे सुख से सुखी और दुःख से दुखी न हुईं॥

चन्द्र—प्रिए क्या कहूं मैं ऐसा मन्द भाग्य हूं कि जहां जाता हूं वहां ही मेरे फूटे करम से टूटा पड़ता है एक तो उदयपुर के राणाओंपर दिल्ली पति योंही सदा क्रुद्ध रहते हैं क्योंकि उन्हीं ने आज तक मुसलमानों को कन्या नहीं दी दूसरे किसी जासूस ने अलाउद्दीन बादशाह को खबर दी है कि चन्द्रसेन राणाओं को हमारे प्रति उभाड़ रहा है राणा महाराज का भी जो इन दिनों न जानिए क्यों हम से फिरा हुआ जान पड़ता है, विहार में था तब इन्द्र मणि से विरोध होने के कारण वहां न ठहर सका यहां यह दुर्दशा आ पड़ी सच है "दैवोदुर्बलघातक" देखें भगवान कैसे बेड़ा पार लगाता है यह कुदशा पिशाची मनुष्य की जैसी चाहे वैसी गति कर डाले (नेपथ्य में अली अली का शब्द) (विलासिनी उठ कर चन्द्रसेन को लिपट जाती है) नाथ अब क्या उपाय हो

जान पड़ता है मुसलमानों की सेना आ पहुंची क्या ? हा दैव तूं हम से क्यों रूठा हुआ है।

चन्द्र--मत डरो हम क्षत्री हैं और तुम क्षत्री की बेटी हो शत्रु से एतना डरती क्यों हो अब यह समय हमारे कादर हो जाने का नहीं है ऐसे समय में अपनी शक्ति भर पराक्रम करना उचित है वीरों को तो संग्राम देख दोगुना उत्साह बढ़ता है, तुम भीतर जावो हम भी अब खड्ग का शरण लेने के सेवाय और क्या दूसरी उपाय कर सकते हैं।

विनो- (पांव पकड़) हाय अब मेरा सर्व नास हुआ नाथ आप अकेले हैं आप लड़ने को न जाइए।

चन्द्र-छि: इस समय अब हम तेरे रोके रुक सकते हैं भला किसी तरह (चन्द्र सेन ढाल तलवार हाथ में उससे छुट कर बाहर आता है और देर तक मुसलमानों से लड़ मरा जाता है उसके पुत्र कलानाथ को घायल कर डालते हैं और विनोदिनी का बाल पकड़ बाहर खींच लाते हैं।

फौज का एक सरदार गुलाब खां-बांध लो इस हरामजादी को इसे ले चलो लौंड़ी बनावेंगे (कलानाथ के पास आ कर) और यह शायद उसी काफर का लड़का है इस को भी मुश्कें कस लो इसे कलमा पढ़ाय गुलाम बनावेंगे इस का बाप बड़ा बदमाश आदमी था यह उसी काफ़र की शरारत थी कि हम उदयपुर के राणाओं की लड़की लेने से हमेशा महरूम रहे नहीं तो राणाओं की क्या हकीकत थी कि हमें अपनी लड़की न देते॥

विनो-हाय मैं पापिनी रंडापे का दु[ख] भी चैन से न झेल सकी दोहाई सुल्तान की हाय अब मैं क्या करूं अरे तु[म] लोग सिपाही हो तनिक अपना धर[्म] बिचारो हम ने तुह्मारा क्या अपरा[ध] किया है स्त्री का मारना तो तुह्मारे ध[र]म में भी मना होगा; हायरे कठो[र] हृदय करुणा शून्य निर्दयी बिधाता अ[भी] तेरा सन्तोष नहीं भया जो मेरा स[र्व] नाश तो होइ गया अब मेरा धरम भ[ी] जाया चाहता है; हाय अब क्या मुझे सूथन पहिन हिन्दुइन से मुसलमानि[न] बनना पड़ेगा (फौज के सिपाही ए[क] मारते हैं) चुप रह हरामजादी (ए[क] सबों का सरदार फजल खां उसके पा[स] आकर) ठहरो २ इसे मत मारो इस[के] पास जो कुछ जेवरात हों उन्हे ले लेवा रफ़ा दफ़ा करो पर इसी कहीं यहां

रहे (उसे छोड़वा देता है और वह चली आती है) (कलानाथ के पास आकर) तू भी जाया चाहता हो तो चला जा पर खबरदार अपनी मां से न मिलना कहीं ; इसकी तलवार छीन लो और इसे कहो जो कुछ इसके पास हो रख दे ॥

राव — अजी जनाब आपका कहां ख्याल है इसे मार ही डालना बेहतर है यह काफ़र ज़िन्दा रहेगा तो फिर फ़साद बरपा करेगा किस वास्ते कि शेखसादी ने फ़रमाया है " सांप को मारना और उसके बच्चों को हिफ़ाज़त क़रना अक़ल मन्दो से बईद है" ।

— नहीं २ यह अभी नाबालिग है यह कुछ न कर सकेगा ; सुन यहां आ देखें तेरे पास क्या है (वह उसके पास आता है और फ़ज़ल खां उसको तलाशी लेता है उसको जेब में एक बटुआ पाकर) यह क्या है ॥

कला — हज़ूर यह बटुआ हमारे बाप हमें दे गए हैं अब यही मानो उनकी निशानी बच गई है इसे आप फेर दें तो बड़ी मेहरबानगी हो ॥

फज — अच्छा ले (देने लगा) नहीं ठहर देखें इसमें क्या है (बटुआ खोलता है और उसमें एक कागद पाकर) यह क्या है इसमें यह क्या लिखा है (कागद और बटुआ दोनों फेंक कर) छि: यह तो काफिरों की ज़बान इस में लिखी है इसे छूकर हमें वज़ू करना पड़ा अच्छा अब तू जल्द यहां से चला जा ॥

(कलानाथ बटुआ उठाय उधर ही चला जिधर उसकी मा गई थी)

फ़ज़ल — इधर मत जा ; क्या अपनी मा से फिर मिलेगा क्या ? इधर तरफ़ जा (नेपथ्य के दूसरी ओर से उसे निकाल देते हैं)

फ़ज़ — चलो बादशाह को इसकी इत्तिला दें (सब गए) शेषभागी ।

जि·१ नं·५ पृ: २२ देखो

मेघदूत ।

(श्रीमहाकवि कालिदास की अनुपम कविता का अनुवाद ललित भाषा छन्दों में)

प्रचिताक्षरदीपिका, प्रेमरत्नाकर, विजयराघवपचीसी, भाषाऋतुसंहार आदि अ-

नेक पुस्तकों के कर्ता श्रीमद्विजय राघवगढ़ाधीश श्रीठाकुरसरजूप्रसाद जी के आत्मज श्रीठाकुर जगमोहन सिंह कर्तृक अनुवादित ॥

दोहा । श्री बैदेही न्हान कों, बिमल सलिल सर यत्र ।
राम शैल बन शैल मधि, रहत यच्च एक तत्र ॥ १ ॥
चूक्यो लखि अधिकार सों, धनद दियो जेहि शाप ।
सह्यो बरस इक लौं कठिन, प्रिया बिरह सन्ताप ॥ २ ॥
तासों निवसत सो तहां, निज अधिकार गवांय ।
सघन वृच्छ छाया तरे, बितवत दिन अकुलाय ॥ ३ ॥
तेहि गिरि वह कामी बसत, निज अबला सों दूर ।
कनक वलय खसि भुज लगे, गुरु बियोग भरपूर ॥ ४ ॥
प्रथम दिवस आषाढ़ के, चूमत शिखर गिरिन्द ।
जल बिहार रत गज सरिस, लखे मेघ के वृन्द ॥ ५ ॥
कोउ बिधि घन के सामुहें, धनद भृत्य तब आय ।
रोकि दुसह दुख आसुघन, कहत अतिहि खिजलाय ॥ ६ ॥
जाको आगम देखि के, केतक सुमन सु होय ।
ऐसे पावस समय में, धीर धरै नहि कोय ॥ ७ ॥
निज निज नारी कण्ठ में, दिए रहत भुज दोय ।
तिनहूं को लखि मेघ नभ, जीय और ही होय ॥ ८ ॥
तो हम से दुखियान कों, जो प्यारी सों दूर ।
क्यों न होय अति ही दुखद, पावस पापी क्रूर ॥ ९ ॥
लागो सावन मास जब, जलधर सम्मुख जाय ।
प्यारी जीवहि सो नियत, कह्यो कथा समुझाय ॥ १० ॥
कुटज कुसुम को अर्घ लै, कुशल पठावन हेत ।
आदर सों अरु प्रीति सों, स्वागत कहि कहि देत ॥ ११ ॥
धूम जोति अरु सलिल शुभ, मरुत आदि को मेल ।
कहां मेघ असमर्थ अति, देख परत सब खेल ॥ १२ ॥

काहां चतुर संदेस ये, चतुर जनन के योग।
चतुर अर्थ सों युक्त ये, ले जावहिं बुध लोग ॥ १३ ॥
पै निज प्यारो विरह दुख, ऐसो यच्छ अचेत।
कामों सहजहिं दीन तिहिं, बिनवत पठवन हेत ॥ १४ ॥

कबित्त।

भए आप पुष्कर आवर्तक के बड़े बंश, काम रूप इन्द्र के मुसाहिब कहाइए।
शापित धनद सों हैं तासों जाच्यों जानि बड़े, जाचिए न नीच भलो ऊंच सों न पाइए ॥
बाहर बगीचन बसत शिव शीस शशि, कला धौत यच्छ की अलक पुरी जाइए।
तपत बुझाइए जू जीवन बियोगिन के, प्यारी सों हमारो हाहा खबर सुनाइए॥ १५॥

दोहा।

तुम कहँ नभ पथ जात लखि, पथिक जनन की नारि।
देखहिंगी अति हरष सों, सिगरो काम बिसारि ॥ १६ ॥
मुख सों अलक हटाय के, सुमिरत बिरह कलेस।
निज पति आगम आस सों, देखहिं तुम्हें हमेस ॥ १७ ॥
तुमहि कण्ठ लखि छांड़ि को सकत बियोगिन नारि।
ऐसे तो तुमही अहो परबस दुखित बिचारि। १८ ॥

बाल्मीकि रामायण ॥

पेज ८ के आगे से।

चौपाई।

जहं अनेक उपवन अमराई । बनेउ अगाध जासु अति खाई ॥
लगी साल वृन्द चहुं ओरा । सदा रिपुन जो दुर्गम घोरा ॥
उष्ट्र तुरङ्ग द्विरद समुदाई । विविध भांति जहं खर अरु गाई ॥
चक्रवर्ति आधीन अनन्ता । छुति जहां बहु नृप सामन्ता ॥
जहंजनरत दानादिक धर्मा । नितसिमिकरहिंविविधबलिकर्मा।
देस देस ते जहं ब्योपारी । आइ करहिं शोभा अति भारी ॥

रतनजटित जहं लाख हजारी । गिरि सम सोहहिं उच्च अटारी ॥
बनेउ केलि मन्दिर जिन्ह न्यारे । नारिन क्रीड़ा हेतु अपारे ॥
स्वर्ण लेप तें जग मग करई । अमरावती सुपुर अनुसरई ॥
श्रेष्ठ नारि जन जहँ बहुभांती । शोभा देत रत्न बहु जाती ॥
महल सतखने लखियजिते तित । सघन सुदृढ़ सम भूमि निवेशित ॥
भरी शालि तंडुल सु महाना । सरस जासु जल इच्छु समाना ॥
बाजहिं जहां मधुर सुर सङ्गा । दुन्दुभि बीना ढोल मृदङ्गा ॥
सर्वोत्तम अति बन्यो मनोहर । जिमि बिमान तप प्राप्त सिद्धकर ॥
सुभट महारथ जहां हजारा । पूरि रहे जहां बली अपारा ॥
जे वे कुशल बिशारद बीरा । बेधहिं छनिक मांहि लै तीरा ॥
पै निज बान न कबहुं चलावैं । शत्रु सहाय हीन जो पावैं ॥
नाहिन देखहिं नजर उठाई । करि रिपु युद्ध भाजि जो जाई ॥
लेइँ न अस्त्र जानि रिपु छीना । पिता पुत्र सब ही तें हीना ॥
शब्दवेधि बिद्याहि जे जानहिं । पै एहि बीर कर्म नहिं मानहिं ॥
सिंह बराह बाघ जे गरजहिं । और मत्त्तगज अपर जे तरजहिं ॥
तिन कहँ जे भट हाथन पकरहिं । अथवा शस्त्रन छन में मरदहिं ॥

दोहा ॥

बसहिं जहां द्विज गन अमित, अग्निहोत्र बुध मान ।
बेद अङ्ग युत पारग, पूत महर्षि समान ॥
सत्य शील तिमि धार्मिक, निरत अपर हित काज ।
पुर बसाइ इमि पालत, श्रीदशरथ महराज ॥

इति पञ्चमः सर्गः ।

श्रीयुत बाबू हरिश्चन्द्र का लेक्चर ५ पेज के आगे से ॥

पढ़े संस्कृत बहुत बिध, अंग्रेजी हू आप ।
सभा चतुर तउ नहि भए, हिय को मिटो न ताप ॥ ४७ ॥

तिमि जग शिष्टाचार सब, मौलवियन आधीन ।
तिन सों सीखि बिनु रहत, भए दीन के दीन ॥ ४८ ॥
बैठनि बोलनि उठन पुनि, हसन मिलन बतरान ।
बिन पारसी न आवही, यहि जिय निश्चय जान ॥ ४९ ॥
तिमि जग की विद्या सकल, अंग्रेजी आधीन ।
सबै जानि ताके बिना, रहै दीन के दीन ॥ ५० ॥
करत बहुत बिधि चतुरई, तऊ न कछू लखात ।
नहिं कछु जानत तार में, खबर कौन बिधि जात ॥ ५१ ॥
रेल चलत केहि भांत सों, कल है काको नावँ ।
तोप चलावत किमि सबै, जारि सकत जो गावँ ॥ ५२ ॥
बस्त्र बनत केहि भांति सों, कागज केहि बिधि होत ।
काहि कवाइद कहत हैं, बांधत किमि जल सोत ॥ ५३ ॥
उतरत फोटोग्राफ किमि, छिन महँ छापा रूप ।
होय मनुष ही क्यों भए, हम गुलाम ए भूप ॥ ५४ ॥
यह सब अंग्रेजी पढ़े, बिनु नहिं जान्यो जात ।
तासों याको भेद नहिं, साधारनहि लखात ॥ ५५ ॥
बिना पढ़े अब या समै, चलै न कोउ बिधि काज ।
दिन २ छीजत जात है, यासों आर्य्य समाज ॥ ५६ ॥
कल के कल बल छलन सों, छले इतै के लोग ।
नित २ धन सों घटत है, बाढ़त है दुख सोग ॥ ५७ ॥
मारकीन मलमल बिना, चलत कछू नहि काम ।
परदेशी जुलहान के, मानहुं भए गुलाम ॥ ५८ ॥
बस्त्र कांच कागज कलम, चित्र खिलौने आदि ।
आवत सब परदेस सों, नितहि जहाजन लादि ॥ ५९ ॥
इत की रुई सींग अरु, चरमहिं तित लै जाय ।
ताहि स्वच्छ करि बस्तु बहु, भेजत इतहि बनाय ॥ ६० ॥

तिन ही को हम पाइ कैं, साजत निज आमोद।
तिन बिन छिन छन सकल सुख, स्वाद बिनोद प्रमोद। ६१॥
कछु तो वेतन में गयो, कछू राज कर माहि।
बाकी सब व्यौहार में, गयो रह्यो कछु नाहि। ६२॥
निरधन दिन दिन होत है, भारत भुव सब भांति।
ताहि बचाइ न कोउ सकत, निज भुज बुधि बल कांति। ६३॥
यह सब कला अधीन है, तामें इते न ग्रंथ।
तासों सूझत नाहि कछु, द्रव्य बचावन पंथ। ६४॥
अंगरेजी पहिले पढ़ै, पुनि बिलायतहि जाय।
या बिद्या को भेद सब, तो कछु ताहि लखाय। ६५॥
सो तो केवल पढ़न में, गई जवानी बीति।
तब आगे का करि सकत, होइ बिरध गहि नीति। ६६॥
तैसेहि भोगत दण्ड बहु, बिनु जाने कानून।
सहत पुलिस की ताड़ना, देत एक करि दून। ६७॥
पै सब बिद्या को कहूं, होइ जो पै अनुवाद।
निज भाषा महँ तो सबै, याको लहै सवाद। ६८॥
जानि सकै सब कछु सबहि, बिविध कला के भेद।
बनै बस्तु कल सों इतै, मिटै दीनता खेद। ६९॥
राजनीति समझैं सकल, पावहिं तत्व बिचार।
पहिचानैं निज धरम को, जानैं शिष्टाचार। ७०॥
दूजे के नहिं बस रहैं सीखैं बिबिध बिबेक।
होइ मुक्त दोउ जगत के, भोगैं भोग अनेक। ७१॥
तासों सब मिलि छांड़ि के, दूजे और उपाय।
उन्नति भाषा की करहु, सब मिलि भ्राता आय। ७२॥
बच्यो तनिक ह समय नहि, तासों करहु न देर।
औसर चूके व्यर्थ को, सोच करहु गे फेर। ७३॥

प्रचलित करहु जहान में निज भाषा करि यत्न।
राज काज दरबार में, फैलावहु यह रत्न। ७४॥
भाषा सोखहु आपनी, होइ सबै एकत्र।
पढ़हु पढ़ावहु लिखहु मिलि, छपवावहु बहु पत्र। ७५॥ शिवप्रागी॥

वायु का वर्णन।

वायु एक ऐसी वस्तु है कि यद्यपि हम
से देख नहीं सक्ते परन्तु हम उसे जान
क्ते हैं; मैं इसका एक ऐसा उदाहरण देता
कि जिस्से यह बात सब आदमियों की
मझमें आजायगी जब जोर से हवा चल
ही हो और छाता खोलकर किसी मैदान
चले जाओ जहां हवा के लिए कोई रोक
हो, जो हवा के सन्मुख चलोगे तो उस
थ पर जिसमें कि खुला हुआ छाता है
ड़ा जोर और बोझ मालूम होगा और
ो हवा को पीठ देकर चलोगे तो यह
ान पड़ेगा कि मानो कोई पीछे से ठे-
ता आता है जो कोई पूछे कि इसका
ा कारण है तो इसका उत्तर यही है
क हवा-दो दो एक एक बात ऐसी सब
ो मालूम होगी कि फलाने दिन आंधी
ई थी तब हमारे घर के आगे का नीम
ा पेड़ उखड़ गया था या हमारे परोसी
ा छप्पर उड़ गया था। इन सब का भी
कारण हवा ही है जो कोई कहे कि हवा
में बोझ नहीं होता सो यह ठीक नहीं
है क्योंकि इसकी परीक्षा बहुत जलदी
हो सक्ती है एक बरतन को तोलो फिर
उसके भीतर से एक (Air pump) अर्थात
उस यंत्र के द्वारा जिससे कि किसी बर-
तन से हवा निकाल लेते हैं हवा खींच
लो और उस बरतन का मुंह बन्द करके
फिर तोलो तो पहिले बांट पिछले बांटों
से भारी होंगे वायु का दबाव सब तरफ
होता है इसकी परीक्षा ऐसे हो सक्ती है
कि एक पीतल या लोहे का खोखला
गोला बनवाय कर उस के बीच से दो
टूक कर डाले और उनको किसी तरह
ऐसा ठीक कर दो कि वे एक दूसरे से
जम कर मिल जावें कि उनमें हवा न जा
सके। फिर दोनों को हवा वाताकर्षक
यंत्र से खींच लेवे और उन दोनों को
मिला दो जो गोला बड़ा बनाया गया
होगा तो दो घोड़ों के खींचने से भी अ-
लग न होगा॥

हवा सब जगह एक सी नहीं है अर्थात उतनी ही हवा का बोझ सब जगह एक ही नहीं होता एक घन फुट हवा का यहां तोलो और एक घन फुट हिमालिया परबत की चोटी पर की हवा तोलो तो हिमालिया पर्वत की हवा बहुत हलकी होगी इसी से जो आदमी गुब्बारे में चढ़ कर आकाश की सैर करने को जाते हैं तो वह जहां चार पांच मील ऊंचे पहुंचते हैं बिना मेहनत हांपने लगते हैं और छः मील के ऊपर बेहोश हो जाते हैं कारण इसका यह है कि ऊपर की हवा बहुत हलकी होती है। इससे यह जाना जाता है कि कुछ और ऊपर अर्थात २० या ३० मील पर हवा बहुत कम होगी और गणित से जाना जाता है कि हवा ४५ या ५० मील के ऊपर अत्यन्त ही सूक्ष्म है । बहुत काल तक लोगों को यह दृढ़ विश्वास रहा कि वायु एक तत्व है परन्तु १८ सदी में यह बात मालूम हुई कि वायु दो तत्वों अर्थात (नइट्रोजन) और (आकसिजन) के मिलाप से अधिकांश बनी है ॥

ऐङ्ग्लो वरन्याकुलर ॥

हम कुछ नहीं समझ सकते कि पश्चिमोत्तर देश की गवर्नमेण्ट ने शीक्षा का पुराना क्रम उठा कर यहां के स्कूलों में ऐङ्ग्लो वरन्याकुलर का नया क्रम जारी करने से हम लोगों का क्या उपकार समझा है उपकार के पलटे इसमें कई प्रकार की हानि अलबत्ता देख पड़ती है एक तो यह की हम लोग अपने लड़कों को वरन्याकुलर अर्थात निरी देश भाषा सिखलाने को नहीं भेजते किन्तु इङ्गरेजी पढ़ाने के लिए भेजते हैं क्योंकि देश भाषा द्वार २ मोलवी अथवा पण्डित बैठाय हम थोड़े ही खर्च में सिखला सकते हैं पर इङ्गरेजी थोड़े खर्च में उन नहीं आ सकती और कितने ऐसे भी हैं कि उन बेचारों को एतनी समाई नहीं है कि उनका लड़का बहुत दिनों तक स्कूल अथवा कालेजों में पढ़ कर उत्तम श्रेणी अर्थात ऐफ ए. बी ए. की योग्यता प्राप्त कर सके निदान जहां वह तीसरे या दूसरे दरजे तक पहुंचा तहां उसके मा बाप जो का प्यासा चातक समान मुंह बगारे वे यही आशा करने लगते हैं कि लड़का हमारा किसी तरह से १० रुपए के रोजगार में लग जाय तो अच्छा हो और लड़का भी उनका दूसरे या तीसरे दरजे तक पढ़ने से थोड़ा सा गोदना गादना सिख

सिवाय रेल तार या पोष्ट आफिस में
नहीं दस पांच की नौकरी कर काग़ज़
किसी तरह अपने मूर्ख अनपढ़े बापों का
कुछ न कुछ सन्तोष कर ही देता है पर
और और सब बातें तीसरे दरजे तक देशी
भाषा में सिखाई जाने लगीं तो इङ्ग-
लीजी के नाम तो केवल लिंगुआ नानरह
गा हमारा वह प्रयोजन क्योंकर सिद्ध
सकता है; फिर पहिले ही से नेत्र
न रहने से इंट्रेन्स क्लास तक बड़ा
रिश्रम करने से भी उनमें वह योग्यता
हां से आ सकती है जो बड़े देश के
चों में साधारण होती है फिर क़ानून
परीक्षा में सरकार ने अब इङ्गलिश
र बोए की कैद लगा दी है जिसे
ग्रोपचिका नई फ़तह कहते हैं और
सके करने से सरकार का कदाचित्
ी मतलब है कि वकीलों को इङ्गरेजी
षा में अच्छी योग्यता हो सो इस
कार की शिक्षा का क्रम जारी होने से
ह बात भी नहीं हो सकती इससे यह
न शिक्षा का किसी तरह लाभदायक
हीं जान पड़ता॥

समाचारावली॥

१८ अक्तूबर के तार से मालूम हुआ
कि मदरास के दुष्काल पीड़ित जनों को
सहायता के लिए चार लाख पौण्ड अब
तक चन्दा हो चुका है।

रूस के एलची काबुल से चल दिए और
पेशावर में २४ या २५ अकटूबर तक आ
गए होंगे। पा०

ता० १६ अकटूबर को बम्बई में ब्रिटो
नामक एक यूरोपियन ने एक आयरलैण्ड
निवासी कप्तान साहब को छुरियों से
मार डाला उसके पीछे ब्रिटो जहाज पर
बैठ कर गोआ को चल दिया परन्तु केदो
रस्ते में विङ्गोरला के मुकाम पर पकड़ा
गया अदालत में मुकद्दमा हो रहा है। पा०

कुनी साहब पर जो ४ महीने के लिए
इलाहाबाद के स्टेशन मास्टर हो गए थे
रिशवत लेने का दोष लगाया गया है।
इलाहाबाद के जएट साहब की कचहरी
में मुकद्दमा हो रहा है।

कलकत्ते के हाईकोर्ट में मैकफर्सन सा-
हब की जगह कनिङ्गहम साहब का जज
होना श्रीमती महारानी ने स्वीकार कर
लिया। पा०।

शोच की बात है कि पालक साहब
आगरे के कमिश्नर दो दिन बीमार रह
कर इङ्गलेण्ड में मर गए। पा०

१ जनवरी सन १८७८ को कलकत्ते में

एक दरबार होगा जिसमें सितारे हिन्द की पदवी योग्य पुरुषों को दी जायगी ।

श्रीमान वाइसराय ५ नवम्बर को शिमले से चलेंगे और मसूरी आगरा, कानपुर होते हुए २८ तारीख को कलकत्ते पहुंचेंगे ।

गोआलपाड़ा में पुलिस ने एक आदमी को इतना कष्ट दिया कि वह मर गया । एक हैड कानस्टेबिल और एक कानस्टेबिल दोष भागी समझे गये हैं । पा०

कुमार गिरीशचन्द्रसिंह लाला बाबू (जिनका बड़ा भारी स्थान वृन्दावन में बना हुआ है) के परपौते २८ वर्ष की अवस्था में परलोक को सिधारे, हमको यह समाचार सुन कर बड़ा दुःख हुआ ।

ता० २० अकटूबर शनिवार को रात को एक मालगाड़ी कर्कना स्टेशन के पास सड़क से गिर गई और गाड़ी के खड़े होने से पहिले ६७ गज सड़क और पास का तार टूट गया और कई गाड़ियां चूर २ हो गईं, इसके कारण कलकत्ते की डाक गाड़ी १० बजे की जगह ४ बजे प्रयाग पहुंची ।

कपूर्थला के राज्य का प्रबन्ध अङ्गरेज की जगह एक हिन्दुस्तानी को दिया जायगा । पा०

मदरास प्रदेश में ६८६८ जङ्गली जीव गत वर्ष में मारे गए और उनके मारने में ३००००) रु० खर्च हुआ । पा०

सूचना ।

जो महाशय इस पत्र को न लिया चा वे कृपा करके हमको पत्र लिख भेजें य. वे इस पत्र ही को लौटा देवेंगे तो क चित वे पत्र हमको न मिले तो वे लो इसके ग्राहक समझे जांयगे ग्राहक लो से प्रार्थना है कि हिन्दीप्रदीप का मो और इस द्रव्य सम्बन्धी पत्र नीचे लि हुए पते से भेजें ।

"मैनेजर हिन्दीप्रदीप
मीरगञ्ज
इलाहाबाद"

और लेख आदि इस नीचे लिखे पते से ।

"सम्पादक हिन्दीप्रदीप
मीरगञ्ज
इलाहाबाद"

मूल्य अग्रिम वार्षिक	...	२)
डाक महसूल	...	।≠)
छमाही	...	१।)
डाक महसूल	...	≠)
एक कापी का	...	।)

बनारस लाइट प्रेस में गोपीनाथ पाठक ने हिन्दीप्रदीप के मालिकों के लिए छापा

Registered No. 93.

THE HINDIPRADIPA.

हिन्दीप्रदीप।

मासिकपत्र।

(क)था, नाटक, समाचारावली, इतिहास, परिहास, साहित्य, दर्शन, राजसम्बन्धी इत्यादि के विषय में

हर महीने को १ ली को छपता है ॥

शुभ सरस देशसनेह पूरित प्रगट ह्वै आनंद भरै ।
बचि दुसह दुरजन बायु सों मणिदीपसम थिर नहिं टरै ॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरै ।
हिन्दीप्रदीप प्रकाशि मूरखतादि भारत तम हरै ॥

Allahabad.—1st Dec. 1877. [Vol. I. No. 4.]

प्रयाग मार्गशीर्ष कृष्ण ११ सं० १८३४ [जि० १ संख्या ४]

पश्चिमोत्तर देश के हिंदू और सर्कारी नौकरी।

उस सभ्य जाति के लोगों को जिनके हाथ में परमेश्वर ने अपनी कृपा से इस लंबे चौड़े प्रायद्वीपके राज काज को बाग सौंपी है उन्हे बहुत दिनों से इस बात का निश्चय हो गया है कि सर्कारी नौकरी से हिंदू लोग सब से अधिक लाभ उठाते हैं; जब बहुत से लोग एक बात को माने हुए होते हैं तो उसके विरुद्ध किसी बात का कहा जाना आश्चर्य्य की बात समझी जाती है और जिन लोगों के जी में

उसका दृढ़ निश्चय होता है वे केवल उसको अचंभे की आंख ही से नहीं देखते वरन कहने वाले को या तो पागल समझते हैं जिस की बात पर ध्यान देना अपना अमूल्य समय को खोने को बराबर गिनते हैं या वह एक ऐसा आदमी समझा जाता है जो नई बात निकाल कर जगत में अपने आप को प्रख्यात करने की उत्कण्ठा रखता हो अतएव वह इसी योग्य नहीं है कि उसकी बात न सुनी जाय किन्तु सभ्य मनुष्यों से घृणा किये जाने के उपयुक्त है। जब हम इन सब बातों को सोचते हैं तो हम अपने को बड़े कष्टसाध्य स्थान में पाते हैं परंतु जब हम यह देखते हैं कि इस विषय पर गवर्नमेण्ट को ध्यान न दिलाना अपने देश के साथ शत्रुता करनी है और जो तर्क हम इस बात के अनुमोदन के लिए पेश कर सकते हैं वह अत्यन्त ही पुष्ट है और इस सब से बढ़ कर जब यह समझा जाता है कि हमारी न्यायशाली सर्कार को सब प्रजागण बराबर प्यारे हैं और जो हम भली भांति यह दिखा देंगे कि हिंदू लोगों को सर्कारी नौकरी उतनी नहीं दी जाती जितनी उन को अपनी संख्या और योग्यता के कारण मिलनी चाहिये तो गवर्नमेण्ट अपनी प्रजा के उस बड़े भाग की प्रार्थना पर जो सर्कारी मालगुजारी का बहुत सा रुपया अद करती है और जो बहुधा व्यर्थ झगड़ उठा कर सर्कार को क्लेश नहीं देती अ वश्य कृपापूर्वक ध्यान करैगी और उस दुःख का निवारण करने में सब प्रकार तत्पर होगी ॥

इसमें तो कुछ संदेह ही नहीं भारतवर्ष की भलाई के लिये इङ्गलि गवर्नमेण्ट ने जो शिक्षा विभाग बनाय उससे फायदा उठाने में हिंदू सब से हिले उद्यत हुए। सर्कारी स्कूलों औ कालिजों को देखने से मालूम होगा f हिंदुओं को बराबर किसी और जाति लोग नहीं पढ़ते। कलकत्ते की यूनी सिटी की परीक्षाओं को देखिये तो बी ए० और एम०ए० की परीक्षा में उत्ती हुए हिंदुओं की संख्या और लोगों कहीं बढ़ी हुई है प्रति वर्ष दस बी हिंदू पश्चिमोत्तर देश से उत्तीर्ण हो क पुरानी फ़िहरिस्त के नामों को बढ़ा जाते हैं। यह व्यवस्था तो उनकी शिक्ष और योग्यता की है। राजभक्ति में भ ये लोग और सब से बढ़े हुए हैं। इस के प्रमाण में हम केवल इतना ही कहना

चाहते हैं कि जो मांग हमारी इस अनु-
ति के विरुद्ध हों वे सन १८५७ में प्राय:
हिंदू महाराजों और प्रजा ने जो महा-
ता सर्कार की की उस को देख लें।
न १८७२ की जन संख्या पर प्लौडिन
हब की रिपोर्ट देखने से मालूम होता
कि पश्चिमोत्तर देश में २६५६९०६८
दू और ४१८८३४८ मुसलमान रहते
। इस हिसाब से मुसलमानों से हिंदू
। छ: गुने से अधिक हैं अतएव और
बातों को छोड़ कर यदि संख्या ही
नौकरी दी जाय तो सर्कारी बड़े
हदों पर प्रति ४ मुसलमानों पीछे २५
दू होने चाहियें। परन्तु इस बिचार के
वाय और भी हेतु हैं जिनसे हिंदू मुस
मानों से अधिक मान के योग्य हैं और वे
उनकी बिद्या की प्राप्ति में रुचि और
भक्ति हैं जिनका वर्णन हम पहिले
कर चुके। यदि इन दोनों बातों का
दुओं की बढ़ी हुई संख्या के साथ
यान किया जाय तो उनकी प्रार्थना
हुत ही बिचार के योग्य हो जाती है
र ४ और २५ के संबन्ध से बढ़ कर १
र २५ या १ और २० के संबन्धानुसार
सलमान और हिंदू को सर्कारी बड़े
हदों के मिलने का नियम सिद्ध हो
जाता है॥

यह देख कर कि हिंदू अपने मुसल्मान भाइयों से सब प्रकार अधिक मान के योग्य हैं जब यह मालूम होता है कि ४ और २५ या १ और २० के संबन्ध में तो क्या हरन हिंदू बड़े सर्कारी ओहदों पर मुसलमानों की बराबर भी नहीं हैं तो बड़ा आशा भंग और शोक होता है। सरकारी बड़े ओहदेदारों की जो फ़िह-रिस्त प्रति तीन महीने पीछे छपती है उसमें नीचे लिखे अनुसार हिंदू और मुसलमान ओहदेदारों की संख्या मालूम होती है॥

नाम ओहदा।	हिन्दू	मुसलमान
डि० कलकटर और ऐक्स्ट्रा असिस्टण्ट कमिश्नर	३५	३०
तहसीलदार, …	८८	८१
सदरआला, …	७	१२
मुन्सिफ़, …	३३	३८
पुलिस।		
सुपरंडण्ट, …	०	१
असि० सुपरंटण्ड,	०	२
इन्सपक्टर, …	५५	५८
कुल	२१८	२३१

ऊपर लिखी हुई फ़िहरिस्त के देखने से मालूम होता है कि अवध को छोड़ कर पश्चिमोत्तर देश के बड़े सर्कारी ओह

दों पर २१८ हिंदू और २३३ मुसलमान हैं। इन हिंदुओं में बङ्गाली भी जोड़ लिये गए हैं जिनके निकाल लेने से अनुमान २०० के हिंदू रह जाते हैं। हम ने इस संख्या में बन विभाग और नमक के विभाग को नहीं जोड़ा है। बन विभाग में एक मुसलमान महाशय सब असिस्टण्ट कनसरवेटर हैं और नमक के विभाग में भी एक मुसलमान हो पतरोल हैं इन दोनों विभागों में हिंदू बड़ी नौकरियों पर नहीं हैं। इस हिसाब से प्रति ४० हिंदुओं के साथ ४७ मुसलमान वा न्यूनाधिक प्रति ६ हिंदुओं के साथ ७ मुसलमान सर्कारी बड़े उहदों पर हैं। और यह व्यवस्था उस दशा में है कि जब केवल संख्या के हिसाब से ४ मुसलमानों के साथ २५ हिंदू होने चाहियें दूसरा हिसाब जिसके कारण मुसलमान और हिंदुओं का १ और २० का संबन्ध होना चाहिये अलग रहा। परन्तु तौ भी यह कहा जाता है कि हिंदू मुसलमानों से सर्कारी बड़े उहदों पर अधिक हैं और बड़े २ हाकिम यही समझते हैं कि मुसलमानों की दशा सरकारी नौकरी के संबन्ध में शोचनीय और बिचार के योग्य है ॥

हमारी पक्षपात रहित सर्कार के जी में यह बात कैसे बैठ गई है इस क[illegible] कारण ढूढ़ने के लिये बहुत दूर जाने [illegible] आवश्यकता नहीं है। कई बर्ष से मुसल[illegible] मान बराबर कहते आते हैं कि ह[illegible] लोगों को यथोचित नौकरी नहीं मि[illegible] ती हैं, हमारी दशा बहुत बुरी है, हम[illegible] री कोई बात नहीं पूछता। पायोनिय[illegible] का एक अत्यन्त प्रवीन मुसलमान लेख[illegible] जो अपने नाम की जगह 'एक हिं[illegible] स्तानी' (A native) लिखता है और [illegible] सको उस पत्र के बहुत से पाठक जान[illegible] हैं सदा यही गीत गाता है कि सब[illegible] को मुसलमानों की शोचनीय दशा [illegible] ध्यान देना चाहिये। पायोनियर भी [illegible] सको सदा सहायता करता है और क[illegible] ता है कि गवर्नमेण्ट को इन बिचारे [illegible] हुओं को उठाना और उनकी सहाय[illegible] करना अवश्य योग्य है। सर्कार को [illegible] यह सब बातें सच जान पड़ती हैं [illegible] इस लिये वह उनको इस कल्पित दु[illegible] से बचाने के लिये तरह२ के यत्न कर[illegible] है। हिंदू बिचारे अपने दुःख को कि[illegible] से नहीं कहते और इसी कारण को[illegible] उनकी बात नहीं पूछता परन्तु यह न[illegible] सोचते कि बिना रोए तो मा भी बच्चे [illegible] दूध नहीं देती जो तुम कहोगे तो तुम्ह[illegible]

ी न्यायशाली सर्कार तुम्हारी बात अ-
च्छा सुनेगी यद्यपि यह सच है कि तु-
म्हारा सहायक पायोनियर सा कोई
ड़ा अंगरेजी समाचार पत्र नहीं परन्तु
म्हारा मुकद्दमा ऐसा सच्चा है जिसमें
कील की कुछ आवश्यकता नहीं है केवल
ाकिम तक पहुंच जाने से ही डिगरी
ा जायगी हमारे इस लेख से हमारा
ह मतलब नहीं कि हम मुसलमानों से
र रखते हैं और उनकी उन्नति से हम
जलन होती है बरन इसके विरुद्ध
को उनके सीधे रस्ते पर जाने से
आनन्द होता है परन्तु उसी के साथ
अपनी दीन दशा का दिखाना भी
ित समझते हैं। अन्त पर हम को
ा है कि हमारे न्यायप्रिय लफ्टंट
नेंर सर जार्ज कूपर साहब हमारी
प्रार्थना पर यथायोग्य बिचार करेंगे॥

व्यवस्था वा कानून॥

यह उस शास्त्र का नाम है जो राजा
ने राज्य प्रबन्ध के लिए प्रचलित क-
ा है; इसके कई भेद हैं अर्थात जो
वस्था जिस मनुष्य के व्यवहार और ब-
िव के लिए चलाई जाती है उसका
ानना उस मनुष्य के लिए उचित होता
है; यहां तक कि जो व्यवस्था स्वयं राजा
के लिए बनाई गई है उसे राजा जाने
और उसके अनुसार चले इसी प्रकार
मन्त्री अपने कानून के अनुसार और
जज्जो ओहदेदारों को अपने कानून के
अनुसार चलना उचित होता है, राजपु-
रुष अर्थात सरकारी ओहदेदारों के
लिए जो कानून बनाए गए हैं उन्हें
राजपुरुष जाने; व्यवस्था के अनुसार
काम करने से यदि कोई बात बिगड़
भी जाती है तो उन पर राजकोप का भय
नहीं रहता। इन कानूनों का जानना
प्रजा को भी अत्यन्त प्रयोजनीय और हि
तकारी है क्योंकि उनकी जानकारी से
छोटे ओहदेदारों का अन्याय और अ-
त्याचार उन पर नहीं चल सकता और
न राज्य दण्ड का कुछ उन्हे भय रहता है
क्योंकि जब कानून के विरुद्ध वे कोई
काम न करेंगे तो क्यों दण्ड पावेंगे एक
बड़ा लाभ यह भी है कि कानून को
भली भांति जानने से जो उसमें भूल या
अन्याय हो उसे प्रमाण सहित राजा
को जना सकते हैं और प्रत्यक्ष कर
दिखा सकते हैं जिसमें उसका सुधराव
हो सके पूर्वकाल में यहां की प्रजा विद्या
बुद्धि निधान होने के कारण मनुस्मृति
और मिताक्षरा आदि धर्म्म शास्त्रों को
जो उस समय के राजाओं के कानून

थे भली भांत जानती थी इसका प्रत्यक्ष प्रमाण यही है कि इस महा मूर्खान्धकारमयी निशा में भी बहुधा उनके लौकिक पारलौकिक व्योवहार उन्ही के अनुसार होते हुए पाए जाते हैं ; दूसरा बड़ा लाभ यह है कि दयालु राजा ने अपनी प्रजा की भलाई के लिए जो स्वत्व नियत कर दे उस्से जानकार हो रहे जब कोई सर्कारी नौकर उनके स्वत्व में किसी प्रकार की हानि पहुंचावे या उनकी भलाई का काम रोके अथवा उसमें न्यूनता करे या धोखा दे किसी तरह की उलट पुलट करे तो उसे तत्काल कानून निपुण प्रजा अपने हक्क के लिए राजा से बिनती और निवेदन के द्वारा लड़ झगड़ अपने अभिलषित न्याव को पा सकती है ; आज काल हमारी श्रीमती आर्येश्वरी के राज्य में कोई ऐसा काम नहीं है जिसके लिए कोई कानून न हो परन्तु वे कानून और उनके भावार्थ इङ्गरेजी भाषा में होने से सर्व साधारण को सहज और सुलभ नहीं हैं इस कारण बङ्गाल आदि देशों में उनका अनुवाद वहां की देश भाषा में कर दिया गया है इस लिए वहां की प्रजा कानून निपुण हो अपने हानि लाभ को सर्कार से भली भांति कह सकती है ; धिक्कार है पश्चिमोत्तर

अवध और पञ्जाब के भाग्य को कि यह
की प्रजा अन्धकारहो में पड़ी हैं यह
की प्रजा का नेत्राञ्जन और विद्या
का मूल कारण जो मातृ भाषा हिन्दी
है उसके खेत में अरब के ऊंट नकेला
और फारस के खच्चर रेंकते हैं सरग
गिरा तो खजूर में अटका सारा कानू
और कानून के अनुसार काम काज
अरबी, फारसी, शब्द और अक्षरों
होते हैं ; इसमें सन्देह नहीं की उ
तर्जुमा में सरकार का लाखों रुपया
होता है पर वही कहावत है कि ॥

"खेमकरन दस बरना दीन्ह ।
हमरे लेखे चोरन लीन्ह ॥"

जैसे नागनाथ वैसे सांपनाथ
को जैसे अङ्गरेजी परदेशी भाषा
अरबी फारसी वह तर्जुमा किसके व
आया वकील मुख्तार और अमर्ले
जिन को देश की भलाई से कुछ प्र
जन नहीं उनको हलुआ रोटी से क
मुर्दा चाहे बिहिश्त में जाय या दोज
में उनको परदेश की भाषा के प्रचार
अधिक कमाई करने की घात है तात्
यह कि इस पश्चिमोत्तर देश की प्रज
कानूनी जानकारी से जो परदेशी भाष
और अक्षरों में है हीन दीन होकर
पनी अनेक लाभ और उपकार पा

मे सर्वथा वञ्चित और रहित हैं। ऐक्ट
८ सन १८७१ ईसवी० इस अभि-
ाय से जारी हुआ है कि पश्चिमोत्तर
श में धरती पर वेशी कर वा महसून
गाया जाय यह कर जमीदारों से से-
ड़ा पीछे ५) वा कुछ न्यून सालाना
ाया जाता है जैसा कि उक्त ऐक्ट को
दफा मे हुक्म है यह महसूल मालगु-
री की बांधी हुई जमा से भिन्न है
र उस महसूल से भी अलग है जो
ाना लिया जाता है जैसा कि दफा
में लिखा है; और दफा ८ मे
ा है कि इस ऐक्ट के अनुसार जो
लिया जायगा वह देश की साधारण
ी की भांत जमा रहैगा जिसका यह
र्थ हुआ कि उस पूंजी मे प्रजा का
स्वत्व रहैगा और दफा १० में उस
ी के संग्रहीत धनके खर्च करने की
उपाय लिखी है यदि उसका उचित
र पर बर्ताव किया जाय तो प्रजा की
ाई में कुछ सन्देह नहीं है। जिसमें
पूंजी का खर्च नीचे लिखे हुए
मों में करना लिखा है।

बनाना, मरम्मत करना और सुधारना
ड़कों और बाट चलने के उपायों का
ापित रखना देहाती पुलीस और
डांकखानों का बनाना और मरम्मत
करना पाठशाला, अस्पताल, कुंआ और
तलावों का या और कोई ऐसे स्थानो
का जिन्से सब लोगों की आरोग्यता
सुख और आराम का सम्भव हो इत्यादि।

यह ऐक्ट बहुत ही छोटा हैं इसमे
केवल १८ दफाएं हैं और इसे जारी हुए
७ वर्ष होगए पर ज़मीदार और असामी
ऐसे बहुत ही थोड़े होंगे जिन्हे इस ऐक्ट
के प्रचार का वृत्तान्त तक भी विदित
होगा यह ऐक्ट इस योग्य था कि इस
का अनुवाद सहज हिन्दी भाषा मे
छापा जाता और हर एक ज़मीदार को
इसकी एक २ कापी दे दी जाती सो
यह बात तो दूर रही प्रजा को इस
कानून की खबर तक नही है एक
हिसाब से यह भी ठीक है जैसा स्वार्थियों
का वचन है कि रोगीयों की बहुतायत
मे वैद्य की और मूर्ख प्रजा की बहुतायत
से स्वार्थ निपुण राजा की बन पड़ती है॥

दफा १० मे जो सड़क और बाट के
बनाने मरम्मत करने और सुधारने के
विषय में चर्चा है उसका कदाचित्
यही तात्पर्य है कि जिस मार्ग हो कर
साहबान अंगरेजों का अधिकतर आवा-
गमन हो उसी के बनाने और मरम्मत

करने की आज्ञा है किन्तु जिस मार्ग मे केवल हिन्दुस्तानियों ही का आवागमन होता हो वहां यह दफा नहीं लगेगा इसी प्रयाग क्षेत्र मे शिवकोटी के मेले का प्रसिद्ध स्थान है जहां श्रावण भर हज़ारों मनुष्य का आना जाना होता है और वह स्थान पक्की सड़क से चौथाई मील की दूरी पर भी नहीं है तथापि वह स्वल्प मार्ग वर्षा होने पर ऐसा विकट और दुर्गम हो जाता है कि गाड़ी घोड़े और मनुष्य कीचड़ और बिछलहर मे फिसिल कर गिर पड़ते हैं जितना क्लेश चार पांच मील मे नही होता उससे अधिक उतनी रास्ता मे भुगतना पड़ता है वही स्थान यदि कहीं गिर्जा घर होता तो हर साल उस राह मे कंकड़ पिटाया जाता रोज छिड़काव हुआ करता; यही हाल त्रिवेणी जाने की रास्ता का भी है किले की सड़क से फूट कर जो राह बांध को गई है वह पहले पक्की सड़क थी परन्तु थोड़े बर्षों से कदाचित् जब से यह कानून जारी हुआ उसकी भी मरम्मत बन्द करदी गई इसी से हम कह सकते हैं कि यातो हम लोग उस कानून के लाभ से जान बूझ कर बाहर कर दिए गए हैं वा राज पुरुषों के प्रम-

त्तादि दोष के कारण उस लाभ
वञ्चित किए जाते हैं नहीं तो जि
प्रजाओ से लाखों रूपए इस मह
के लिए जांय उनके तीर्थ स्थान का ऐ
अनादर किया जाय कि मुहड़े पर
बीस बीघे के अन्तर मे महा बिकट
दुर्गम मार्ग कर दिया जाय । देहा
पुलीस का भी यही हाल है पहले ब
गांव मे दो वा तीन चौकीदार रह
वहां अब घटा के एक कर दिए ग
अब वह एक चौकीदार पूरब की
जाता है तो पश्चिम की दिशा शून्
ती है और उत्तर जाता है तो द
जिस मुहाल में कई गांव लगते हैं
के निवासीयां तो इस मन्त्र को ज
" राम नाम भज बारंबारा। चक्र सु
है रखवारा " या "चौरेणापिहतंध
लोकाय " समझ सन्तोष कर लेते
जिस मार्ग में बहुत से नदी नाले
विकट जङ्गल हैं और साहब लोगों
आवागमन वहां कभी नहीं होता
वरुण देवता या बनदेवी के सिवाय
रक्षक दृष्टिगोचर नहीं होता तथापि
मती महाराणी का ऐसा प्रताप है
बिपत्ति सिद्ध और क्रियमाणों को
और मनुष्य बची जाते हैं । देहाती म

ों का जो कुछ हाल है उसे लिखते से लज्जा आती है और हिकिल दोष कम्वा धोबी की गीत ठहरती है हरिश्चन्द्रचन्द्रिका में ग्राम पाठशाला नाटक तथा अवध अखबार में एक डिपटी इन्स्पेक्टर साहब के प्रसङ्ग में जो कुछ हास्य लिखा गया है अथवा सैय्यदअहमद खां बहादुर की किताब में जो उन्हों विलायत में छपवाई थी उसमें जो ग्रय लिखा गया है जिसे बहुधा और र अखबार वालों ने भी छापा है वही ी है और श्रीमान सरजान स्ट्रेची ब इन ग्राम पाठशालाओं के विषय में जो कुछ लेख (रिमार्क) लिख गए हैं उससे बढ़ कर कोई क्या कहेगा ; आज तक यह बात कहीं न देखने या सुनने में आई कि किसी हलकाबन्दी स्कूल मे कोई शास्त्रज्ञ पण्डित या अच्छा आलिम मोलवी नियत हुआ हो शिफारसी टट्टू मन मानता किलोलें करते हैं ; इन सब दोषों का मूल कारण यही जान पड़ता है कि हमारी भाषा और हमारे अक्षरों का प्रचार नहीं है जिस्से हम सब प्रजा गण गूंगे और अन्धे से होकर अपने हानि और लाभ को नहीं प्रगट कर सकते ।

श्रीबाबू हरिश्चन्द्र का लेकचर १२ पेज के आगे से ॥

बैर बिरोधहि छोड़ि के, एक जीव सब होय ।
करहु यतन उद्धार को, मिलि भाई सब कोय ॥ ७६ ॥
आल्हा बिरहहु को भयो, अंगरेजी अनुवाद ।
यह लखि लाज न आवई, तुमहि न होत बिखाद ॥ ७७ ॥
अंगरेजी अरु फारसी, अरबी संस्कृत ढेर ।
खुले खजाने तिनहि क्यों, लूटत लावहु देर ॥ ७८ ॥
सब को सार निकालि कै, पुस्तक रचहु बनाइ ।
छोटी बड़ी अनेक बिध, बिविध बिषय की लाइ ॥ ७९ ॥
मेटहु तम अज्ञान को, सुखी होहु सब कोय ।
बाल वृद्ध नर नारि सब, बिद्या संयुत होय ॥ ८० ॥
फूट बैर को दूरि करि, बांधि कमर मजबूत ।

भारत माता के बनौ भ्राता पूत सपूत ॥ ८१ ॥
देव पितर सब हो दुखी, कष्टित भारत माय ।
दीन दशा निज सुतन की, तिनसों लखी न जाय ॥ ८२ ॥
कब लौं दुख सहि हो सबै, रहि हौ बने गुलाम ।
पाइ मूढ़ काफिर अरथ,-शिक्षित काफिर नाम ॥ ८३ ॥
बिना एक जिय के भए, चलि है अब नहि काम ।
तासों कोरो ज्ञान तजि, उठहु छांड़ि बिसराम ॥ ८४ ॥
लखहु काल का जग करत, सोवहु अब तुम नाहिं ।
अब कैसो आयो समय, होत कहा जग माहिं ॥ ८५ ॥
बढ़न चहत आगे सबै, जग की जेती जाति ।
बल बुधि धन बिज्ञान में, तुम कहँ अबहूं राति ॥ ८६ ॥
लखहु एक कैसे सबै, मुसलमान क्रिस्तान ।
हाय फूट इक हमहि में, कारन परत न जान ॥ ८७ ॥
बैर फूट ही सों भयो, सब भारत को नास ।
तबहुं न छाड़त याहि सब, बँधे मोह के फांस ॥ ८८ ॥
छोड़हु स्वारथ बात सब, उठहु एक चित होय ।
मिलहु कमर कसि भ्रात गन, पावहु सुख दुख खोय ॥ ८९ ॥
बीती सब दुख की निशा, देखहु भयो प्रभात ।
उठहु हाथ मुह धोइ के, बांधहु परिकर भ्रात ॥ ९० ॥
या दुख सों मरनो भलो, धिग् जीवन बिन मान ।
तासों सब मिलि अब करहु, बेगहि ज्ञान बिधान ॥ ९१ ॥
कोरी बातन काम कछु, चलिहै नाहि न मीत ।
तासों उठि मिलि कै करहु, बेग परस्पर प्रीत ॥ ९२ ॥
परदेसी की बुद्धि अरु, बस्तुन की करि आस ।
परबस ह्वै कब लौं कहो, रहि हौ तुम ह्वै दास ॥ ९३ ॥
काम खिताब किताब सों, अब नहिं सरिहै मीत ।
तासों उठहु सिताब अब, छांड़ि सकल भय भीत ॥ ९४ ॥

निज भाषा निज धरम निज, मान करम व्यौहार ।
सबै बढ़ावहु बेगि मिलि, कहत पुकार पुकार ॥ ८५ ॥
लखहु उदित पूरब भयो, भारत भानु प्रकाश ।
उठहु खिलावहु हिय कमल, करहु तिमिर दुख नाश ॥ ८६ ॥
करहु बिलम्ब न भ्रात अब, उठहु मिटावहु सूल ।
निज भाषा उन्नति करहु, प्रथम जो सब को मूल ॥ ८७ ॥
लहहु आर्य भ्राता सबै, बिद्या बल बुधि ज्ञान ।
मेटि परस्पर द्रोह मिलि, होहु सबै गुन खान ॥ ८८ ॥ इति ।

प्रेरित ॥

सम्पादकों को उत्तेजना ।

जनवरी सन १८७७ में जो दिल्ली भारी दरबार हुआ था उस से लाभ हुए परन्तु सब से उत्तम भारतवर्षियों के वास्ते यह हुआ जितने अङ्गरेजी, हिन्दी, वा उरदू के समाचार पत्रों के सम्पादक थे सब वहां एकट्ठे हुए थे उन सबों ने कर ऐसा अच्छा अवसर पाय एक नियत किया और उस में परस्पर मुलाकात और वार्ता लाभ के पीछे निश्चय किया कि कभी २ हम समस्त सम्पादक जन भारतवर्ष के किसी मध्य स्थान में एकत्र हुआ करें और इस मनुष्यों के मिलने से जो उत्तम परिणाम निकलता है उसका यत्न करें पर बड़े खेद की बात है कि उस के पीछे उन में से किसी समाचार पत्र ने इस विषय में कुछ न लिखा और न उन लोगों ने इस बात की कभी इच्छा प्रगट की कि अमुक स्थान और समय में हम लोग एकत्र होंगे वे लोग इसको ऐसा भूल गए हैं मानो इस बात की कभी चर्चाही नहीं हुई थी यह सब लोग जानते हैं कि जो समाचार पत्र वाले वहां एकत्र हुए थे वे कैसे बुद्धिमान थे इस लिए उनको इस आलस्य का दोष देना असभ्य और अनुचित जान पड़ता है ॥

जितने भारतवर्षी सम्पादक महाशय हैं वे इस देश के हित चाहने में कैसे तत्पर हैं, अपने पत्र द्वारा सारे भारत

खण्ड में ऐक्य फैला रहे हैं, जितनी उत्तम बातें और नए विषय हैं उनको इस देश के लोगों को बतलाते और उन में प्रचलित करते हैं अपने सच्चे मन से इस देश के शुभ चिन्तक हैं; जो लोग सोते हैं उनको जगाते हैं, जो बात करने के योग्य है जिससे देश का उपकारक है वह लोगों को उपदेश करते हैं, इससे हमको विशेष आश्चर्य इस कारण होता है कि जो स्वयं ऊपर लिखी हुई बातों के प्रवर्तक हैं वे ही ऐसी आलस्य में क्यों पड़े हैं ? यह वे भली भांति जानते हैं कि उन लोगों के इस मिलने से कितना भारी लाभ होगा फिर क्यों चुप बैठे हैं अङ्गरेजी राज्य में समाचार पत्रों को जो अधिकार प्राप्त है उसे एक प्रकार का राज्य कहना चाहिए यह सब पर विदित है कि सम्पादक जन जिस किसी विषय पर जो कुछ कहते हैं वह गवर्नमेण्ट और प्रजा दोनों के चित्त पर ऐसा खचित हो जाता है कि उसका कुछ न कुछ फल हुए बिना नहीं रहता यदि ध्यान देकर देखा जाय तो पत्र द्वारा बहुत सी भलाइयां इस देश में हुई हैं और होती जाती हैं लोगों के विचार प्रत्येक विषय में बदल और सुधर कर अब बहुत अच्छे हो गए हैं-यह समाचार पत्रोंही का प्रभाव है कि लोगों
यह सुलभी अपूर्व चिड़िया, मुल्क
भलाई, देश हित, देश शुभ चिन्त
इत्यादि शब्द जानने लगे हैं केव
शब्द ही नहीं हम लोगों की भा
प्रचलित हो गए हैं वरन उन शब्द
जो तात्पर्य्य है उसका विचार और
भी यहां के सुशिक्षित और अच्छे म
में उत्पन्न हो गया है और इसी व
अच्छे २ विचार, उत्तम २ बातों
चार, भली रीतों का वर्ताव २
लोगों में हो चला है। ऐसी द
समस्त भारतखण्ड के सम्पादक ए
कर उत्तम २ बातें हमारे देश
लोगों के लिए बिचारेंगे तो कित
कार होगा-यह किसको सन्देह
ता है कि ऐसे लोगों के एकत्र
इस देश की कुछ भलाई न होगी
नहीं मालूम क्यों और किस कार
सुखदायक और उपकारक समाज
तक एकत्र नहीं हुई—हम उन सम्प
महाशयों से जो दिल्ली में मौजू
यह प्रार्थना करते हैं कि वे लोग
उत्तम बात को न छोड़ें वरन इसका
करें और हमारे जान में आगे वाले
बरी में सरकार के तरफ से फिर कल

नी निमित्त दूसरा दरबार होगा ऐसे अवसर को हाथ से न जाने दें।

एक ऐसे समाज का
उत्सुक।

—o—

पदार्थवाद॥

म अपने चारो ओर जो कुछ देखते हैं वह सब पदार्थ (Matter) है सकल ३ प्रकार के हैं चेतन अचे और उद्भिज ; जैसा कोयला और णी की मुकुट में प्रकाशमान एवम् मज्झापीड़ित दग्ध हाथ को के नीचे मैला पानी और ऊंचे ो चोटी पर सुशोभित तुषार एक ही पदार्थ है; किन्तु उन दोनों अवस्था भेद से उनके भिन्न २ नाम ए हैं ; इसी तरह से हमारे चारो समस्त वस्तु यद्यपि पदार्थ इस एक से व्यवहृत हो सकती है परन्तु अव भेद से चेतन अचेतन और उद्भिज यह नको भिन्न संज्ञा हो गई। यदि कहो वृक्ष और उसी की एक शाखा जो से काट कर अलग कर दी गई है नों एक ही उपादान कारण से भिन्त हैं तौ भी उन दोनों में एक बड़ा तर है शाखा जो वृक्ष से काट कर अलग कर दी गई है वह न बढ़ेगी और वृक्ष नित्य नित्य बढ़ता जायगा सुतराम् कटी हुई शाखा और वृक्ष दोनों न केवल एक पदार्थ ही हैं वरन वृक्ष में पदार्थ के अतिरिक्त कुछ और भी है जिससे इस की वृद्धि और जीवन होता है जिसे हम ईश्वरीय शक्ति कहेंगे जो पदार्थ से भिन्न है ; यही बात पञ्चभूतात्मक पदार्थ निर्मित मनुष्य से ले कर कीट पतङ्ग तक प्राणीमात्र में है क्योंकि प्राणी का शरीर यद्यपि पदार्थों के संयोग से बना है परन्तु पदार्थ भिन्न जीवन जो एक ईश्वरी शक्ति है उसके बिना प्राणीवर्ग का चलना फिरना और अपनी इच्छा के अनुसार काम करना इत्यादि नहीं हो सकता।

हां यह सत्य है पर यदि यह तुम्हें स्पष्ट कर देखाय दिया जाय कि पदार्थ अवस्था विशेष से अपना निर्माण आप ही कर लेते हैं अपनी गति भी अपने ही बल से अपने में सम्पादन कर सकते हैं तो ईश्वरीय शक्ति यह कल्पना करने का क्या प्रयोजन है प्रत्यक्ष प्रमाण छोड़ अनुमान करने की आवश्यकता क्या है। स्फटिक को बनते जिसने प्रारम्भ से अन्त लों आनुपूर्विक देखा है वह भली भांत समझ सकता है कि किस प्रकार उसका

आरम्भ होता है कैसे उसको हृद्धि होती जाती है और फिर किस तरह स्फटिक (Crystal) बन कर समाप्त हो जाता है हमारे पाठकों में बहुतेरों ने मिस्री बनते देखा होगा उसका बनना भी ठीक स्फटिक के समान है। लोन का एक टुकड़ा दो चार बूंद पानी में घोलो कुछ देर तक रखने पर जल सब वाष्परूप होकर उड़ जायगा शेष द्रव पदार्थ में परस्पर आकर्षण होना प्रारम्भ हो जायगा देखते २ उसमें एक ठो दो ठो तीन ठो क्रम क्रम असंख्य छोटे २ अंकुर हो आवेंगे और चारो ओर एकट्ठा होने लगेंगे परिणाम में वेही एक एक स्फटिक (Crystal) हो जायँगे और अनुवीक्षण यन्त्र से यदि उन्हें देखो तो त्रिकोण चतुष्कोण पञ्चकोण आदि ज्यामिति के अनेक आकार जो कल्पित हो सकते हैं सब प्रकार के स्फटिक देखाई पड़ेंगे; किस ने उन स्फटिकों में प्रत्येक रवों को मिला कर एकट्ठा कर दिया है। और उन रवों को किस ने पैदा किया है। सेवा इस के कि पदार्थ अवस्था विशेष में अपना निर्माण आपही कर लेते हैं॥

शेषआगे ।

समाचारावली॥

पहिली दिसम्बर से रेल की गा[illegible] के समय में इस तरह से बदली हो[illegible]

डांक गाड़ी हावड़ा (कलकत्ता रेल घर) से रात के ८॥ बजे चला [illegible] और इलाहाबाद में ७ बजे शाम को [illegible]बल पुर में ६ बजे सवेरे और गा[illegible]बाद में १॥ बजे दुपहर को पहुंचा क[illegible]

देहली को जाने वाली मुसाफि[illegible] हावड़ा से ८। बजे रात को चला [illegible] और इलाहाबाद में सवेरे के ५ घ[illegible] मिनट पर और गाजिआबाद [illegible] के ३ घं० २५ मि० पर पहुंचा [illegible]

देहली से जाने वाली मुसाफि[illegible] वहां से रात के ८ घं० २५ मि० प[illegible] करेगी और इलाहाबाद से रात के [illegible] ५५ मिनट पर छूट कर हावड़ा में [illegible] के ६ घड़ी १० मि० पहुंचा करेगी देहली से कलकत्ते जाने वाली गाड़ी के समय में अभी कुछ बदली [illegible] होगी।

इलाहाबाद तक जाने वाली स[illegible] गाड़ी हावड़ा से सवेरे के ८ घण्टा [illegible] मि० पर चला करेगी और इलाहाब[illegible]

में शाम के ४ घड़ी ४५ मि० पर पहुंचा करैगी।

इलाहाबाद से कलकत्ते जाने वाली सवारी गाड़ी वहां से सवेरे के ८ घण्टे ५० मि० पर चला करैगी और हावड़ा में शाम के ६। बजे पहुचा करैगी॥

इस्के सिवाइ एक और नई गाड़ी कान्हपुर तक इलाहाबाद से जाया करैगी। वह इलाहाबाद से दुपहर के १ घण्टे २५ मि० पर चला करैगी और कान्हपुर में ६। बजे शाम के पहुचा करैगी तथा कान्हपुर से नई गाड़ी सवेरे के ६॥। चला करैगी और इलाहाबाद में १ घण्टे २५ मि० दुपहर के पहुचा करैगी।

बंगाल में गांजे के ऊपर १ अपरेल से महसूल सर्कारी बढ़ाया जावैगा।

पेशौर में विष देने का एक अजीब कद्दमा हुआ। एक बिचारी मेम के लये एक डाक्तर ने दवा में जो तेजाब मलाना उचित था उस्की जगह एक बषयुक्त तेज़ाब भूल से मिला दिया और मेम साहब दवा खाते ही मर गई।

मदरास का एक समाचार पत्र लिख-है कि दुष्काल के खर्च के कारण ४ वा ५ रुपया सैकड़े का इनकमटिक्स भारतवर्ष में लगाया जायगा।

इङ्गलेण्ड में मद्रास के दुष मनुष्यों की सहायता के लि हुआ था वह ४६०००० पौ जाने पर बन्द हो गया।

ढाका के कमिश्नर के पा उदार चित्त महाशय जो अप विदित करना नही चाहते थे रु० मद्रास के दुष्काल पीड़ि की सहायता के लिए अपना बिन भेजे हैं।

टरकी के राजदूत काबुल १७ नवेंबर को बंबई से जहा सिधारे।

सरजानस्ट्रेची ता० ११ न प्रयाग में सुशोभित हुए और वाइसराय के आने तक यहांही

श्रीमान लेफ्टिनेण्ट १६ वो न नखलऊ से प्रयाग को पधारे।

टरकी के घायलों के लिए पट तक १२०००) रु० चन्दा हो

पिछले बर्ष में भारतबर्ष की कम्पनियों के पास नीचे लिखे सार सामान था, अंजन १५६२ गाड़ी ४२१६ माल्गाड़ी सब २७३३६ ब्रेकवान १०८८।

धन्यवाद ।

(क)वचनसुधा काशीपत्रिका हिंदू
(र) आर्य्यपत्रिका के सम्पादक
को बहुत २ धन्यवाद देते हैं
प्रदीप पर स्नेह प्रगट कर अपने
ों का इसके साथ बदला करना
किया है ; उचित ही है क्योंकि
महाशयों की कृपा रूपी स्नेह
दीप का दीप्तमान होना कैसे
। है बिहारबंधु महाशय न जा-
रन्तु इस शब्द का अर्थ भूल गए
जो बंधुता का मुख्य काम है
ओर कुछ भी दृष्टि न किया ॥

विज्ञापन

हाशय इस प्रदीप के पोषण नि-
पा कर इसके ग्राहक हुए हैं उन
ा है कि एक बार टुक और भी
ें और शीघ्र इस मास के भीतर
ा इसका मूल्य और ।०) डाक
भेज दें समझें कि उतना द्रव्य
गिर पड़ा नहीं तो इस मास के
टेने से उन्हें ३) वार्षिक के हि-
देना पड़ेगा शीघ्र मूल्य भेज देना
ाषा के सच्चे रसिक होने का
त नमूना है । ग्राहक गण महा-
ात पांच की लाठी एक जने

का बोझ होता है " रुपया पैसा हाथ
पांव को मैल है आप सरीखे उदारचित्त
के सामने २) रु॰ कुछ बड़ी बात नहीं
है यदि आप मन करें किम्बहुना ॥

सूचना ।

जो महाशय इस पत्र को न लिया चाहें
वे कृपा करके हमको पत्र लिख भेजें यदि
वे इस पत्र ही को लौटा देवेंगे तो कदा-
चित वे पत्र हमको न मिले तो वे लोग
इसके ग्राहक समझे जांयगे ग्राहक लोगों
से प्रार्थना है कि हिन्दीप्रदीप का मोल
और इस द्रव्य सम्बन्धी पत्र नीचे लिखे
हुए पते से भेजें ।

" मैनेजर हिन्दीप्रदीप
मौरगञ्ज
इलाहाबाद।

और लेख आदि इस नीचे लिखे
पते से ।

" सम्पादक हिन्दीप्रदीप
मौरगञ्ज
इलाहाबाद "

मूल्य अग्रिम वार्षिक	...	२)
डाक महसूल	...	।०)
छमाही	...	१।)
डाक महसूल	...	०)
एक कापी का	...	।)

(...)ट प्रेस में गोपीनाथ पाठक ने हिन्दीप्रदीप के मालिकों के लिए छापा ।

THE HINDIPRADIPA

हिन्दीप्रदीप।

मासिकपत्र।

विद्या, नाटक, समाचारावली, इतिहास, परिहास, साहित्य, दर्शन, राजसम्बन्धी इत्यादि के विषय में

हर महीने को १ ली को छपता है॥

शुभ सरस देशसनेह पूरित प्रगट ह्वै आनंद भरै।
बचि दुसह दुरजन बायु सों मणिदीपसम थिर नहिं टरै॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरै।
हिन्दीप्रदीप प्रकाशि मूरखतादि भारत तम हरै॥

ALLAHABAD.—1st Jan. 1878.
[Vol. I. No. 5.]

प्रयाग पौष कृष्ण १३ सं० १९३४
[जि० १ संख्या ५]

१८७७ के वर्ष की पूर्त्ति।

सच्चिदानन्द परमेश्वर को सहस्र बार धन्यवाद है कि उसने ठेल पेल के किसी भांत इस वर्ष को पूरा कर दिया यह बात सुन कर बाजे अबोध लोग चौंक पड़ेंगे कि तुम अङ्गरेजी वर्ष को अपना वर्ष क्यों कहते हो तुम्हारा वर्ष तो चैत्र से प्रारम्भ होता है यह उनकी शङ्का अत्यन्त अमूलक है क्योंकि शास्त्र में कई प्रकार के बर्ष माने गए हैं वृहस्पति के मध्य राशि के भोग की रीति से प्रभवादि सम्वत्सरों की प्रवृत्ति माघ ही से

होती है इसी से हम दिसंबर को बर्षान्त मास कह सकते हैं यह उसी बिरोधी सम्वत् का अन्त है जिसका फल पञ्चाङ्ग में यह लिखा है "बिरोधिवत्सरेभूपाः परस्परविरोधिनः । प्रजावैकल्यताघोरा पीड़िताव्याधितस्करैः" ॥ वास्तव में इस बिरोधी वर्ष ने अपने नामार्थ को प्रत्यक्ष कर दिखा दिया इस वर्ष में सब से बड़ा भारी कार्य जो बहुत दिनों तक स्मरण रहेगा दिल्ली का दरबार हुआ है जिसे राजसूय यज्ञ कहना चाहिए जिस में भारतवर्ष के प्राय: सब राजा महाराजा बाबू राव राय ठाकुर नव्वाब बेगम खां बहादुर तथा दूसरे प्रधान वर्ग एकट्ठे हुए थे जिनके सामने सबों को यह बात सुनाई गई कि श्रीमती महाराणी बिक्टोरिया ने केसर हिन्द की पदवी ग्रहण की इस केसर शब्द को केवल अरबी भाषा का शब्द समझ हमारे बहुत से भाइयों ने व्यर्थ अपनी अप्रसन्नता प्रगट की थी और यह चाहा था कि हमारी प्रसिद्ध भाषा में कोई पदवी नियत की जाय यह उन का अनुमान बिना सोचे समझे हुआ था बिचार पूर्वक देखने से केसर से बढ़ कर पदवी के लिए कोई उचित शब्द मिलता ही नहीं यह शब्द न फारसी है न अरबी है यह शुद्ध संस्कृत है पर अन्तर एतना ही है कि केश्वर या कीश्वर बिगड़ कर केसर हो गया है तब भी इस को हिन्दी कह सकते हैं अनेकार्थ और मेदिनी आदि कोशों में (क) के बहुत से अर्थ लिखे हैं जैसा "कःप्रजापतिरुद्दिष्टः कोवायुरितिशब्दितः । कोब्रह्मणिसमीरात्म यमदक्षेषुभास्करः ॥ कामग्रंथौचक्रिणि च पतत्रिपार्थिवेतथा । मयूरेऽग्नौनपुंसि-स्या त्सुखशीर्षजलेषुकम्" ॥ "गौश्चाकुः पृथिवीपृथ्वी" सब से मुख्य अर्थ यह है कि (क) अर्थात् प्रजापति जो राजा हैं उनकी ईश्वर अथवा (क) वायु जल और अग्नि की ईश्वर क्यों कि बड़े बड़े समुद्र और ज्वालामुखी पर्वत इनके राज्य में हैं यहां तक की अग्नि वायु और जल तीनों मिल के इनकी रेलगाड़ी के घोड़े बने हुए हैं (क) सूर्य की ईश्वर क्योंकि यह तो प्रसिद्ध ही है कि महाराणी के राज्य में सूर्य कभी नहीं अस्त होता (क) विष्णु की ईश्वर क्योंकि जगन्नाथ बद्रीनारायण और रङ्गनाथ ठाकुर इनके आज्ञाधीन देशों में बसते हैं (क) यम की ईश्वर क्योंकि यम का काम दण्ड देने का है अर्थात् जितने दण्डधारी ओहदेदार सबों की ईश्वर (कु) पृथ्वी की ईश्वर यह तो स्पष्ट ही है कं सुख की

ईश्वर क्योंकि प्रजा का समस्त सुख इन्ही के आधीन है (कु) अर्थात् कुत्सा जो निन्दा तिसको ईश्वर क्योंकि राज्यप्रबन्ध में बिगाड़ होने पर जो निन्दा की जाती है उन्ही की न्याय शक्ति के भरोसे पर (कु) नाम पाप का है उसको ईश्वरी भी वेही हैं क्योंकि अधिकारी और नौकर चाकर जो प्रजा को सताते हैं उसका पाप फल उन सबों का स्वामी जो राजा है उसी को भोगना पड़ता है (क) के और भी बहुत से अर्थ हैं बुद्धिमान लोग समझ लेंगे। यह वही राजसूय है जिसमे केतने साधारण मनुष्यों कों राजा राव, राय, खां, बहादुर की पदवी दी गई और केतने बड़े २ नरेन्द्र सेनापति, छत्रधारी, चमरधारी, अङ्गरक्षक, व्यजनकारी, सचिव, प्रधान, सभासद, आदि बनाए गए हैं; यह अपूर्व राजसूय यज्ञ हुआ है पूर्वकाल के यज्ञ धूम से मेघ उत्पन्न होकर बरसते थे इस यज्ञ के धूम ने बादरों का ऐसा उच्चाटन किया कि बिंध्य के दक्षिण भाग बम्बई मदरास से लेकर पश्चिमोत्तर देश अवध और पंजाब तक उनका लेशमात्र न रह गया पहले यज्ञों में शास्त्रानुसार दक्षिणा बटती थी इस राजसूय में ऐकृ १८ और १९ के नियमानुसार समस्त माफी सङ्कल्पों का अपहरण किया गया; राजसूय यज्ञ करने वाले राजा की ओर से प्रजा को अभयदान दिया जाता था इसके अन्त में जमीदारों को आज्ञा दी गई कि तुम लोग वेशी और इज़ाफ़ा लगान की छुरी से बन्दोबस्त रूपी खप्पर में किसान बेचारों का बलिप्रदान करो पूर्वकाल में जो राजा महाराजा राजसूय में आकर संयोजित होते थे उनको यज्ञ के अधिष्ठाता राजा की ओर से प्रतिष्ठा मिलती थी और यहां तक उसका आदर सत्कार होता था कि वह सम्राट् राजा उन छोटे राजाओं को अपने बराबर का मित्र बना लेता था इस राजसूय में श्रीयुत लार्डलिटन स्वयं अपने मुखारविन्द से कहा कि तुम लोग इस योग्य अभी नहीं हो कि राजकीय प्रबन्ध का अधिकार तुम्हें दिया जाय वाह वाह कैसी बड़ी प्रतिष्ठा एतद्देशियों को प्राप्त हुई पहले यहां यज्ञ के अन्त में व्यापार और उद्यम के बढ़ाने का यत्न किया जाता था और प्रजा को सब प्रकार की सहायता मिलती थी इस यज्ञ के अन्त में लाइसेन्सटेक्स का जन्म हुआ तहसीलदारों ने सरकारी क्षुधा शान्त करने वा अपनी बड़ाई के लिए २० रुपए साल के मुनाफे को दो सौ मान लिया पर हमारे वेद शास्त्रों में

नृपाज्ञा का पालन परम धर्म लिखा है चाहे वह नृपाज्ञा कैसीही हो इसकारण भारतीय प्रजा जो सदा से सहनशील और राजभक्ति में अग्रगण्य होती आई है सब कुछ सह लिया। इस वर्ष के फागुन में जो गोविन्दद्वादशी पर्व पड़ा था वह भी लिख रखने योग्य है जगन्नाथ और गङ्गादि तीर्थों में लाखों की भीड़ एकट्ठी हुई हजारों मनुष्य आयोध्या के गुप्तार घाट में अप्रबन्ध के कारण लतमर्द होके साकेतबासी हुए उसी पर्व में नैपाल के प्रधान राजमंत्री महाराजा जङ्गबहादुर जो भारतवर्ष के अद्वितीय बीर और साहसी पुरुष थे अपनी राज्य सीमा के भीतर नदी में बिधिवत् स्नान कर बैकुंठ बासी हुए। रूम रूस की लड़ाई भी इस वर्ष की एक विचित्र संघटना है इस बिरोधी सम्वत् ने अपने नाम के अनुसार महादारुण युद्ध को जिसमें लाखों रूमी और रूसी कट गए और कटते जाते हैं बिना समाप्त किए आप समाप्त हो गया इस युद्ध में जय चाहे जिसे मिले यह ईश्वर के आधीन है पर रूमियों की बीरता और रूसियों का अचल साहस और धीरता का कीर्ति स्तम्भ चिरस्थायी रहैगा जिसमें देश देशान्तर के मुसल्मानों की भ्रातृ वात्सलता और दान बीरता की लता लिपट कर बिकसित होगी जिन्हों ने ऐसी दरिद्र दशा और दुष्काल पीड़ित अवस्था में लाखों रुपया चन्दा करके रूम की सहायता के लिए भेज चुके हैं केतने अपना पेट काट काट कर तन का कपड़ा और उद्यम के औज़ार बेंच कर चन्दा दिया है। इस स्थल पर यह लेखनी हिंदुओं पर झुंझलाती सी है पर हिंदू शब्द को हीनेन्दू का अपभ्रंश जान रुक जाती है कि जो इन्दु नाम प्रकाशक तेज वा बुद्धि शक्ति से हीन हो गए हैं तो उनका इसमें क्या दोष है जिनमें पुरुषार्थ के अभिमान का लेश भी न रह गया जिन्हें दुर्व्यसन और आलस्य की जूड़ी सदा दबाए रहती है स्वार्थपरता के लिहाफ से जिनका मुहँ ढपा हुआ है देश की भलाई के काम में भीत के उरेहे चित्र से बन बैठेंगे सूरत सकल चेहरा मोहरा सब आदमी का सा बिद्या गुन से भरे पुरे पर न जानिए किस जादूगर ने ऐसा जादू डार दिया है कि कुछ कहते ही नहीं बनता गाय भैंस आदि पशुओं में भी अपने झुण्ड का एक सरदार होता है जहां बहुत से चूहे होते हैं उनमें भी दो एक महन्त रहते हैं जिनके सहारे से सब छोटे चूहे दौड़ते फिरते हैं कीड़े मकोड़े और चोटि-

यों में भी यूथप और महन्त देखा जाता है मनुष्यों में भी और जाति के लोगों में बहुत ऐसे पाए जाते हैं जो देश और जाति की भलाई के कामों में तत्पर हो प्राण तक सङ्कल्प कर देते हैं इङ्गरेजों में सभी ऐसे हैं मुसलमानों में भी सैकड़ों पाए जाते हैं कि जिस काम में देखो हेकड़ी के साथ डट जाते हैं हम हिंदुओं में न जानिए क्या होगया कि आंख ही नहीं खुलती विद्या अलग रोती है धर्म अलग पड़ा चिल्लाता है मेल मिलाप की कुछ फिक्र ही नहीं है वास्तव में यह युक्ति और महिमा उस चतुर खेलाड़ी की है कि वह जिस समुदाय वा कुल में बिगाड़ देखता है उस में चुन चुन के चूतियानंदन घोंघा बसन्त आपस्वारथी और कमहिम्मती हिजड़ों को भर देता है। इसी वर्ष में अवध और पश्चिमोत्तर देश का मिलाप हुआ यही हत्यारा वर्ष शिक्षा प्रकर्णों के गड़ बड़ करने और हिंदी संस्कृत के हृदय शल्य का मूल कारण हुआ; मारकण्डेय पुराण में लिखा है कि एक समय महा दुर्भिक्ष और अवर्षण के कारण प्रजा को बिना अन्न के बड़ी पीड़ा हुई तब मुनियों की स्तुति से प्रसन्न हो शाकम्भरी आद्या ने शाग पैदा कर उनकी रक्षा की वही बात इस वर्ष में हुई कि एक ही पानी के बरसने से जो खेत जौ गेहूं के बोए गए थे उनमें सरसों और बथुआ इतना पैदा होगया कि उसी से बन्दोबस्त सन्तप्त और दुर्भिक्ष पीड़ित लोगों की प्राण रक्षा हुई इस उपद्रवी वर्ष का करतब हम कहां तक लिखें बीतते २ सरकार और निजाम के बीच में इसने एक फुलझरी छोड़ दी है देखें इसका क्या परिणाम होता है॥

वाल्मीकि रामायण

(नम्बर ३ के १० पृष्ट के आगे से) बालकाण्डे षष्टः सर्गः॥

चौपाई।

श्री दशरथ नृप रघो महात्मा	।	रक्षत पुर सोइ मनू समाना	॥
कुल इक्ष्वाकु जन्म जिन्ह लीन्हा	।	संग्रह सब पदार्थ जिन्ह कीन्हा	॥
वशी धर्म रत वेदन ज्ञाता	।	याजक तीन लोक बिख्याता	॥

मित्रवान शत्रुन कर हन्ता । तेजस्वी अतिसय बलवन्ता ॥
सदा सत्यवादी दुतिमाना । दीरघ आयु महर्षि समाना ॥
देस नगर बासिन कर प्रीता । जासैं नित तिमि इन्द्रिय जीता ॥
करत लाभदायक जो करमा । काम अर्थ लइ जेहि अरु धरमा ॥
सञ्चय करत धान्य धन ढेरा । जिमि सुरपति अरु देव कुबेरा ॥
राज करत जो एहि बिधि छाजा । जैसे अमरावति सुर राजा ॥

दोहा ।

सत्य शील प्रमुदित प्रजा, करत सो जेहि पुर बास ।
निज धन तुष्ट अलोलुप, धार्म्मिक श्रुत इतिहास ॥

चौपाई ।

नहिं तहँ हुतेउ कुटुम्बी कोऊ । संचय अल्प कहावत जोऊ ॥
गज तुरग धन धान्य न जाही । अपर पदार्थ सुलभ जेहि नाहीं ॥
कामी कृपण क्रूर नहिं कोऊ । मूरख नास्तिक नहिं तहँ होऊ ॥
धर्म्मशील तहं नर अरु नारी । गो स्वामी नित हरषित भारी ॥
निरमल जिन्ह कर शील चरित्रा । जग महर्षि इव हुतेउ पवित्रा ॥
नहिं कोउ नगर अयोध्या माहीं । पहिरे श्रवन जो कुण्डल नाहीं ॥
सीस मुकुट नहिं जेहि उर माला । करत जो नांहिन भोग बिसाला ॥
स्वच्छ सदा नाहिन जो रहई । चन्दन लेप नाहिं जो करई ॥
नाहिं अदाता तहँ कोउ भाई । नाहिं जो उत्तम बस्तु न खाई ॥
नाहिंन लखिये पुर बिच काहू । अंगद धरेउ नाहिं जिन बाहू ॥
पहिर न भूषन कर उर माहीं । अन्त:करन जो जीतेउ नाहीं ॥
अग्निहोत्र जो जज्ञ न करई । नीच जो चौर करम अनुसरई ॥
सदाचार तें रहित न कोऊ । नहिं तिमि मिश्र बरन कर जोऊ ॥
इन्द्रियजित द्विज सब तहँ बसहीं । निज निज कर्म्म निरत जे रहहीं ॥
सदा अध्ययन चित जे देहीं । दान प्रतिग्रह नहिं जे लेहीं ॥
नाहिं न रह्यो कोउ तेहि रजधानी । नास्तिक पर निन्दक अज्ञानी ॥

नहिं अबहुश्रुत मिथ्याबादी । हीन अशक्त व्यथित उन्मादी ॥
नाहिंन तहँ जो ब्रती न होई । बेद षडङ्ग जान नहिं कोई ॥
नहिं तेहि नगर लखिय अस कोई । राजभक्त जो नाहिंन होई ॥
नर नारी जहँ नाहिंन कोऊ । रूपवान श्रीमान न जोऊ ॥ श्री०

मेघदूत

८ पेज के आगे से ॥

मन्द सुगन्धित बहत है, तुम्हरेहि मन की बात।
बाम ओर चातक मधुर, बोलत अरु बिलखात ॥ १८ ॥
जानि समय निज रमनि को, नभ में बांधि कतार।
नयन सुखद तोहिं सेइहैं, बकुलो करि मनुहार ॥ २० ॥

छन्द।

तहँ अवसि तुम निज बंधु जाया जाय जोवित देखि हौ।
मम मिलन आसा गनत दिन छिन ताहि जातहि पेखि हौ ॥
बिरही जनन के हृदय कोमल कुसुम सम यद्यपि अहैं।
पै प्रिया सङ्गम आस बन्धन बन्ध तें जोवत रहैं ॥ २१ ॥

दोहा।

करन अबंध्या महि हरित, छन संकुल उपजाय।
तव गरजन सुनि हंस गन, तजि मानस अकुलाय ॥ २२ ॥
उड़ि ऐहैं पाथेय हितु, तुअ नव किसलय खाय।
नभ में तुअ सँग रहि सबै, करिहैं तुअ सुसहाय ॥ २३ ॥

छन्द ॥

मिलि तुङ्ग सैलहिं प्रेम बस ह्वै बिदा तुम मांगहु सही।
जिय जासु कटि रघुराज पग उपटे सदा लखियत सही ॥
निसि द्यौस जाके संग सों सु सनेह दूनो ही बढ़ै।
लखि सलिल लोदन बिरह चिर को नैन सों सब दिन कढ़ै ॥ २४ ॥

खग आदि अपने गौन हित शुभ जलद सो सुन लीजिए।
फिर श्रवन सुख संदेस हमरी जानि कै चित दीजिए॥
जब खिन्न पथि श्रम छोड़ु आतुर शृङ्ग शैलन बैठिए।
जब क्षीन जल बिनु तोर सरितन नीर लेय सु पैठिए॥ २५॥
अति सुभग धीर समीर भूधर शृङ्ग पै निस दिन बहैं।
तहँ मुग्ध बाला सिद्ध की लखि चकित ह्वै तुहिं सुख लहैं॥
तिन्ह सरस निचु लहिं पूर्व दिग्गज देखि मान मिटावहु।
जिय जाय उत्तर गर्व तिनके बाहु बलहिं हटावहु॥ २६॥

कुण्डलिया।

देखिय धनुष सुरेन्द्र को जिमि रतनन की पांति।
जाकी बाम्बी सों उदय देखन जोग जनाति॥
देखन जोग जनाति अङ्ग जिमि गिरिवर धारन।
लसत चन्द्रिका मोर मुकुट की सीस सम्भारन॥
गोप वेश गोपाल बिष्णु की सोभा पेखिय।
नैन युगल निज सफल आज कीजिय तिन्ह देखिय॥ २७॥

शेषभागे।

——XXX——

भोजनपदार्थ॥

इस लोगों में बहुत से लोग इस बात को भली भांति नहीं जानते कि कौनसा पदार्थ भोजन में लाभदायक है और कौन सा हानि कारक है बहुत से पदार्थ कि जो खाने में स्वादिष्ट होते हैं लोग उसकी व्यर्थ बढ़ा २ कर बड़ी प्रशंशा करते हैं कि यह वस्तु बड़ी लाभ दायक है; चाहे सचमुच वह ऐसी होय या नहीं॰ बहुत लोग उनकी इस प्रशंसा को भली भांति मान लेते हैं इसका कारण यह है कि लोग नहीं जानते कि क्या २ भोजन में अवश्य है; इस लिए इस पर कुछ हम विज्ञान (Science) के अनुसार लिखते हैं जीव मात्र के भोजन में तीन वस्तु का होना अवश्य है:--

पहिले, जलने योग्य पदार्थ अर्थात जो

कि शरीर के भीतर जल कर गरमी उत्पन्न कर सके।

दूसरे मांस बढ़ाने वाला पदार्थ कि जो शरीर के शिथिल हो गए हुए अवयवों को ठीक रख सके अर्थात श्रम पड़ने से शरीर में जो कि मांस को हानि होती है पूरी हो जाय।

तीसरे चार पदार्थ जो कि शरीर में स्थित होकर हड्डी आदि को बढ़ा सके कि जिस कारण देह की तौल और शरीर बढ़ती है।

इन तीनों का जीव मात्र के भोजन में होना अत्यावश्यक है।

जितनी वस्तु कि जीवों के भोजन में आती हैं उनमें से एक भाग कोयला है; क्योंकि यह शरीर के भीतर जल कर गरमी उत्पन्न करता है यद्यपि हम इस कोयले को आंख से नहीं देखते तो भी यह भोजन की वस्तुओं में आधे के लग भग रहता है इसके समझने के लिए कि शरीर में गरमी किस प्रकार से उत्पन्न होती है हम हवा में जलते हुए कोयले से भली भांति जान सकते हैं, जब कोयला जलता है तब यह हवा के प्राणप्रद से (oxygen) मिल कर अङ्गाराम्लवायु (carbonic acid gas) उतपन्न करता है इस श्वास में कोयला और प्राणप्रद (oxygen) दोनों हैं।

इसी प्रकार से हवा जो कि हम लोग श्वांस लेने में भीतर खीचते हैं बदल जाती है हवा में आक्सिजन (xygen) शरीर के भीतर जलते हुए कोयले से मिल कर अङ्गाराम्ल (carbonic acid) बन जाता है; क्योंकि हवा में जिसे हम श्वांस लेने में भीतर खींचते हैं $\frac{१}{३०००}$ भाग कारबोनिक एसिड अङ्गाराम्ल (carbonic acid) रहता है परन्तु जब श्वांस बाहर आती है तब उसी हवा में $\frac{१}{२०}$ भाग कारबोनिक एसिड (corbonic acid) पाया जाता है।

इस लिए श्वांस जो कि बहुत स्वच्छ देखने में होती है उसमें भी कोयला है इस कोयले के तौल का हिसाब जानने से लोगों को बड़ा आश्चर्य होगा कि इस श्वांस से जो कि बाहर आती है एक दिन में कुछ कम डेढ़ पाव तौल में कोयला निकलता है। इस हिसाब से सवा दो मन कोयला एक साल में एक मनुष्य के श्वांस से निकलता है।

कोयला चाहे चूल्हे में जले चाहे शरीर के भीतर परन्तु संपूर्ण परिमाण गरमी का दोनो जगह में बराबर होता है। यह तो हम लोग भली भांति जानते

हैं कि शरीर का कोई भाग जलते हुए कोयले के समान कभी नहीं लाल हो जाता तो फिर दोनों जगह के गरमी का परिमाण क्यों कर हो सकता है? इसका कारण यह है कि एक धीरे २ जलता है दूसरा जल्द जल जाता है॥ इसका एक उत्तम दृष्टान्त यह है कि यदि हम दो बराबर के घड़ों में पानी भरें और एक में बड़ा और दूसरे में छोटा छेद करें तो एक में से जल्द और दूसरे में से देर में सब पानी अन्त में निकल जायगा। इसी प्रकार से शरीर के गरमी का हाल है कि जो धीरे २ चूल्हों से जल्द२ निकलती हुई गरमी के बराबर अन्त में हो जाती है।

जीवों के शरीर में अग्नि जला करती है और उसके उत्तेजना के लिए भोजन इन्धन है। इस लिए शरीर की अग्नि बढ़ाने की वस्तु खाना चाहिए परन्तु अधिक नहीं क्योंकि अधिक गरमी उतपन्न करने वाली वस्तु धीरे २ सब अवयों को भस्म कर डालेगी तो अन्त में शरीर नष्ट हो जायगी।

शेषआगे।

प्रेरित॥

हवा का बोझ।

जब हम पिचकारी का मुंह पानी में रख कर उसके डण्डे को खींचते हैं तो पानी पिचकारी के भीतर चढ़ आता है इसी तरह किसी नली का एक मुंह पानी में डाल कर दूसरे ओर अपना मुंह लगा कर सांस ऊपर को खींचो तो पानी मुंह तक चढ़ आता है। ग्रीस (Greece) के विद्वानों ने इस बात को देख कर यह सिद्धान्त निकाला कि "प्रकृति शून्य से घृणा करती है" (Nature abhors vacuum) अर्थात संसार में कोई जगह बिना किसी चीज से छिकी हुई नहीं रह सकती और पानी के उठने का यह सबब बतलाया कि सांस ऊपर खींचने से नली में की हवा मुंह में चली जाती है इस लिये नली में एक सून जगह रह गई जिस को पानी ने छेक लिया। यह सिद्धान्त बहुत दिनों तक अपने ओर शोर में रहा और जलाकर्षक यन्त्र (water-pump) में पानी उठने का सबब भी यही बतलाया जाता था। इ-त्तिफ़ाक़ से पैरिस के किसी बाग़ में एक नया जलाकर्षक यन्त्र मँगाया गया जो कि साधारन यन्त्रों से अधिक ऊंचा था

जब यह लगाया गया तो बड़े अचर्भ की बात देखने में आई कि कितना ही खीचा जाता है पानी इसमें से निकलता ही नहीं लोगों ने समझा कि कदाचित् कल के बनाने में कोई भूल हो जिसके सुधारने के लिए सैकड़ों विद्वान कारीगर बोलाये गये पर ईश्वर के नियम को कौन बदल सक्ता है सब के दांत खट्टे हो गये और विद्वानों को शून्य जगह (vacuum) हवा पानी या और किसी वस्तु से बिना छिका हुआ पड़ी रही। उसी दिन से यह सिद्धान्त सब के जीमें खटक गया और लोगों को नित नये २ ख्याल सूझने लगे जिसमें से एक यह भी था कि नली के बाहर वालेपानी पर भीतर के बनिसबत किसी तरह पर ज्यादा दबाव पहुंचने से पानी उठता है लेकिन वह किस चीज़ का दबाव है और भीतर के बनिसबत बाहर के पानी पर किस तरह ज्यादा हो जाता है यह कोई न बतला सका क्योंकि उन दिनों के विद्वानों का सिरताज होना टोर-सिली (Torceli) साहब के भाग में लिखा था इनके जीमें यह ख्याल हुआ कि पानी के ऊपर सिवाय हवा के और कौन सी ऐसी बड़ी चीज हो सकती है जिसका दबाव पहुंचे और जब जलाक-र्षक यन्त्र के नली में से हवा निकाल ली जाती है तो जितना पानी इस नली से ढका रहता है उस पर कुछ भी बोझ नहीं रह जाता परन्तु नली के बाहर जो पानी है उस पर हवा का बोझ बना रहता है इस लिये पानी ऊपर को नली में उठ आता है और जितना हवा का बोझ है उतना ही चढ़ता है उस से ज्यादा नहीं उठ सकता पर उस समय के लोगों को हवा ऐसे चीज़ में बोझ बतलाना बे मतलब का बकवाद करना था मगर टोरसिली साहिब के दिल पर तो यह बात जम गई वे अपने मन को पक्का करने के लिये सबूत ढूंढ़ने लगे और यह सोचा कि अगर पानी हवा के बोझ से उठता है तो जो कोई चीज पानी से भरी ली जावे तो उसे हवा के बोझ से पानी के बनिसबत उतना ही कम उठना चाहिये जितना कि वह भारी है इसकी परीक्षा करने के लिये साहिब ने एक शीशे की नली ली जो कि ३५ इंच के करीब लम्बी और एक तरफ से बन्द थी और इस पर एक एक इंच के दूरी पर चिन्ह बना कर इसे पारा से भरा। यह धातु पानी से १३½ गुना के लगभग भारी है इसी लिये इसको हवा के बोझ से पानी के बनिसबत उतना

हो कम यानि ३० इंच के करीब उठना चाहिये यह हिसाब कर टोरसिली साहेब ने अपने नली का मुंह अंगुली से दबा कर उस को पारा से भरे हुये एक बरतन पर सीधा खड़ा कर इस धातु में नली का मुंह डुबा दिया और अंगुली हटा लेने का इरादा किया अब ज़रा सोचिये कि उस वक्त साहेब के दिल पर कैसे २ ख्याल गुज़रे होंगे ! वे सोचते रहे होंगे कि अगर हमारी बात ठीक ठहरी तो आज हमने सारी दुनियां को जीत लिया और कहीं गलत निकली तो सब मेहनत मट्टी में मिल जायगी और बालू पर की भीत गिर पड़ेगी खैर इन झगड़ों को दूर कर टोरसिली साहेब ने अपने दिल को मज़बूत किया और अंगुली को एक बारगी हटा लिया; अहाहा अब ख्याल कीजिये कि उन को कैसी खुशी हुई होगी जब कि उन्हों ने देखा होगा कि हाथ हटाते के साथ ही पारे ने नली में से नीचे उतरना शुरू किया और ठीक २ करीब ३० इंच की उंचाई पर आकर रुक गया । इस बात को सुन कर लोगों का दिल बढ़ा और टोरसिली साहेब के मत को दृढ़ करने के लिये और परीक्षा सोंची । लोगों ने कहा कि अगर हवा में बोझ है तो जितना ऊपर जाइये उतना ही बोझ कम होगा क्योंकि यहां के बनिसबत ऊपर हवा कम है टोरसिली साहेब के यन्त्र को लेकर एक आदमी पहाड़ पर चढ़ा और देखा कि ज्यों २ ऊपर जाता त्यों २ पारा नीचे गिरता जाता है और जब नीचे उतरा तौ फिर उतना ही ऊंचा हो गया आखिर को एक ने इस यन्त्र को वाताकर्षक (air pump) के ढकने में रख कर हवा खींचने लगा तो बराबर पारा नीचे उतरता गया यहां तक कि नली में बिलकुल न रह गया और जब फिर हवा भरी तो फिर पारा उतना ही ऊंचा उठा । हवा में बोझ होने का सब से सहल प्रमाण यह है कि हवा से भरी हुई एक शीशी को तौलो और उसके भीतर की हवा निकाल कर फिर तौलो तो पहिले के बनिसबत पीछे की तौल कम होगी ॥

चन्द्रसेन नाटक

तीसरे नम्बर के ७ पृष्ठ के आगे से ।

(एक देवदूत का प्रवेश)

देवदूत । हमे देवराज इन्द्र ने आज्ञा दी है कि हम शवान् तू जा उस साहसी क्षत्री बीर को जिसने युद्ध में शत्रुओं

को बिना पीठ देखाए और दीन वचन बिना कहे रण में यवनों के सन्मुख हो तन त्याग वीरगति पाई है उस चत्री पुत्र को बिमान पर बैठाय छत्र चमर करते हमारे देवलोक में ले आ; अहा शूर वीर मनुष्यों की गति ऐसे ही सराहने के योग्य है सूर्यमण्डल को भी भेद कर दोही पुरुष जाते हैं एक तो वह जिसने योग बल से तन त्यागा है दूसरा वह जो रण में शत्रु के सन्मुख हो मारा गया है "द्वाविमौपुरुषौलोके सूर्यमण्डलभेदिनौ। परिव्राड्योगयुक्तश्च रणेचाभिमुखेहत:॥" शूरों को तन त्यागने के लिए रण रूपी महा पुण्य क्षेत्र छोड़ प्रयाग काशी आदि तीर्थों की खोज करना व्यर्थ है; सब ओर शत्रुओं से घिर शूर मनुष्य वीरता के साथ देश कुदेश जहां कहीं मरे अक्षय लोक पाने का अधिकारी होता है "यत्र यत्रहत:शूर: शत्रुभि:परिवेष्टित:। अक्षयांल्लभतेंलोका न्यदिक्लीवंनभाषते"॥

(नेपथ्य में)

पुत्र तुम्हारे इस वीरोचित कर्म से हम सब लोग तर गए और स्वर्गबास पाया तुम्हारा कल्याण हो॥

देवदूत (सुनकर) अहा ये सब चन्द्रसेन के पितर गण हैं जो इसके वीर कर्म से तर कर स्वर्ग जा रहे हैं इस बात को हमने भली भांत अनुभव किया है कि रण रूपी यज्ञ में ललाट देश में घाव हो जाने से जो रुधिर बह कर मुख में आता है वह उस योद्धा के लिए मानो सोमपान सदृश है; सच है वीरपुरुष को संग्राम में निडर हो कर लड़ना ही महा यज्ञ है "ललाटदेशेरुधिरंस्रवत्त यस्याहवेनप्रविशेच्चवक्त्रम्। तत्सोमपानेनकिलास्यतुल्यं संग्रामयज्ञेविधिवच्चदृष्टम्"॥ उ: यह रणभूमि कैसी वीभत्स और भयावनी है कादरों के लिए तो यह वास्तव में निपट डरावनी है पर सूरमाओं को इसे देख लड़ने का चौगुना उत्साह बढ़ता है; देखो कहीं रुण्ड मुण्ड झुण्ड के झुण्ड नाच रहे हैं किसी सिपाही को मृतक देह को स्यार और कुत्ते अपनी २ ओर खीचते आपस में लड़ रहे हैं जिधर देखो उधर गीध और कौवे टटका रुधिर पीपी आनन्द में भरे कोलाहल मचाए हुए हैं; वाह वाह इसने कैसा गहके तलवार पकड़ी थी कि हाथ कट कर धर से अलग हो गया पर तलवार की मुठिया हाथ से नहीं छूटी।

(नेपथ्य में) छोड़ो २ इस साहसी वीर वर को हम अपना पति बनावेंगी तुम आओ इस विमान पर चढ़ो हम तुम्हे अपने साथ स्वर्ग ले चलें।

दे—दू—अहा देखो अपसराए उस वीर के लिए आपस में कलह कर रही हैं, देवराज ने हमे उसके ले आने को भेजा है सो वह तो आपही विमान पर चढ़ा स्वर्ग जा रहा है चलो हम भी इन्द्र से जाकर इस वृत्तान्त का निवेदन करें (प्रस्थान)

दूसरा गर्भाङ्क ।

उसी रण भूमि का बहिर्भाग ।

भारत का प्रवेश ।

अहा आज हमारा जी अत्यन्त प्रसन्न है हमारे भारत सन्तानों को सब लोग हथाही दोष देते हैं कि ये निष्पुरुषार्थी और निर्वीर्य हो गए यह सब कुदशा विधाता का कर्तव है जो चञ्चला राज्य लक्ष्मी इन्हे छोड़ विदेशियों के आधीन हो गई नहीं तो ये किस बात में उनसे कम हैं; अहा धन्य आर्य कुल गौरव इस समय की इसकी शूरता धीरज और साहस देख हमे निश्चय हो गया कि हमारे आर्य सन्तान किसी तरह इन तातार देश वासी यवन अथवा और किसी द्वीपान्तर वासी से बुद्धि विद्या साहस और पौरुष में कम नहीं है किन्तु क्या कीजिए जब दैव प्रतिकूल होता है तब कोई बात बनाए नही बनती सच है " प्रतिकूलतामुपगतेहिविधौ विफलत्वमेति बहुसाधनता " यह दैव की प्रतिकूलताही का कारण है कि कितने इनमे से अपने स्वरूप को भूल अचेत पड़े सो रहे हैं; पर सभी तो ऐसे नहीं हैं कितने इनमे से अपनी बुद्धि विद्या बल और साहस का परिचय दे सुसभ्यजाति के विदेशियों को भी चकित कर दिया है; हाय यह कैसे दुःख की बात है कि ए बेचारे समस्त उत्तमोत्तम गुणों के रहते भी दासत्व की शृंखला में बद्ध हो गए हैं, और अन्न वस्त्र से भी हीन हो दर दर मारे फिरते हैं हाय कभी वे दिन अब फिर भी आवेंगे जब इनकी दुर्भाग्य निशा का अन्त होगा हा जो पहिले दाता थे वे अब भिक्षार्थी याचक हो गए हैं जो किसी समय संपूर्ण जगत के शिक्षा गुरू थे वे अब एक सामान्य बात के जानने के लिए भी द्वीपान्तर वासी विदेशियों के शिष्य बन बैठे हैं भवितव्यता जो चाहे सो कर डाले अब इस समय में अपनी बातों को सोच

दुःख सागर में मग्न हो यही कहता हूं कि हे ईश्वर तूने यह क्या कर दिया जिस पञ्चनद वाहिनी सिन्धु सरस्वती के तीर पर वास कर आर्य्य महर्षिगण जलद गम्भीर और मधुर स्वर से सामगान किया करते थे वही सरस्वती अब भी विद्यमान है अभ्रंलिह हिमाद्रि की जिन निर्जन कन्दराओं में समासीन योगरत तापस आर्य्य सन्तान रात दिन ब्रह्म का विचार करते थे, वे ही पवित्र गिरि कन्दरायें अब भी बनी हैं किन्तु भारतीय गौरव का प्रकाश कारी सूर्य्य इस समय अनन्त जलधि के तले अस्त हो गया उसके साथही हमारे सन्तानों का भ्रातृ स्नेह देश वात्सल्य और सहानुभूति भी उठ गई (नेपथ्य में) मान्यवर आपके सन्तानों की दुरवस्था का यही सब कारण है यदि अब भी इनमें बन्धु प्रेम सहानुभूति और ऐक्य किसी प्रकार हो जाय तो सब कुछ हो सकता है। शेषआगे।

जि-१ नं-८ पृ-४ देखो

रूम रूस।

हा! कार्स और प्लेवना दोनों रूमियों के हाथ से निकल गया क्या अब भी रूमियों को जीतने की आशा है? एक चिट्ठी जिसे सुलतान ने योरप के सब बादशाहों के पास इस मतलब से भेजा था कि आप लोगों में कोई बिचवई हो कर रूस से हमारी सुलह कराय दें उसे भी सिवाय इटली के किसी बादशाह ने स्वीकार न किया। ऐसा लोगों ने प्रसिद्ध कर रक्खा है कि कार्स और प्लेवना दोनों का रूसियों के हाथ में आना वीरता से नहीं हुआ किन्तु रुपया के बल से; वाह! वाह! धन्य ऐसे लोगों की समझ को भला रूमियों के ऐसेही सेनापति हैं तो रूमियों को लाज करना चाहिए कि इसी माथे रूसियों के साथ लड़ने को उद्यत हुए थे; हम जानते हैं ऐसा कभी न भया होगा सुलतान को चाहिए कि अपनी जाति की लाज और पत रखने को इस बात के खबर के लिए अखबारों में इसको एक नोटिस कर दें॥

हिन्दुस्तान के सब समाचार पत्रों की यह अनुमति है कि अङ्गरेजों को रूसियों से लड़ने में अब देर न करना चाहिए, कहने को किसी का कोई मुंह थोरे पकड़े हैं पर यह भी तो सोचना चाहिए कि अङ्गरेजों के पास एतनी फौज है जो रूस और सब योरप के बादशाहों की मिली हुई दश बारह लाख फौज का सामना कर सके अब क्रिमिया की ला-

REGISTERED No. 31.

लड़ाई के वे दिन गए जब योरप के ४ बादशाह मिल कर रूस से लड़े थे अब तो रोमानिया, सरविया, माण्टिनीग्रो रूस की ओर से खुला खुली लड़ रहे हैं जरमनी और आसट्रिया का भी रूस से मिल जाना कुछ आश्चर्य नहीं है; हमारी सरकार बुद्धि में किसी से कुछ कम नहीं है "बुद्धिर्यस्यबलंतस्य" वह भी अपना औसर देख रही है। थोड़ीही फौज से और दूसरों को अङ्गरेज भगा देवेंगे; क्योंकि इनसे प्रबल जहाज की लड़ाई में कोई नहीं है।

—o—

समाचार वली॥

चीन के उत्तर प्रान्त में इन दिनों बड़ा दुर्भिक्ष है।

श्रीमान् गवर्नर जेनरल ने बाम्बे के गवर्नर को भी निमन्त्रण दिया है।

लखनऊ में डेंगू ज्वर ने फिर अब की बार अपना दौरा किया है।

दिल्ली में शीतला की बड़ी अधिकाई है।

यमुना यहां ५ फुट के लगभग बढ़कर अब घटती जाती हैं।

१७ जनवरी को पार्लियामेंट नामक महा सभा एकट्ठा हो कर रूमियों को सहायता करना या नहीं इस बात का बिचार करेगी।

पिछला पानी यद्यपि यहां बहुत थोड़ा बर्सा है पर खेती को उस्से बड़ा उपकार होगया ऐसे ही परमेश्वर यदि इस महीने में एक या दो बार और भी क्रपा कर दें तो महँगी का कहीं नाम भी न रह जाय।

सूचना।

जो महाशय इस पत्र को न लिया चाहें वे क्रपा करके हमको पत्र लिख भेजें यदि वे इस पत्र ही को लौटा देवेंगे और कदाचित पत्र हमको न मिले तो वे लोग इसके ग्राहक समझे जांयगे ग्राहक लोगों से प्रार्थना है कि हिन्दीप्रदीप का मोल और द्रव्य सम्बन्धी पत्र नीचे लिखे हुए पते से भेजे।

"मैनेजर हिन्दीप्रदीप
मीरगञ्ज
इलाहाबाद।

और लेख आदि इस नीचे लिखे हुए पते से।

"सम्पादक हिन्दीप्रदीप
मीरगञ्ज
इलाहाबाद"

मूल्य अग्रिम वार्षिक	...	२)
डाक महसूल	...	।≠)
छमाही	...	१।)
डाक महसूल	...	≠)
एक कापी का	...	।)

बनारस लाइट प्रेस में गोपीनाथ पाठक ने हिन्दीप्रदीप के मालिकों के लिए छापा।

THE HINDIPRADIPA.

हिन्दीप्रदीप।

मासिकपत्र।

विद्या, नाटक, समाचारावली, इतिहास, परिहास, साहित्य, दर्शन, राजसम्बन्धी
इत्यादि के विषय में

हर महीने को १ ली को छपता है ॥

शुभ सरस देशसनेह पूरित प्रगट ह्वै आनंद भरै ।
बचि दुसह दुरजन बायु सों मणिदीपसम थिर नहिं टरै ॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरै ।
हिन्दीप्रदीप प्रकाशि मूरखतादि भारत तम हरै ॥

ALLAHABAD.—1st Feb. 1878. [Vol. I. No. 6.]
प्रयाग माघ कृष्ण १४ सं० १९३४ [जि० १ संख्या ६]

ब्राइट साहब के स्पीच की समालोचना जिसे उक्त साहब ने मैनचेस्टर नगर में यहां के दुष्काल पीड़ितों के निमित्त जो सभा हुई थी उसमें दिया था।

ब्राइट साहब मेम्बर पारलियामेण्ट ने हिन्दुस्तान की अङ्गरेजी गवर्नमेण्ट को अपनी स्पीच में कई ठौर बहुत कुछ लथाड़ा है इस कारण यद्यपि और२ अङ्गरेजी अखबार ब्राइट साहब की, बड़ी निन्दा कर रहे हैं परन्तु यदि पक्षपात छोड़ न्याय दृष्टि से विचार करो तो उक्त साहब ने जो कुछ कहा है वह सब बहु

नही यथार्थ है। मिष्टर ब्राइट ने एक स्थान मे यह सिद्ध किया कि अङ्गरेज लोग हिन्दुस्तानियों के साथ जैसा बर्ताव करते हैं वह निस्सन्देह एक प्रकार का अत्याचार, निर्दयता और स्वार्थ साधन है चुङ्गी, स्टैम्पड्यूटी, आदि और सबके ऊपर साल्टड्यूटी अर्थात नमक का कर है जिस्से बड़ी आमदनी है और जिसके द्वारा अति दीन पुरुषों के झोपड़ों में भी यह टिकस विराजमान हो रहा है उस पर यह भी कि उन्हें गवर्नमेण्ट के प्रबन्ध मे एतना भी अधिकार नहीं है कि चूं भी कर सकें उस जाति के मनुष्यों के सामने जिसने उन्हें जीता है वे गूंगे हो रहे हैं उनको कभी किसी गवर्नमेण्ट के काम में राय नहीं ली जाती।

क्या ब्राइट साहब का यह कहना सब झूठ है? किसी तरह नही; यह सब सच है हम लोगों को ठीक यही दशा है गवर्नमेण्ट हमारी बात कहां सुनती है? और किसमे हमारी राय ली जाती है यही ब्राइट साहब यदि गवरनर जेनरल होकर कहीं यहां आवें तो यह सब अकिल उनकी भूल जायगी, फिर यह कोई बात उन्हें न सूझेगी।

उक्त साहब ने अपनी स्पीच मे यह भी कहा है कि "यह वही हिन्दुस्तान है जिसका नाम भी जब कभी किसी विदेशीय के कान मे पड़ता था तो वह यही समझता था कि यह धन और सम्पत्ति का स्थान है जिसे लुटेरों ने वे रोक टोक हो यहां तक लूटा कि अब महा दरीद्र दशा मे है" यह भी बहुत ही ठीक है आज कल हमरा यही हाल हो रहा है जो कोई यहां आवते हैं केवल रुपया बटोर ले जाते हैं कभी किसी ने हम लोगों के लिए कुछ अपने पास का खर्चा है? हां अबकि वार अलवत्ता ५० लाख रुपया हिंदुस्तान मे दुष्काल पीड़ितों की सहायता के लिए विलायत से चन्दा आया है "अतिप्रसन्नो दमड़ींददाति" ये ५० लाख उस रुपए का ५८,०००० वां भाग भी नहीं है उस्का जो वे लोग यहां से इङ्गलेंड को ढो ले गए, अस्तु तौ भी हम उन महाशयों को जिन्हों ने चन्दा दिया है बहुत२ धन्यवाद देते हैं यद्यपि चन्दा देने वालों में प्राय: ऐसे हैं जिन्हें कभी हम से कुछ लाभ नहीं हुआ निस्सन्देह उन्होंने अपने पास से दिया है परन्तु वे लोग जिनके कारखाने हिंदुस्तान की बदौलत जारी हैं और जो लाखों रुपए मुनाफे लूट

रहे हैं, तौ भी कपड़ों पर चुङ्गी (import duty) उठवा देने के यत्न में लगे हैं ऐसे दाताओं को अपने पास से क्या देना पड़ा है? हमी से लेकर हमी को दिया ॥

फिर उक्त साहब ने सन '३७, '६० ६१, '६६, ६७, '६२, ६८, '७७' के दुष्कालों का संक्षेप बर्णन किया है और ऐसे २ अकाल से आगामि समय में बचने का उपाय नहर और ठौर २ ताल आदि बनवाना बताया है। इस बात से हम ब्राइट साहेब की अनुमति से विरुद्ध हैं जिस पर फिर हम कभी लिखेंगें।

साहेब ने भी एक स्थान में कहा है कि उनके निकट आधे दरजन मनुष्यों का २५०,०००,००० आदमियों पर राज करना असम्भव है। हमारी समुझ में तो एक मनुष्य भी भली भांति राज का प्रबन्ध कर सकता है यदि स्वार्थ साधक और 'लुटेरों कि जिनको यहां बहुतायत है' उनके मारे जो करने पावे।

और यह भी कहना उनका बहुत ठीक है कि जितने योरोपियन सरकारी नौकर हैं वे यही चाहते हैं कि बड़ा ओहदा, बड़ी तनखाह और अन्त में बड़ी पेनशन मिलें॥

उनकी सोच में सबसे बढ़ कर एक बात जो हम लोग अखबार वालों के विषय में है वह यह है "हिंदुस्तान में दो प्रकार के पत्र छपते हैं—एक तो अङ्गरेज लोग छापते हैं जो कि सरकारी नौकरों का पत्र है इस लिए कभी किफायत के पक्ष मे नहीं हो सकती और ये सब पत्र जब कभी हम थोड़ा भी हिंदुस्तान के विषय में कुछ कहते हैं तौ भी ये हमे बुरा कहते हैं। हमें निश्चय है, कि जो कुछ हम इस समय कह रहे हैं इस पर वे बहुत कुछ हमको कहेंगे। और दूसरे पत्र वे हैं जो हिंदुस्तानी भाषाओं में छपते हैं परन्तु गवर्नमेण्ट के राज प्रबन्ध पर उनके लेख का कुछ फल नहीं होता और सरकारी नौकर इन पत्रों को केवल इसी लिये देखते हैं कि कोई बात गवर्नमेण्ट की निन्दा की तो नहीं छपी है जो कि ताना और असन्तुष्टता प्रगट करती हो न कि इस लिये कि सम्पादकों के लेख पर कुछ बिचार किया जाय॥

फिर साहेब ने यह भी कहा कि हिंदुस्तान के सरकारी योरोपीयन नौकरों की तनखाह संसार में सब से अधिक है और उनके निकट थोड़े से राजकीय

पुरुषों का कलकत्ते में बैठ कर २५ करोड़ मनुष्यों पर जो कि दुनियां की संपूर्ण बस्ती के छठवें भाग हैं राज करना बहुत कठिन है । और इसी लिये साहिब की यह राय हुई कि हिंदुस्तान में कई एक स्वाधीन हाता (Presidency) कर दिए जायँ ॥

और एक यह बात जो कि साहिब ने कहा, कि अँगरेजों को हिंदुस्तानियों पर इस प्रकार से राज करना चाहिये कि जिसमें यहां की प्रजा यदि किसी समय अँगरेज लोग हिंदुस्तान का राज करना त्याग कर दें तो स्वतन्त्र राज कर सकें, ऐसा ईश्वर से हम लोगों की यही प्रार्थना है कभी न हो क्योंकि ऐसी न्यायशील और दयालु गवर्नमेण्ट की प्रजा होना अलभ्य लाभ है ॥

—o—

भारत का भावी परिणाम क्या होगा ॥

यह कौन कह सकता है कि हतभाग्य भारतवासियों के भाग्य में दुख भोगना कब तक बदा है ? सहस्र वर्ष बीते जब से पृथ्वीराज का दिल्ली के समराङ्गण में पराजय और मरण हुआ तब से भारत का सूर्य अस्त हो गया महम्मद गोरी से लार्ड क्लाइव तक केतने २ लोग केतनी बार आ आ कर अपना २ डङ्का बजा २ मन माना इन्हें लूटते मारते रहे और अपने लोह सार सम कठोर पाद प्रहार से इन्हें बराबर रौंदते रहे तौ भी भारत निवासी जीते बचे यही आश्चर्य है और इस दशा पर भी आत्म स्वत्व स्थापन निमित्त ब्रिटिश जाति के लोगों के साथ वाग् युद्ध में प्रवृत्त हैं ; पक्षपात रहित कौन ऐसा मनुष्य होगा जो इस बात को न मान लेगा कि इण्डिया इङ्गलेण्ड को अपना सर्वस्व सौंपे हुए है और हीन दीन होकर उसकी शरण में पड़ी है तौ भी यदि सोचो तो इसे इस मान हानि से क्या लाभ हुआ जो यहां के सदा के निवासी हैं वे नेटिव कहलाते हैं किसी गिनती ही में नहीं हैं चाहै वे सोने के क्यों न हो जांय उनसे इसको कुछ प्रतिष्ठा ही नहीं है यूनाइटेड स्टेट की अमरिकन कालोनी के समान यह ब्रिटिश कलोनी हुई नहीं कि यहां वाले अहल विलायतियों से इङ्गरेज होने का दावा कर सकें इसमें संदेह नहीं कि इङ्गरेजी आबादी दिन २ यहां बढ़ती जाती है पर वैसा ही जैसा कोई चिड़िया बच्चा देने के समय अपना खोंता कहीं पर बना लेती है और समय बीत जाने पर फिर चल देती है वे इस देश को अपना घर तो

समझते ही नहीं इस्से उन्हे इसपर वैसी ममता काहे को हो सकती है जैसा हम हिंदुस्तानियों को है वे केवल रुपया कमाने की नियत से आते हैं और ज्योंही खातिरखाह रुपया कमा चुके उड़ंछू हुए उन्हें क्या प्रयोजन है कि व्यर्थ अपना सिर इस बात के लिए दुखावें कि गैर मुल्क को किस तरह हुकूमत करना चाहिए और कौन सा कर लगाना चाहिए यह कहना तो बड़ा ही साहस है भला किसके मुंह में दांत है जो कह सके कि यह इण्डिया ही है जिसकी बदौलत इङ्गलैण्ड लाल गुलाल बना है और यहां वाले बेचारे तेजवीर्य्य साहस अध्यवसाय सब से रहित हो अस्तमित दशा को पहुंचे हुए हैं असिवहन का अभ्यास छोड़ केवल मसीमर्दन अब जिनका जीवन है एतने पर भी तनिक जिह्वा सञ्चालन से श्वेताङ्गों की चर्म पादुका सहन जिनका सहज स्वभाव हो गया है जिनके भ्रू विक्षेप मात्र से भूमि पर भूडोल आने की शङ्का होती थी अब इस समय द्वीपान्तर बासी बिदेशियों की चरण धूलि उनके लिए महा प्रसाद हो रही है अपमान और निरादर उनका भूषण है प्रबल पराक्रमी मुसलमान जो हस्तिनापति पृथ्वीराज के सिंहासन पर सुशोभित हो अपनी रण दुंदुभी के गम्भीर निनाद से संपूर्ण भारत भूमि को प्रतिध्वनित करते थे और अपने वीर दर्प से हिमालय से कुमारिका पर्यन्त कम्पमान कर डाला था मोगल पठान प्रभृति भिन्न२ जाति के वेही मुसलमान बारी२ दिल्ली के राज्य सिंहासन से च्युत हो हो कर विजित हिन्दुओं के साथ सम दशापन्न हो गए ब्रिटिश सिंह के प्रताप से अब जेता मुसलमान और जित हिंदुओं मे कुछ अन्तर न रह गया राजनीति के नियमानुसार दोनों एक सहानुभूति के सूत्र में बंधे हुए हैं ; भारतबासी मुसल्मानों के राज्य में अनेक कष्ट और यन्त्रणा सहा यह सत्य है परन्तु वह सब दुःख उन्हे इस विचार से कुछ भी नहीं जान पड़ता था, उनके परिश्रम का फल जो धन उपजता था वह सब यहांही रह जाता था उसका एक कण भी कहीं बाहर नही जाने पाता था उनके मन में यह निश्चय था कि एक राज्य सिंहासन छोड़ और सब बड़े २ पद उन्ही के अधिकार मे हैं दिल्लीश्वर के प्राणप्रिय सखा बीरबल वेही थे प्रधान मंत्री टोड़रमल कोई दूसरा न था सेनाधिपति मानसिंह भी

वेही थे उन्हे यह सन्तोष हो गया था कि मुसल्मान चाहे जितना यथेच्छा चरण करें चाहे कितनाही प्रजा को लूटें, तौ भी वे लोग हिंदुस्तान छोड़ कहीं और ठौर नहीं जा सकते हिंदू और मुसल्मान दोनों मिल ऐसा एक तन हो गए कि कितनो मे तो सहोदर का सा प्रेम हो गया और अनेक चाल चलन रीति व्यौहार भी दोनों को एक सी हो गई उन की अतुल संपत्ति सब यहांहीं खरच होती थी इस्से हिंदुओं का आंसू पोंछा हुआ था और पराधीन हो जाने की उन्हे कुछ आह न थी मुसल्मान बादशाह भी हिंदुस्तानही के धन से धनी मान से मानी दुखी से दुखी सुख से सुखी थे यद्यपि उनकी राजनीति और उनकी शासन प्रनाली उनका मत सब हिंदुओं के विरुद्ध था तथापि सर्व दोष नाशी उनमे एक गुण था कि वे यहांही के निवासी हो गए थे वे भी प्रजा का रुधिर शोषण करते थे किन्तु वह रुधिर भारतक्षेत्रही को उर्वरा करता था इस कारण प्रजा गण भी छाती चीर रुधिर देने को उद्यत हो जाती थीं अवके समान उन मुसल्मानों के राज्य में हम सर्वथा इस तरह पराधीन नहीं हो गए थे कि बिना गवर्नमेण्ट की आज्ञा के तनिक हिल भी नहीं सकते बहुत बातों मे हमे स्वच्छन्दता प्राप्त थी प्रत्येक जमीदार एक एक स्वाधीन राजा के समान थे हर साल बादशाह को कुछ करती उन्हे देना पड़ता था पर और सब बातों में स्वाधीन थे वे लोग अपनी फौज अलग भरती कर सकते थे, फौजदारी देवानी सब प्रकार का न्याव वे आपही कर लेते थे उनकी व्यवस्था और दण्ड विधि सब अलग २ रहती थी प्रजा पर उन्हें सब प्रकार की प्रभुता थी केवल नाम मात्र को वे बादशाह के आधीन कहलाते थे प्रजा भी स्वदेशीय राजा के आधीन रह कर अब की अपेक्षा सहस्र गुणा अधिक सुखी थी अब स्वाधीनता भाव मानो अस्त हो गया हम जिधरही दृष्टि फैलाते हैं उधरही ब्रिटेन की रुद्र मूर्ति का दरशन करते हैं बोध होता है मानो श्वेत मूर्ति भीषण आकार से धनुष बाण चढ़ाए हम पर लक्ष्य बांधे हुए हैं मुसल्मानों में सब दोषही दोष थे और इनसे सब गुणही गुण है जो जो सुख इनसे हमे मिलता है वह सब लिखना केवल कागद रङ्गना है वह सब इनका उपकार इस एक दोषके कारण मिट्टी में मिला जाता

है कि हमारी इनके साथ सहानुभूति नहीं है विदेशी विजेता के साथ विदेशी विजित का जी मिलना किसी तरह सम्भव नही है जिनका धर्म्म भिन्न भाषा भिन्न रीति नीति भिन्न खान पान अलग २ बल बुद्धि एक सी नहीं देह का रङ्ग जुदा २ उनके साथ हम हिंदुओं का जी कैसे मिल सकता है बिना जी मिले सहानुभूति नही हो सकती और बिना सहानुभूति इङ्गरेजों को हिंदुस्तान से वह प्यार नहीं हो सकता जैसा इँगलेंड के साथ है इसी से हम सोचते हैं कि भारत का भावी परिणाम क्या होगा।

बाल्मीकि रामायण

नम्बर ५ के ८ पृष्ठ के आगे से

दोहा॥

सत्य धरम सेवी निते, पुनि अति दाता सूर।
दीरघ आयु कृतज्ञ जहँ, सबै पराक्रम भूर॥
देव अतिथि पूजैं सबै, बरन निते जहँ चार।
पुत्र पौत्र अरु दार युत, सानँद बसहिं अपार॥

चौपाई।

छत्री जहँ सब द्विज अनुसारी। बैश्य रुचि कर आज्ञाकारी॥
सूद्र निरत निज कर्म्म मझारी। तीन बरन कर कर उपचारी॥
देस सकल परजा गन जाला। सुखी सुरचित जिमि मनु काला॥
बहु जोधा जेहि रच्छ महाना। पूरि सिंह गिरि गुहा समाना॥
जिन्ह कर तेज अगिन सम राजै। नहिं सहि सक जो नेक पराजै॥
करहिं सदा जे धरम लराई। जान अस्त्र बिद्या समुदाई॥
मरन काल तक जे वे लरहीं। जियत नाहिं पग पाछे धरहीं॥
पुनि तु ग बहु बिधि जहं फिरहीं। इन्द्र अश्व समता अनुसरहीं॥

दोहा।

सिंधु तीर कम्बोज तिमि, वल्हि बनायु प्रदेस।
जोय अपर अस्थान सों, उपजहिं तुरग हमेस॥

चौपाई॥

पुनि रच्छहिं बहु बिध बहु भारे । पर्व्वत इव जेहि द्विप मतवारे ॥
विंध्य हिमालय तें जे आये । अति सय बली उच्च कुल जाये ॥
महा पदुम वामन कुल के जे । अंजन ऐरावत कुल मे जे ॥
अतिही उत्तम जिन्ह कर जाती । जिन्ह कर विदित चारि जग भांती॥
एक कहावत जग मातंगा । दूजे मृग चिचित जो अंगा ॥
तीजे पुनि कहवावत मन्द्रा । तैसोइ जानहु चौथे भद्रा ॥
पुनि इन कर मिश्रित जे जाती । ते वे तहँ अगिनित बहु भांती ॥
दुइ जोजन लौं इमि सोइ धामा । सत्य अयोध्या कर निज नामा ॥
दृढ़ तोरन बहु बिधि जहँ बनेउ । अरगल युत कपाट सब लगेउ ॥
सोहहिं जहँ सुन्दर गृह पांती । जेहिं बस नर समूह बहु भांती ॥

दोहा॥

अरि नासक बल बुद्धि निधि, जहँ जिन कर सिरताज।
राज करत नभ इन्द्र सम, श्रीदशरथ नृपराज॥
सोहत नित तिन्ह बीच तिमि, सोइ नरेस दुतिमान।
गगन मध्य नक्षत्र बिच, पूरन इंदु समान॥

इति षष्ठः सर्गः। शेषभागी।

प्रयाग की वर्तमान अवस्था

हमारा प्रयाग धर्म सम्बन्ध से देखो तो तीर्थराज ही है फिर केवल हिंदू ही के मत से नहीं किन्तु मुसल्मान बादशाहों ने भी इसे स्वीकार किया है अकबर बादशाह ने इसका नाम अल्लाह आबाद रक्खा यदि उसे पक्का मुसल्मान न समझो तो औरङ्गजेब को लो इसने भी अल्लाह शब्द कायम रक्खा अल्लाह आबाद इसे कहा अर्थात परमेश्वर का बसाया हुआ; प्राची-

नता से वेद मे यहां का मरण तक बाश करना स्वर्ग और मुक्ति का कारण लिखा है; इस्से निश्चय हुआ कि विद्वान बुद्धिमान और शूर बीर लोगों के रहने का यह बड़ा प्रसिद्ध स्थान था भरद्वाज मुनि का आश्रम इस बात का एक दृष्टान्त भी देखनेमे आता है; व्यापार सम्बन्ध मे एक महानदी वाला शहर बहुत अच्छा समझा जाता है यहां तो दो बड़ी नदी और तीन रेल का सङ्गम है; प्राकृतिकता (Physically) से साधारणत: यह हिन्दुस्तान का मध्य है; राजकीय सम्बन्ध से लेफ्टिनेंट गवर्नर की राजधानी है; न्यायत: हाईकोर्ट यहां हई है एक सरस्वती यहां गुप्त थीं, सो सरविलियमम्यूर साहेब ने कालिज स्थापन कर उसे भी प्रगट कर दिया; धन संबन्ध से हिंदू मात्र को "तीरथ गए मुड़ाए सिद्ध" इस कहावत के अनुसार एक बार यहां आकर यथाशक्ति दान करनाही पड़ता है; अङ्गरेजी अदालत प्रसिद्धही है, उसका महास्थान होने से पश्चिमोत्तर का बहुत साधन यमुना की बाढ़ के समान यहां सब ओर से उमड़ा चला आता है; देश काल के अनुसार सभ्य और सुशिक्षितों का बड़ा समूह यहां इकट्ठा है इनमे बनिया महाजनों को हम नही गिनते क्योंकि वे बेचारे काहे मे हैं न तो सरकार का कानून जाने न बोली न हाकिमों का करतब न यह कि सरकार क्या करना चाहती है उसकी क्या इच्छा है वे तो एतनाही जानते हैं "पासा पड़े सो दांव हाकिम करे सो न्याव" जब किसी ने दबाया और चन्दा मांगा तो जो कुछ हो सका लिख दिया हम विशेष कर उन लोगों को कहते हैं जो सरकारी सब बातें जानते हैं ऐसे लोगों का यहां बड़ा समूह है और अब अवध के मिल जानेसे औरभी हद्धिङ्गत हो रहे हैं और २ शहरों मे तो सब लोग बस्ती की तादाद के मुताबिक रहते हैं पर यहां सभ्य और सुशीक्षितों ही की गिनती बहुत है अन पढ़ी प्रजा बिना इनकी सहायता के भला क्या कर सकती हैं वे बिना उनके गूंगी सी हो रही है तनिक भी मुह खोला चाहें तो वे रुपए पैसे से कुछ बोल नहीं सकतीं और कानून के देखने में अन्धी हैं क्योंकि न उनकी बोली मे न अक्षर मे; इस अन्धी गूंगी दशा मे यहां की प्रजा इन्हीं सभ्यों के हाथ ईद की भेड़ के गलों की तरह बिकी हैं वे चाहें उनको घास फूस खिलावें वा दाना पानी पिलावें अथवा आपही सब को खा जांय न्याय की रीति

से इन्ही सभ्यों पर सारी प्रजा का भार है तब इनको उचित है कि प्रजा के सुख दुःख का विचार करें उसमे जो सरकार के विषय की कोई बात हो वह सरकार से कहें और प्रजा की ओर की प्रजा से कहें पर यहां यह सब न कभी देखा न सुना गया कि अमुक महाशय अमुक सर्व साधारण के हित के काम मे प्रवृत्त हुए और २ शहरों मे सुशिक्षितों की गिनती यद्यपि यहां से कम है तौ भी वे लोग थोड़ी बहुत प्रजा के सुख और भलाई की चिन्ता करतेही हैं यहां चुङ्गी में डेढ़ लाख के अनुमान रुपया वसूल होता है पर इन महात्माओं के उद्योग से प्रजा का कोई हित हुआ यह कभी देखने या सुनने मे न आया सरकार अपनी ओर से जो जानती है सो करती है पर शहर वालों को किस बात की जरूरत है यह कोई नहीं कहता सड़क पर कहीं २ लाल टेन के खम्भे ती गड़े देख पड़ते हैं पर उन पर दीपक जलता है या नहीं यह किसी सभ्य को नहीं देखाता माघ मेला मे तीस या तीस हज़ार रुपया वसूल होता है किले के कोने से बांध तक सड़क बिगड़ी पड़ी है इसकी कभी किसी ने कुछ खबर न ली यहां के हाईस्कूल को दो सौ रुपए चुङ्गी से मिलते थे पार साल से अब अस्सी रह गए हैं और अब कि बार क्या होना है नहीं जान पड़ता पर किसी ने सिर न हिलाया हाकिम लोग न रात को घूमने आते हैं न सङ्गम नहा ने जाते होंगे न उनके लड़के स्कूल में पढ़ने आते हैं जिसको इस का दुःख हो उसका काम है कि सरकार से कह कर अपना दुःख निवारण करे एक्कों पर ३ सवारी से अधिक हों तो पुलिस तंग करें बीच बाज़ार में सायङ्काल के समय पक्षियों का गला दबा दबा बधिक लोगों को घृणा उपजाते पैसा कमाते हैं इसके रोकने की कभी किसी ने कुछ उपाय न की सड़क पर मांस बेचना या खाल धोना मना है पर रेल से उतरते ऐन शहर के दरवाज़े पर मछली बाज़ार है और छोटे बड़े सभी जानवर वहां टँगे रहते हैं क्यों इस्से किसी को घिन नहीं होती क्या सरकार से इस का निवेदन किया जाय तो वह न सुने; आगरे वालों ने चुङ्गी से कैलास की सड़क बनवा ली बनारस में चुङ्गी से पुस्तकालय चलता है छोटे बड़े शहरों में अनेक ऐसी ऐसी बातें लोगों के उद्योग से हो गईं यहां प्रजा के सुख चैन की कोई बात लोगों के उद्योग से न देखने में आई

यह कैसी पश्चिमोत्तर की राजधानी है जो सूनसान महा श्मसान तुल्य हो रही है इस सब के कारण यहां के सुशिक्षित और सभ्य ही हैं यदि वे मन करें तो इन सब बुराइयों का शोधन हो सकता है॥

प्रेरित ॥

सम्पादक हिन्दीप्रदीप ॥

महाशय गत मास के हिन्दीप्रदीप की पूर्ति में तहसील अतरौली ज़िलह अलीगढ़ का समाचार पढ़ कर हम को बड़ाही आश्चर्य हुआ इस कारण हम भी इसके विषय में कुछ लिखते हैं कृपा कर अपने पत्र में स्थान दीजिएगा॥

हाय हाय ऐसा अचरज यह उत्पात यह अत्याचार श्रीमती महाराणी राज राजेश्वरी के धर्मराज्य में यह अनर्थ, हा बड़ा ही सोच है क्या अलीगढ़ तहसील अतरौली में महाराणी का राज्य नहीं है जिसके राज्य में शेर बकरी एक घाट पानी पीते हैं किसी प्रबल मनुष्य का यह साहस नहीं है कि किसी निर्बल को आंख उठा कर देख सके एक नीच ख़ाक चीव भी तनिक कुछ कहने से ऐसी आंख देखाने लगता है कि अपने को चुप ही हो जाना पड़ता है समाचार पत्रों को देखिए कि निडर हो कर गवर्नमेण्ट तक को भी जो चाहते हैं लिख देते हैं एक दिन हम एक्के पर चढ़े कचहरी को जाते थे बाट में एक सरकारी सिपाही किसी एक्के वाले से एक्का ले चलने को कहता था और पैसा भी देता था और वह नहीं राज़ी होता था उस सिपाही ने हमारे एक्के वाले से कहा देखो तो सरकारी काम के लिए इस एक्के वाले से कहते हैं तौ भी नहीं ले चलता हमारे एक्के वाले ने कहा क्यों ले जाय पैसा दो तो ले जाय उस समय हमारे जी में यह बात आई कि देखो यह राजा का न्याव है कि एक नीच मनुष्य को भी एतनी स्व-च्छन्दता है कि सरकारी सिपाही का कुछ भय नहीं करता यह न्याव ही का कारण है; ऐसे के राज्य में जहां ताजी-रात हिंद आदि कानून का बर्ताव होता है जिसकी १५ वीं अध्याय का यह सा-रांश है कि जो कोई मनुष्य किसी पूजा के स्थान या किसी बस्तु को जो लोगों को किसी जथा से पवित्र समझी जाती हो नष्ट करे या हानि पहुंचावे या अप-वित्र करे कि उस्से लोगों की किसी जथा के मत की निन्दा हो या किसी जमात को जो अपने मत के अनुसार

कोई धर्म संवन्धी काम करते हों दुख पहुंचावे सोच विचार कर किसी मनुष्य के जी दुखाने की इच्छा से कोई बात कहे या कोई शब्द उच्चारण करे या आंख के सामने कोई कर्म करे उसको दोनों किसमों में से किसी किसिम की कैद की सज़ा दी जायगी जिसकी मियाद दो बर्ष तक हो सकती है या एक बर्ष या जुर्वाने की सज़ा या दोनों सज़ाएं। रिसालदार साहब को ऐसा ही करना था तो छिपा कर करते बीच चौक में उनके बलिदान करने का अभिप्राय तो केवल हिंदुओं के हृदय को दुख पहुंचाना ही मालूम पड़ता है जिनके मतमें यह महापाप है हमको आशा है कि गवर्नमेण्ट इसका पूरा न्याव करेगी यवनों के राज्य में हम हिंदुओं ने जो कुछ क्लेश उठाया वह सब इतिहास पढ़ने वालों को भली भांति प्रगट है अब ऐसे न्यायशील राजाके राज्यमें भी हम लोगों को ऐसे २ दुख हों बड़ाही सोच है॥

आप के पत्र का रसिक
देवकीनन्दन।

पदार्थ बाद

नंबर चार के १४ वें पृष्ठके आगे से।

एक बीज बोओ कुछ काल में अपने अनुकूल गरमी पाय बीज मिट्टी से अंकुरा आता है और सूरज के घाम की सहायता से वायु के द्वारा अपने वृद्धिोपयोगी द्रव्यों को ग्रहण करने लगता है कुछ दिनों में वही अंकुर एक छोटासा पेड़ हो कर अन्त को फूल फल से लद अपूर्व शोभा धारण करता है; स्फटिक की उत्पत्ति से इसकी तुलना करो तो दोनों का जन्म ठीक एक ही तरह का पाओगे स्फटिक में भी जैसा हम पहिले लिख आए हैं अनुकूल गरमी पाय पहिले अंकुर या रवे जम आते हैं धीरे धीरे वेही रवे एकट्ठे हो कर स्फटिक बन जाते हैं स्फटिक जैसा दो वा दो से अधिक द्रव्यों में से अपने निर्माण की उपयोगी वस्तु को ढूंढ़ अपने को आप ही गढ़ लेता है वृक्ष भी उसी प्रकार अनेक पदार्थों में वायु के द्वारा (Carbon) अङ्गार और (Hydrogen) जलकार आदि अपने प्रयोजन की वस्तु से अपना निर्माण आप ही कर लेता है अनेक तरह के स्फटिक का जैसा नाना प्रकार का भिन्न भिन्न आकार होता है वैसा ही वृक्ष के भी डील डौल भिन्न भिन्न तरह के होते हैं प्राणी के शरीर का भी ठीक यही हाल है वृक्ष जैसा वायु से सब ओर घिरा

हुआ हो कर वायु के द्वारा अत्यंत सूक्ष्म अणुओं से अपना शरीर पुष्ट करता है प्राणी भी इसी तरह संपूर्ण शरीर में रक्त संवाहिनी शिराओं से वेष्टित हो उसी से अपना पुष्टि साधन करते हैं और रक्त खाद्य द्रव्य से रसायनिक क्रिया केवल उत्पन्न होता है इस कारण मनुष्य को लोहू पैदा करने वाले पदार्थ अधिक भोजन करना चाहिये और मिरचा आदि रक्त शोषक तीक्ष्ण पदार्थों को त्यागना चाहिए; (Science) विज्ञान के द्वारा १९ वीं शताब्दी के योरोपीय विद्वानो ने यह सिद्ध कर दिया है कि भिन्न २ प्राणियों के शरीर बिविध प्रकार के वाष्पीय यन्त्र (Steam engine) हैं जैसा जल और अग्नि से वाष्प (Steam) उत्पन्न हो वाष्पीय यन्त्र में गति का का कारण होता है वैसा ही जो वस्तु हम खाते हैं उसका परिपाक रूप रसायनिक क्रिया (Chimical operation) से ताप की उत्पत्ति होती है और शरीर में ताप अर्थात गरमी ही के होने से हम चल फिर सकते हैं परिश्रम करने से भूंख क्यों बढ़ती है इसी से कि परिश्रम में शरीर का सञ्चालन होता है शरीर जेतना ही अधिक सञ्चालित होगा उतना ही अधिक ताप अर्थात शरीर को गरमी का शोषण होगा वह ताप रसायनिक क्रिया से उत्पन्न होता है और रसायनिक क्रिया खाद्य द्रव्य का परिपाक है सुतराम् शरीर का जेतना ही अधिक सञ्चालन होगा उतना ही खाद्य द्रव्य का अधिक परिपाक होगा जब परिपाक अधिक हुआ तो भूंख भी बढ़ेगी (व्यायाम) कसरत करना शरीर को इसी से पुष्ट करता है क्योंकि कसरत करने में शरीर का सञ्चालन बहुत होता है जो अन्न के परिपाक का मुख्य हेतु है; केवल शरीर ही के सञ्चालन से भोजन का परिपाक नहीं होता किन्तु मानसिक व्यापार से भी यह हो सकता है इस समय के डाक्तरों ने यह निश्चय किया है कि मानसिक व्यापार के द्वारा मस्तिष्क (दिमाग) में एक प्रकार का सञ्चालन होता है जिस्से ताप का शोषण हो सकता है॥

इस सब हमारे लेख का तात्पर्य्य यह है कि चेतन अचेतन और उद्भिज जो ३ प्रकार की सृष्टि हम ऊपर लिख आए हैं वह सब पदार्थों के अणु समष्टि से उत्पन्न हैं; इन तीनों प्रकार की सृष्टि में चेतन सृष्टि सबों में उत्तम है और चेतन में भी मनुष्य; अब यहां पर यह शङ्का उठती है कि ये सब पदार्थ जिन को स-

मष्टि का फल संपूर्ण सृष्टि है कहां से उत्पन्न हुए हैं और किसने उन्हें छोटेछोटे अणुओं में विभक्त कर दिया है और किसने उन अणुओं में आकर्षण वियोजन आदि की शक्ति दी है? इसका उत्तर विज्ञान के द्वारा तो हो नहीं सकता क्योंकि विज्ञान आप ही इस विषय में अन्ध के समान है; ईश्वरवादी आस्तिक झट इसका यही उत्तर देंगे कि यह सब ६० या ६५ तत्व जो विज्ञानियों ने अब तक प्रगट किए हैं संपूर्ण ईश्वर के सृजे हुए हैं यदि उनसे यह पूंछा जाय कि ईश्वर को किसने सृजा है तो इस का उत्तर वे यही देंगे कि ईश्वर स्वयंभू है किन्तु यदि मान लेने ही पर सब बात का निपटारा है और ईश्वर को स्वयंभू मान स्रष्टा का अभाव दूर किया जा सके तो हम यही क्यों न मान लें कि वे सब तत्व जिन्हें हम पदार्थ कहते हैं आप ही आप पैदा भए हैं सुतराम् पदार्थ बादियो के मत से ईश्वर का अस्तित्व स्वीकार करना युक्ति सङ्गत किसी तरह से नहीं है॥

कामकाजी बस्तु॥

मखमल या सूती कपड़ों पर से तेल का धब्बा मिटाना बहुत कठिन होता है इस लिए उस धब्बे पर थोड़ा ताड़पीन का तेल(Oil of turpentine) लगा कर एक ऊन के टुकड़े से रगड़ा जाय जब तक कि ताड़पीन का तेल सूख न जाय जो एक बेर में धब्बा न मिटे तो फिर वैसाही करना चाहिए ताड़पीन के तेल मे बड़ी दुर्गन्धि होती है इस लिए कपड़े को एक दिन हवा में रहने देने से सब दुर्गन्धि मिट जायगी।

किताब या और कोई कागज़ से तेल का धब्बा मिटाने की यह रीति है।

जिस स्थान पर कि धब्बा पड़ गया है उसको धीरे २ गरम करो और तब उस पर कई टुकड़े सोखता कागज़ (blotting paper) के उस पर रख कर दबाओ यहां तक कि सब तेल कागज सोख ले तब उस धब्बे को फिर गरम कर खौलता हुआ ताड़पीन का तेल एक ब्रुश से कागज के दोनों ओर लगा दो कई बार ऐसाही करने से धब्बा मिट जायगा सब के अन्त में कई बार के उतारने से परिष्कृत मद्य अर्थात (rectified spirit of wine) उस स्थान पर एक ब्रुश से लगा दो धब्बा बिलकुल मिट जायगा।

कागज़ पर लिखा हुआ मिटा देने का प्रकार ।

आधा छटाक म्यूरिएट आफटिन को आध पाव से कुछ अधिक पानी मे घोल कर एक ब्रुश से लिखे हुए कागज़ पर उसे पोतो जब कागज़ पर का लेख उड़ जाय तब उसको पानी से खूब धो डालना चाहिए ; यह उन लड़कों के लिए जो मोलवियों के पास पढ़ते हैं बड़ा उपकारी है क्योंकि दफ़ती जिस पर वे लिखनेका अभ्यास करते हैं और प्रकार से धोने मे खूब साफ नहीं होती ।

साबुन बनाने का एक सहज उपाय ॥

एक चीनी के या और किसी के बरतन मे आध सेर पानी गरम कर आध पाव रेंड़ी का तेल उस पानी मे छोड़ दो और दो एक टुकड़े कासटिक सोडा (caustic soda) के भी उसमे छोड़ दो और जब कि पानी खूब खौलने लगे और तेल जो पानी के ऊपर तैरता रहेगा उड़ जायगा तब एक मूठी नोन भी उसमे डाल दो इसके डालतेही साबुन पानी के ऊपर तैरने लगेगा तब उस बरतन को आग पर से उतार लो और जब ठंढा हो जाय साबुन उसमे से काढ़ लो ।

लम्प का धुआं बन्द करने की रीति ।

बत्ती को खूब तेज़ सिरके में भिंगा दो और जब बत्ती सूख जाय तो जलाने पर निर्म्मल और तेज़ रोशनी होगी ।

समाचारावली ॥

स्थानिक ॥

बड़े आनन्द की बात है कि ब्राह्मणों ने भी अब अपनी उन्नति करना चाहा यहां के मालवीय ब्राह्मणों ने धर्म संरक्षणी एक सभा स्थापन की है मुख्य प्रयोजन जिसका सर्व साधारण के हित का बिचार ब्राह्मणों की उन्नति बेद के पठन पाठन का प्रचार और आर्य धर्म की वृद्धि है प्रत्येक एकादशी को यह सभा जुड़ती है इस महीने में दो बार इस का अधिवेशन हो चुका है जिसमें ५० महाशय के लगभग उपस्थित थे बड़ी देर तक बिचार होने के उपरान्त यह निश्चय हुआ कि बिना बेद की एक शाला के अच्छी तरह से बेद का प्रचार हम लोगों में नहीं हो सकता इस लिए सब ब्राह्मणों ने मिलकर एक चन्दा किया जिस में १०) मासिक का चन्दा हो गया है और अभी बहुत से महाशय बाकी हैं जिनका दस्तखत अभी नहीं हुआ ।

२६ ता० शनिवार को दो पहर दिन से रात तक में पानी के कई अच्छे लहरे हुए आकाश अभी निर्म्मल नहीं हुआ ।

जैसी मालवियों ने हिम्मत की है वैसा ही यदि और ब्राह्मण भी कोरी दक्षिणा का भरोसा छोड़ हाथ पांव हिलाने का कुछ भी मन करें तो यह कोई क्यों कहै कि २) ब्राह्मणों ही का बिगाड़ा है।

यहां का स्टेशन मास्टर जो रिशवत के मामिले में गिरफ़ार था न जानिए कहां भाग गया अब तक कुछ उस का पता नहीं मिला पर उसी के साथी एक महाजन को ६ महीनों की कैद हुई। बुरे काम का बुरा परिणाम होता ही है।

माघ मेला प्रारम्भ हो गया पंडे,बाटिए, माली, दुकानदार आदिकों पर टिकस की भोकमभोक हो रही है मरे बेचारे यात्री जिन्हें मार्थाके सांड़पंडे जुदा हरेटैं दुकानदार अलग ही लूटें चोर, उचक्के, ऐरागी, बैरागी, वस्त्रमोचन ही करने पर मुस्तैद हैं। क्या भया जो एक कम्पनी उठ गई अभी गरीबों के गला रेतने को सैकड़ों कम्पनी गड़ी हैं।

मुखतार और वकीलों का इमतिहान २५ वीं को समाप्त हो गया।

देश देशान्तर के भक्त यहां एकत्र हुए हैं दो दिनोंसे खुसरूबाग में कुश्ती का तमाशा हो रहा है तमाशबीनों को एक रुपया आठआना चार आना टिकट का देना पड़ता है। मल्लविद्याविटम्बना।

सुनने में आया है कि अप्रैल तक सिंध पञ्जाब से मिला लिया जायगा।

अकाल हिंदुस्तान के और २ जिलों से मुंह मोर अब अवध की प्रजा का बिनाश कर रहा है।

जप[illegible] की खान प्रगट हुई है।

[illegible]न युनिवर्सिटी में अब लाटिनी और यूनानी के बदले संस्कृत [illegible] अरबी पढ़ाई जायगी। बि० बं०।

पश्चिमोत्तर और अवधके प्राय: प्रदेशों में पालापड़ने से फसल को बड़ी हानि हुई कहीं २ पानी का अब तक अभाव है और राय बरैली के जिले में तो चैती की बिलकुल आशा नही है।

जवाकी लोग इन दिनों शान्त है और अङ्गरेजी गवर्नमेंट से अब सुलह किया चाहते हैं।

महाराणी के प्रधान मन्त्रियों के पद में इन दिनों न जानिए क्यों कुछ गड़बड़ हुआ है लार्डडर्बी जो फारेनडिपार्टमेण्ट के सेक्रेटरी हैं उन्हों ने अपने काम से इस्तिफा दिया और लार्ड कारनरवन जो कलोनियल सेक्रेटरी हैं उन्हों ने भी इस्त्यफा दिया है और इनका इस्त्याफा मंजूर भी कर लिया गया। पा०

मूल्य अ[illegible] वार्षिक	...	२)
[illegible]सूल	...	।✓)
छमाही	...	१।)
डाक महसूल	...	✓)
एककापी का	...	।)

बनारस लाइट प्रेस में गोपीनाथपाठक ने हिन्दीप्रदीप के मालिकों के लिए छापा।

THE

HINDIPRADIPA.

हिन्दीप्रदीप।

——xxxx——

मासिकपत्र।

विद्या, नाटक, समाचारावली, इतिहास, परिहास, साहित्य, दर्शन, राजसम्बन्धी
इत्यादि के विषय में

हर महीने की १ ली को छपता है ॥

शुभ सरस देशसनेह पूरित प्रगट ह्वै आनंद भरै ।
बचि दुसह दुरजन बायु सों मणिदीपसम थिर नहिं टरै ॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरै ।
हिन्दीप्रदीप प्रकाशि मूरखतादि भारत तम हरै ॥

ALLAHABAD.—1st April 1878. [Vol. I. No. 8.]

प्रयाग चैत्र कृष्ण १२ सं० १९३४ [जि० १ संख्या ८]

पहिली एप्रिल।

आज भोर ही लेखनी हाथ में लिए बिचार कर रहा था कि अपने ग्राहक जनों का मन रञ्जन कोई आशय लिखूं देर तक सोचा किया पर कोई बात ध्यान में न आई जिसे अपनी लेखनी का लक्ष्य करते इसका कारण जो सोचने लगा तो याद आई कि आज एप्रिल फूल है कदाचित् इसी से मेरी बुद्धि भी भूल में पड़ी है ख्याल करते २ मुझे यह ध्यान आया कि केवल हमी इस एप्रिल फूल के सह नामी नहीं हैं किन्तु क्या राजा क्या प्रजा क्या गरीब क्या अमीर क्या तिफ्ल क्या पीर क्या नर क्या नारी क्या गृहस्थ क्या ब्रह्मचारी सभी किसी न किसी बात में फूले हैं और किस की कहैं ईश्वर

जो इस सब प्रपञ्च का करने वाला है वह भी इस इल्लत से खाली नहीं है जो ऐसी मनोहर रचना रच फिर उसका नाश कर देता है आज अकाल कल मरी रपसों जल प्लावन इत्यादि भांत भांत की पीड़ा मनुष्यों के बीच भेज सृष्टि का संहार किए डालता है बैठे बैठाए कुछ नहीं था रूम रूस के बीच एक ऐसी आग भड़का दिया कि उसी में लाखों का वारा न्यारा होगया; ऐसा ही सब लोगों में एक न एक बावलापन आ रहा है विश्वास न हो हम से एक एक का व्यौरे वार हाल सुन लो हमारे इन दिनों के प्रभु जो वुद्धि विद्या सभ्यता में हम से कहीं बढ़ कर हैं उन से यह भूल होगई जो हम लोगों को सुशिक्षित कर सब अपना भेद हमसे खोल दिया अब दूसरा बावलापन उन पर यह सवार है कि चाहते हैं कि पढ़ लिख कर भी ये वैसे ही गाउदी बने रहें जैसा पहिले थे भला यह अब किसी तरह हो सकता है हाथी के दांत निकले सो निकले और हम लोग जो प्रजा हैं उनमें यह बावलापन आ रहा है कि अभी उनकी सी योग्यता का दशांस भी हममें नहीं आया केवल तनिक सी झलक मात्र पाय अपने को भूल गए जैता और जित का सब भाव छोड़ उनकी बराबरी करने को उद्यत हैं; कङ्गाल बेचारों की भला क्या कहना उनमें तो दरिद्रता ही एक ऐसी बात है कि जिस्से हम उन्हे बेहूदा बे वकूफ बावला गाउदी जो कुछ कहैं सब ठीक है कहावत भी तो है "बने के लाला जी बिगड़े के —" इसी के विरुद्ध अमीरों में रुपया उनके पास एक ऐसी बला है कि सभी उन्हें बनाया चाहते हैं खुशामदी मुफ़्तखोरे अपना शिकार उन्हें बनावें भांड़ भगतिए उन्हे तके हैं गुणी जन अलग ही उनके जी के गांहक हैं हम उनके नाम झीखते ही हैं मूढ़ता उनके सिर पर चढ़ी नाच रही है इत्यादि; अज्ञ अज्ञही हैं; पण्डितोंके विषय में यह सिद्धान्त हो चुका है कि ये फूल्स आफ नइनटीन्थ सेंचुरी होते हैं; वुड्ढे अपने पुराने ख्याल में बावले हैं; यङ्गमैन नव शिक्षितों को विद्या का अजीर्ण हो गया है जिस्से इङ्गलिश फ़ैशन की बू उन में ऐसी समाई हुई है कि उसी में बावले होकर पुरानी सब बातों को बे वकूफी और फजूल कहते हैं; सुखी सुख में फूले पागल हैं; दुखी दुख में पच; आशिक तन इश्क में दीवाने हैं, धनी धन के उन्माद में हैं; दरिद्री दरिद्रता की टिर्र में भरा दो चिता हो रहा है;

तुह्मारे पास है तुम और पाने के लिए बावले फिरते हो; हमारे पास कुछ नहीं है हम उसीमें मस्त हैं; गवर्नमेण्टने बनारस बरेलीमें दोएक पागलखाना स्थापित किया पर यहां तो सभी उस ढङ्ग के हैं सरकार किन्हे २ उसमें भेज चङ्गा करे।

वेद

हिन्दुओं का मूल ग्रंथ और जिस पर आर्य्य जाति के लोगों का अटल विश्वास है वह वेद है यह लोक किम्वा परलोक संबन्धी जेतने हमारे काम हैं उन सबों का मूल वेदही में मिलता है और इसी का मूल लेकर और सब शास्त्र बने हैं जिन्दवस्तावाइवेल अथवा कोरान आदि जेतने प्रचलित धर्म्म ग्रंथ हैं उनमे वेद सब से प्राचीन निश्चय किया गया है इसी कारण विदेशी विद्वज्जन भी इसका परम आदर करते हैं वेद विद धातुसे निकला है जिस्का अर्थ जानना है वेद का दूसरा नाम त्रयीहै अर्थात ३ वेद ऋग् यजु साम मनु ने तीनही वेद का प्रमाण माना है पर जिस समय उपनिषदों का प्रचार हुआ तब चार वेद माने गए, प्राय: बहुत से उपनिषद अथर्वजो चौथा वेदहै उसी से निकलते हैं पुराणों के बनने के समय भी चारो वेद का प्रचार अच्छी तरह से हो गयाथा समग्र वेद दो भागमें विभक्त हैं मन्त्र और ब्राह्मण वेद की पद्य मयी रचना का नाम मन्त्रहै और गद्य रचना का नाम ब्राह्मण है जेतने मन्त्र अर्थात पद्य है, वे सब छाट कर अलग कर लिए गए हैं उसी संग्रह का नाम संहिता है ब्राह्मण में इन्ही मन्त्रोंकी व्याख्या है इसी से वह गद्य है और सम्भव है कि मन्त्र भाग के पीछे प्रचलित हुआ है। रचना लोक में प्रचलित है वैसाही वैदिक रचना के भी ३ भाग है सामवेद संपूर्ण गीत है ऋग्वेद पद्य अर्थात श्लोक बद्ध है और यजुर्वेद गद्य; अथर्व वेद का स्वतंत्र कोई लक्षण नहीं है किन्तु इन्ही तीनों में से कहीं २पर कुछ भाग लेकर इसके संग्रह करने वाले अथर्वा ऋषि के नाम से प्रचलित हुआ, मीमांसा शास्त्र के प्रवर्तक महर्षि जैमिनि वेद को नित्य और अपौरुषेय अर्थात किसी का बनाया हुआ नहीं मानते इस बात को उन्हों ने कई एक युक्तियों से सिद्ध किया है उनमें एक यह भी है वेद यदि किसी का वनाया हुआ समझा जाय तो वेदके सार्वत्रिक विषय किसी

प्रकार सत्य नहीं हो सकति. इसमें कुछ सन्देह नही कि उसका कोई २ अंश अवश्य मिथ्या होगा क्योंकि ईश्वर की सृष्टि मे आज तक कोई ऐसा नहीं हुआ जिसे किसी विषय के किसी अंश में कुछ न कुछ भ्रान्ति हो सुतराम् सकल व्यक्ति भ्रान्ति मात्र हैं भ्रान्ति व्यक्तिको घुणाक्षर न्याय से कोई २ बात किसी २ अंश में सत्य ठहरने परभी सर्वांश मे सत्य नहीं हो सकती ; जब कि शिष्टाचार के अनुसार सब लोग वेदोंक्त विषय को सर्वांश सत्यमान तदुक्त कर्मानुष्टान में अधिक विश्वास पूर्वक बड़ा क्लेश और शरीरायास सह कर परलोकमें स्वर्ग साधन को मुख्य उपाय मानते हैं तो जब वेदही भ्रान्तिमूलक और सर्वांश में सत्य न ठहरा तो संसार के सब काम फिर किस तरह चल सकते हैं तस्मात सिद्ध हुआकि वेदनित्य और अपौरुषेय है। नैयायिक लोग कहते हैं कि यह कौन सा नियम है कि वेद यदि सत्य है तो नित्यभी हो ईश्वर जो सर्वथा भ्रान्तिशून्य है सर्वज्ञ सर्वशक्तिमान करुणासिन्धु और परात्पर भी है उसी ने अपनी सर्व साधारण कृपाका प्रकाश कर सृष्टिके कल्याण निमित्त निज आज्ञा रूप वेद का निर्माण किया जिसमें सब लोग वेदोक्त मार्गपर चल अपने२ वाञ्छित को पावें और असत मार्ग पर पांव न रख घोरतर क्लेश दायक नरक मे जानेसे बचे रहें नैयायिक लोग इस प्रकार सूक्ष्मानुसन्धान कर वेद को ईश्वर रचित मानते हैं आगामि नंबर से हमारे नित्य नैमित्तिक कर्म्म की उपयोगी वेद की रिचाओं का अर्थ और उनकी समालोचना रहा करेगी।

चन्द्रसेननाटक

नम्बर पांचवें के १५ वें पृष्ट के आगे से ।

भा–(सुन कर) सच है यही सब हमारे सन्तानों की अवनति का कारण है तो चलो इसी के लिए उन्हे प्रोत्साहित करें (प्रस्थान)

तृतीयगर्भाङ्क

स्थान ।

(उदयपुर के प्रान्त भाग में उपवन एक वृक्ष के नीचे कलानाथ पड़ा सो रहा और एक अप्सरा उसके पास खड़ी है)

(अप्सरा उसके मुख की शोभा देख)

आहा किमाश्चर्य ! इसके मुख की छबि और सुन्दर आकार देख मन में यही भ्यासती है कि इसका जन्म किसीं उत्तम कुल का है इस की अवस्था भी कोई १५ वर्ष की होगी ; इस विजन

बन में यहां इसका आना कैसे हुआ (रुधिर से भीजे उसके कपड़ों को देख) इसका कपड़ा क्यों रुधिर से भींगा हुआ है? हाय किस निर्दयी ने इसको यह दुर्दशा कर डाली; हा! उस पाषाण हृदय को इसकी ललाम आकृति देख कुछ भी दया न आई; क्या संसार में ऐसे भी कठोर चित्त पड़े हैं जो ऐसों पर भी अपनी तीक्ष्ण खड्ग का प्रहार करते करुणा अथवा लज्जा मन में नहीं लाते; इसका चांद सा मुखड़ा मानो संपूर्ण बन को प्रकाशमान कर रहा है और प्रत्येक अङ्गों की द्युति सुवर्ण और चम्पक की आभा को भी तुच्छ करती है; क्या मनुष्यों में भी ईश्वर ने ऐसे रूपमान उत्पन्न किए हैं? अब तक तो मुझे यही अभिमान था कि रूप और सुन्दरता हमीं लोगों में होती है जो देव योनि हैं पर इसे देख हमारा सब घमण्ड जाता रहा॥

(नेपथ्य में शब्द के अनन्तर चित्ररथ गंधर्व का प्रवेश)

चित्र। आहा इस बन की कैसी शोभा हो रही है इन बन वृक्षों के फूलों की मीठी सुगन्धि घ्राण इन्द्री को सब ओर से सींचे देती है यहां पहुंचते ही शीतल और मन्द सुगन्ध वायु के लगने से मार्ग चलने का हमारा संपूर्ण परिश्रम दूर हो गया एक तो यह बन आप ही बड़ा रमणीक है दूसरे ऋतुराज बसन्त के आगमन से इसकी चौगुनी शोभा हो गई है; इन वृक्षों के नए नए पत्ते जो मन्द वायु के चलने से कांप रहे हैं सो मानो वृक्ष अपने शाखा रूपी हाथ से ऋतुराज को पंखा झलते हैं, जिन पर भ्रमर ठहर २ ऐसे मधुर स्वर से गूंजते हैं मानों अपने गान के तान से मधुमास को धन्यवाद देते हैं; सच है जो अपना उपकारी हो उसका सत्कार इसी रीति से करना चाहिए मधुर भाषिणी कोकिलायें जिनका अपने प्रियतम बसन्त के ८ महीनों तक वियोग था विरह बिथा के सब दुःख से मुक्त हो इसके फिर आने से निहाल हो रसाल वृक्षों की शाखाओं पर बैठी हुई अपनी कुहू नाद के व्याज से मानो ऋतुराज का यश गा रहीं हैं ठीक है प्रिय के समागम का हर्ष ऐसाही होता है; देखो कुसुमाकर के रिझाने को मधुकर अपनी सहचरी मधुकरी को साथ लिए नटनटा बन लता कुञ्जरूपी रङ्गशाला में गूंज २ नृत्य गीत का प्रस्ताव कर रहे हैं; पलास जो शिशिर के त्रास से

काला पड़ गया था अपना पिछला सब दुख भूल सुख से फूल लाल गुलाल बन गया है (घूमता है) यह स्त्री कौन खड़ी है (पास जाय) ऐं यह तो प्रमद्वरा जान पड़ती है अरे तू यहां कहां।

प्रमद०। हम तो हम तुम अपनी तो कहो तुम यहां कैसे आपड़े ऐसे भौचक्के से क्यों देख पड़ते हो, तुम्हारी चेष्टा देख जान पड़ता है कि तुमने कोई कौतुक देखा है महाभाग जो उस के कहने में अपनी कुछ हानि न समझते हो तो अवश्य कहो।

चित्र०। सुन्दरी आज हमने एक बड़ा आश्चर्य देखा है उस अद्भुत चरित्र को देख तुम भी हमारे समान आश्चर्यित होगी।

प्रमद०। तुम्हे हमारी शपथ यदि ऐसा है तो अवश्य कहिए।

चित्र०। प्रमद्वरे आज हम इन्द्रलोक से लौटे आते थे मार्ग में जब विहार देश में पहुंचे तो देखा कि एक घर के चारोओर बहुत लोग एकत्र हैं और बड़ा हुल्लड़ मचाए हुए हैं।

प्रमद०। तब क्या हुआ।

चित्र०। तब विमान वहांही ठहराय नीचे उतरा और उन्ही सब लोगों में मैं भी जा मिला, देर तक देखता भालता रहा पर कोई बात मनमें न आई अन्त को लोगों की गतागत में मैं भी एक बार उसी घर के भीतर घुस गया और एक कोने में खड़ा हो ध्यान लगा कर सब कौतुक देखने लगा॥

प्रमद०। क्या देखा महाशय आप ने।

चित्र०। उस लंबे चौड़े घर के एक ओर परम सुन्दरी एक युवती को देखा जो अपनी देह की द्युति से संपूर्ण घर को दीप शिखा समान प्रकाश कर रही है और जुत्थ के भट की भृंगी सी भयानक पशु सदृस विकटाकार लम्बी २ डाढ़ी वाले लोगों से घिरी हुई सिसियानी खड़ी है और उसी घर के दूसरे खण्ड में महा कुरूप कुबड़ा एक पुरुष है बहुत से लोग उसे चारोओर से घेरे उस का कपड़ा उतार रहे हैं और वर के पहिनने योग्य वस्त्र पहिनने के लिए उस्से हठ कर रहे हैं; वह वेचारा अपनी कूबर की ओर ध्यान कर मारे लाज के मानो पृथ्वी में गड़ा जाता था मैं देर तक यह सब वृत्तान्त देखा किया जब उस कुरूप के कूबर पर ध्यान कर यह सोचता था कि कहां यह कूबर और कहां भुवनसुन्दरी उस युवती की रूप माधुरी इसका चन्द्रमा सा मुख उस कुरूप के अत्यन्त अयोग्य समझ कभी

मुझे हँसी आती थी कभी करुणा होती थी कभी उन लोगों के दुराग्रह पर बड़ा क्रोध लगता था इस समय क्या करना उचित है बड़ी देर तक इसी हेच पेच में पड़ा रहा ॥

प्रमद० (हँस कर) हां निस्सन्देह यह एक बड़ा कौतुक है परन्तु इसमें कोई कारण होगा; जो हो अन्त को फिर क्या हुआ महाशय ? ॥

चित्र० । अन्त को उस कुबड़े ने कहा कि अच्छा तुम सब लोग चले जाओ यहां से तो हम पहिने कपड़ा; उसको यह बात सुन सब लोग वहां से चल दिए उन्हों के साथ उस घर से निकल सोचता बिचारता मैं भी चल दिया; सुन्दरी अब तुम कहो तुम्हारा यहां क्यों कर आना हुआ ॥

प्रमद० । महाशय मैं भी आज गौरी का दर्शन कर कैलाश से फिरी आती थी अचानक मेरी दृष्टि इस युवा पर पड़ी समीप आकर इसके रूप की सुन्दरताई देख बड़ी चमत्कृत हुई महाशय देखिए न जानिये किस दुष्ट ने इसे घायल कर डाला है इस पर मुझे बड़ी दया आती है जी चाहता है इसे जगाऊं और इसका सब हाल पूछूं ॥

चित्र० । सुन्दरी तुम अच्छा कहती हो चलो आज हम भी एक खिलवाड़ करें और इस बात को सचर कौतुक कर दें सुभ्रू ! वह सुन्दरी इस युवा के योग्य भी लगता है क्योंकि लिखा भी है "चकास्तियोग्येनहियोग्यसङ्गमम्" अच्छा तो इसे उठाना चाहिए (प्रमद्वरा उसे उठाती है और वह आंख मींजते उठता है)

प्रमद्० । अरे तू कौन है रे और कहां से आया है ॥

कला० (कुछ न बोला)

प्रमद्० । अरे तुझे कुछ चेत है कि किस ने यह तेरी दुर्दशा की है ॥

कला० (वैसा ही मुग्ध रहा)

प्रमद्० । महाशय जान पड़ता है मारे पीड़ा के इसे कुछ चेत नहीं है कोई ऐसी उपाय करना चाहिये जिसमें इसका शरीर स्वस्थ हो और इसे चेत आवे ॥

चित्र० । अच्छा तो तुम ठहरो हम इस बन से एक बूटी लाते हैं उसे तुम इसे सुँघा देना यह अच्छा हो जायगा ॥

प्रमद्० । जल्दी आइए महाशय इसे पीड़ा अधिक जान पड़ती है (चित्ररथ बाहर जाकर तुर्त फिर आता है) ॥

चित्र० । लो यह बूटी इसे सुँघा दो (प्र-

सहरा वैसा ही करती है और वह होश में आ जाता है)॥

प्रमद०। उठ जहां हम तुझे लेवा चलें वहां चल जो हम कहें वही करना चुप रहना तू बोलना नहीं कुछ (बिमान पर उसे चढ़ाय ले गई)॥

जवनिका पतन। द्वितीयोऽङ्कः

होली

आयो है दिन नियराय सबै भारत यश गाओ। भावी बसन्त अनन्त मनाइ के प्रेम धजा फहराओ॥ धर्म्म को रङ्ग सुरङ्ग मिलाइ के देश को क्लेश नसाओ।
लोक परलोक बनाओ॥

पीत बसन सम परम चातुरी ओढ़ि के प्रकृति बढ़ाओ। बुद्धि विवेक नवल भूषण धरि सत्व सों रूप दिखाओ॥
झूठ सब दूर बहाओ।

वाक्य सों पुष्प प्रबन्ध धूप धरि ग्रंथ सों दीप जलाओ। पढ़न पढ़ावन भोग बनाय के भारती पूजन धाओ॥
अभय बर लै घर आओ।

बर्ण विवेक प्रसाद बांटि कै जो जेहि भांति जेंवाओ। खाय अघाय दूर अवनति करि श्री नन्दन सुख पाओ॥
तबै हरि के मन भाओ।

तुम काहे को होरी खेलो तुमारी सब भूल गई। बेद पुरान को मारग छूटो कल्पित रीति लई॥ सूझो न सत्य असत्य मोह बस मति सब भांति गई। वर्ण विवेक सबै तजि दीनो औखिक नाम लई॥ अहङ्कार मन कपट जाल करि लोक फसाय लई। कहं उन्नति कहं परम चातुरी कहं आर्य्यता गई॥ चरण दलित ह्वै यवनादिक सों बल बुधि रौंद गई। आज हूं सबै तजि ज्ञान धर्म्म युत उन्नति फाग मई। श्रीनन्दन मिलि खेलो सबै अब शुभ घरि प्राप्त भई॥

होरी खेलौ कैसो होरी तनक मन चेत करोरी। जा दिन तें यह फागुन लाग्यो उमगि प्रपञ्च बढ्योरी॥ ज्ञान बूझि बिन ढङ्ग की बतियां मतिहि कुमति रंग बोरी। नचत है पथिन इथोरी॥

चाह बढ़ी जस होरी खेलन को धन खरचन को भजोरी। वैसहि जदपि नेक भारत की दुर्गति बिगति लखोरी॥
अगोधन लेहु बहोरी।

तुम भूली ऐसी होरी के बस ह्वै सकल सुकर्म्म तज्योरी। औसर पाय धाय होपन सों कञ्चन आन ठग्योरी॥
बसो अब उनके निहोरी।

करत गुमान मान नहिं तन में ऊंच नीच बरजोरी। श्री नन्दन कब चेत करोगी एक चित ह्वै चहुं ओरी॥
भूमि जिन भार धरोरी।

देशी भाषाओं के पत्रों के विषय के कानून की समालोचना ॥

इस एक् के देखने से मालूम हुआ कि एक बिल गवर्नर जेनरेल की कौंसिल से और भी पास हुई है, इस हेतु कि जो अखबार देशी भाषाओं में छपते हैं वे सरकार के बिरुद्ध बहुत होते हैं और इन अखबारों के पढ़ने वाले बहुधा गँवार और जाहिल होते हैं जिसका परिणाम यह होता है कि सरकार की ओर से उन की तबियत बहँक जाती है और ब्रिटिश गवर्नमेण्ट की लायल सबजेक् होने के एवज वे एक प्रकार के सरकार के बिरोधी हो जाते हैं इस बात के रोकने को यह एक नया कानून जारी किया गया है इसका अनुमोदन यतीन्द्र नाथ ठाकुर सरजान स्ट्रेची आदि सब कौंसिल के मेम्बरों ने किया है परन्तु इन महाशयों ने इस बिल के पास होने में जो जो युक्तियां लिखी हैं वह सब बे वजह और काटने के योग्य हैं पहिले यह उनका लिखना कि। देसी भाषा के अखबार लिखने वाले अच्छी तरह पढ़े लिखे नहीं होते। इसके कदाचित् यह माने हैं कि वे लोग एम ए, बी ए, की परीक्षा नहीं दिए रहते अथवा कोट पतलून पहिनने वाले वे लोग नहीं होते या अपनी मातृभाषा और उत्तम उत्तम पुरानी रीति नीति नहीं छोड़ देते। पढ़े लिखे से यदि मेम्बरान कौंसिल का यह मतलब है तो ठीक है। परंतु पढ़े लिखे लोगों को छान करने में यदि बुद्धि को भी कुछ अधिकार दिया जाय तो यह कुछ और ही कहती है अर्थात् पढ़े लिखे वे कहलाते हैं जो सदा सच बोलते हों उचित अनुचित न्याय अन्याय का बिचार रखते हों इमानदार धर्मिष्ट और देश हितैषी हों इतिहासों से प्रगट है कि जहां २ देश की उन्नति हुई है वहां ऐसे ही लोगों के किए से हुई है हमारे देशी भाषा के अखबारों के एडिटरों में अङ्गरेजी की चाहें वैसी योग्यता न हो पर अङ्गरेजी पढ़ने के पूर्व कथित उत्तम गुण उनमें सब होते हैं। दूसरी बात यह कि देशी भाषा के समाचार पत्र पढ़ने वाले गँवार और जाहिल होते हैं इससे भी प्रगट होता है कि मेम्बरान कौंसिल को उस समय न्याय की ओर खूब दृष्टि थी सर दिनकार राव सर सालारजङ्ग ऐसे हजारों जमाना देखे हुए लोग जो केवल देशी भाषा के अखबारों को पढ़ते हैं और अङ्गरेजी में चन्दा वाकफीयत नहीं रखते क्या जाहिलों के जुमले में वे भी

रक्खे गए? तीसरे यह कि इसमें सरकार के विरुद्ध बातें लिखी जाती हैं जिस के पढ़ने से लोगों की तबियत सरकार की ओर से बहक जाती है यह भी हमारी समझ में सयुक्तिक नहीं ठहरता। क्योंकि अङ्गरेजों के समान देशी अखबार ऐसी बे बुनियाद बात नहीं लिखने लगते बिशेष कर हम हिंदुस्तानियों के बरखिलाफ जो कोई बात होगी तो उसे राई को पर्वत कर देखाते हैं। अभी थोड़ेही दिन हुए महाराजा सेन्धिया के विषय में अङ्गरेजी अखबार लिखने वाले कैसी कैसी गप्पें हांकने लगे थे इसका किसी ने कुछ तदारुक न किया सच है आजादी तो अङ्गरेजों के पोर पोर में भरी है हम हिन्दुस्तानियों को क्या यहां तो वही बात है कि "चेरी छोड़ न होउब रानी" सरकार ही ने हमे यह स्वच्छन्दता दी थी उसी ने फिर छीन भी ली एवमस्तु इतिहासों में यह भी एक बात लिखने लायक हो गई कि अङ्गरेजी सरकार हिंदुस्तानियों को स्वच्छन्दता दे फिर उन से छीन ली; दुख के मारे कभी २ रो उठते थे और इस रोने में शोक से व्याकुल हो कभी २ जो बेहोशी की बातें मुह से बे जाने निकल जांय तो उस का दण्ड हमें न मिलना चाहिए किन्तु जो उनकी पीड़ा है वह को मिटा दी जाय तो हम क्यों न रोने पलटे हसें और ऐसे धर्मात्मा राजा को अनेक २ धन्यबाद दें; राजा का राज्य चिरस्थायी होने के लिए प्रजा का जी अपनी मूठी में कर लेना राजनीति की पहिली बात है इन्हे तो हम लोगों के साथ ऐसा बर्ताव करना था कि ये विदेशी राजा हैं इस बुद्धि का अंकुर भी हम लोगों के जी में न जमने पाता; सरकार को सब बातों का परिणाम सोच लेना चाहिए तब उसका कानून जारी करना उचित है इस बिल के ऐसी जल्दी जारी हो जाने की आवश्यकता क्या थी क्या कौंसिल वालों ने यह समझा था कि पहिले से कोई जान लेगा तो नजर लग जायगी यह तो कभी सम्भव न था कि हमारे कहने से उस में कुछ अदल बदल की जाती लइसेन्स टैक्स की बिल के बाबत हम लोगों ने बहुत सा सिर पीट क्या भुंजा लिया; लइसेन्स टैक्स जिसकी पीड़ा छोटे बड़े ऐसे कोई नहीं बचे जिन को न हुई हो उसमें तो हम लोगों की कुछ चली न सकी तो इस बिल के पास होने में हम लोगों के कहने को कौन सुनता इससे तो अधिक लोगों को कुछ पीड़ा भी नहीं पहुंची केवल उन्ही थोड़े से मनुष्यों को जो अख

बार पढ़ते लिखते हैं और जो इस विला में गँवार और जाहिल समझे गए हैं ॥

पंचों की एक उमङ्ग ।

सबजे कि तरह उगते पैरों से रूंदे हम; हम इस गर्दिशे ऐयाम से फूले न फले हम; मूड़ मुड़ातेही ओले पड़े; अब गूंगों बहिरों का खुदा हाफ़िज़; ज्योंही हमने अपनी तोतरी बोल से कुछ बोलना शुरू किया त्योंही जबान कट गई; न रहैगा बांस न बजेगी बांसरी; हाय कमबख़्ती हम तो आपही अपने सब भाइयों के पीछे रहे जाते थे वे सब कभी से सचेत हैं यहां तो सुस्ती और काहिली फाज़िज ऐसा दबाए था कि अङ्ग२ की रगें ढीली थीं हाथ पांव दोनों लुञ्ज थे उठनें की जरा ताकत बाकी न थी पुचकारते चुमकारते शायद उनमें दम आ जाता और उठने की हिम्मत बांधते सो सब उम्मेद पस्त हुई; खबरदार मुह बन्द किए रहना बोलना जरा भी नहीं बोले और मारे गए आंख फाड़ फाड़ देखो और भीतरही भीतर कुढ़ो "मनी मन गुफ्तं फाअ्‌नकर्दं" "सुर्गे दिल मत रो यहां आसू बहाना मना है" "कतु हो जाना वलेकिन तड़फना मना है" ॥ जबान कट गई जी से तो यह कहना कभी न छोड़ेंगे कि यह अन्याय और जुल्म नहीं है किस बिढ़ते पर न कहें; "अछल दे तिरिया मुसकानी किस बिढ़ते पर तत्तापानी" क्या करें स्त्राढ खेद और स्वदेशानुराग की आग के ख्याले जब उठने लगते हैं तब रहाही नहीं जाता हाय कराल काल चाण्डाल जिस डाल का अवलम्ब कर हम आगे बढ़ने का मन करते हैं वही काट दी जाती है नाटक का फाटक कभी बन्द हो गया था धन पास न ठहरा निर्बल हुई हैं चल फिर सकते नहीं जो बाहर जाकर कुछ देख भाल आवें ऐसा जकड़ लिए गए हैं कि तनिक हिल डोल नहीं सकते एक मुह अपने आधीन था सो भी बन्द हो गया "नहि बिद्या नहि बाहु बल नहि खरचन को दाम। ऐसे पतित पतङ्ग की तुम पत राखो राम" ॥ उमङ्ग पर उमङ्ग उठती आती हैं हम तो इस लेखनी की कुढङ्ग से तङ्ग आ गए एक ओर से हसेमोरो तो दूसरी उपज लेने लगती है जो सुनते हैं सो दङ्ग मान लेते हैं जो आता है इसका मुह भङ्ग कर रक्खूं पर नङ्ग होगी सरहङ्ग पना सबूत होगा ज़िल्लत उठानी पड़ेगी; खुदा खैर करे;

तो भी हमने गूंगी साधा (मुह पर हाथ मार) हए गूंगी भाए।

प्रेरित॥

जल का वर्णन नम्बर ७ के १० पृष्ट से।

शून्य अंश से लेकर चतुर्थ अंश तक सामान्य धर्म के अनुसार जल के न चलने से पृथ्वी के उन देशों को बड़ा लाभ है जहां कि गर्मी और सर्दी की अधिकता नहीं है अर्थात जहां न बहुत गर्मी पड़ती है और न बहुत सर्दी क्योंकि वहां की नदियों और झीलों का जल जम कर ऐसा सघन तुषार हो जाता जिस को कि ग्रीष्म ऋतु की गर्मी गलाने में असमर्थ होती और वे देश ध्रुव संबंधी देशों की दशा को प्राप्त हो जाते। जब जल जलरूप से श्वासरूप को प्राप्त होता है तो उससे गर्मी निकलती है और उसकी इतनी गर्मी निकाली जा सकती है कि शेष जल सघनरूप को प्राप्त हो जाता है। इस नियम के अनुसार सघन तुषार बनाने के निमित्त यत्न निर्माण किये गये हैं जिनके द्वारा बहुत सघन तुषार थोड़े दाम में बन जाता है॥

वर्षा का जल अति निर्मल होता है परन्तु यह भी मलमिश्रित हो जाता है क्योंकि वह मल जो वायु में रहता है इस से मिल जाता है और जब वर्षा का जल पृथ्वी पर गिरता है तो इससे और पृथ्वी के मल से संयोग हो जाने से इस की निर्मलता जाती रहती है॥

समुद्र के विषय में।

पृथ्वी के पृष्ट पर तीन चौथाई से कुछ कम जल है और शेष थल। वास्तव में एक ही महा समुद्र है परन्तु भूमि के दो महा खण्ड होने से इसके दो बिभाग हो गये हैं जिनको प्यासिफिक (Pacific) अर्थात शांत समुद्र और अटल्यान्टिक (Atlantic) समुद्र कहते हैं॥

शान्तसमुद्र। यह समुद्र चौड़ा है इस में बहुत बड़े और लाभकारी टापू हैं और यह घिरा हुआ नहीं है। केवल यह समुद्र पृथ्वी के आधे पृष्ट पर फैला हुआ है। इस के एक ओर अमेरिका (America) है और दूसरी ओर एशिया (Asia) और आस्ट्रेलिया (Australia) इस से छोटे २ समुद्र कम मिले हैं और इसमें भारी २ नदियां बहुत नहीं गिरती हैं। किसी २ स्थान में यह बहुत गहिरा है परन्तु अभी तक इस की गहि-

राई ठीक ठीक नहीं जांची गई है ॥

शेषआगे ।

गहौएकतासबैमिलि दहौपापसन्ताप।
रहौसदासतसङ्गमें लहौप्रेमआलाप ॥

महाशयों अब भी तो सब मिल एकता को अपने चित्त में स्थान दो प्राचीन इतिहासों के देखने से प्रगट है कि जब२ हम आर्य्य वंशियों की सङ्कष्ट दशा आई है तब २ हमारे पूर्वज जिन्हे हम बड़े आदर और हर्ष के साथ महर्षि इस नाम से पुकारते हैं सब एक मन हो अपना इष्ट साधन करते रहे इस्से अधिक अब और क्या सङ्कष्ट दशा हमारे देश और हमारे सनातन आर्य्य धर्म्म रूपी चन्द्रमा की होगी जिसके प्रकाश से वञ्चिता हो वेदमयी देववाणी कुमुदिनी भारत सरोवर से स्वेच्छाविहारी अत्याचारी यवनोंके उपद्रव के कारण उच्छिन्न हो जरमन प्रभृति देशों में अब जाकर लल हानो भारत को भारती रहित देख चञ्चला लक्ष्मी कब ठहरने वाली है इसने भी इङ्गलेंड आदि द्वीपान्तरों की राह ली उचितही है जब भारत की भारती ऐसी सती अपने काबू में न रह सकी तब स्वभावही की चञ्चल लक्ष्मी को कौन कहे अवश्यही दूसरा पति वरा चाहै लक्ष्मी को जाते देख उसकी सहेली जो मानो अपनी सखी के नाककी बार थी उसने भी लक्ष्मी के साथही यात्रा किया और उन्ही श्वेत पुरुषों में जा मिली इन तीनों की यह दुर्दशा देख और क्लीव भारत सन्तानों से अपनी रक्षा न समझ एकता भारत के खारी समुद्र में जा डूब मरी उसके साथही उद्यम साहस तेज वीर्य सब छिन्न भिन्न हो गए भ्रातृ स्नेह सहानुभूति देशानुराग की कहीं गन्ध भी न रह गई बैर और फूट के हच्च बहुतात से उग आए उर्वरा भारत भूमि को जो केशर और चन्दन की सुगन्धि से सुगन्धित थी उसे ऊखर और श्मशान तुल्य कर डाला तिस पर भी अकाल और टिकस की धौंक और चुङ्गी चारो ओर से मन मनाता रस चूस चूस इसे बनाय निःसत्व कर डाला ऐसा कि अब इसे बिलकुल उठने की सामर्थ्य बाकी न रही जिधर देखो उधर ब्रिटिश सिंह के पंजे की छाप ; नहीं जान पड़ता कि यह किस पाप और कुसंस्कार का फल है अथवा यह सब समय और दुर्दैव का कर

तब है सूर्य वही चन्द्र वही पृथ्वी वही इत्यादि यावत् प्राकृतिक पदार्थ सब वैही बने हैं एक हमी वह नहीं हैं जो पहिले थे न जानिए आर्यों का वह गौरव अब हिमालय की किस कन्दरा में जा छिपा जिन के हर एक कामों को दुर्दशा हो रही है इस दुर्दशा का बीज क्या है भारत क्षेत्र से एकता का उन्मूलन और विषमता विटप के बीज का सब ओर बो जाना जो दृढ़ मूल हो बैर फूट स्वार्थ परता आदि अनेक विषम फलों से लद रहा है जिन्हें चीख चीख हम आर्य लोग जो अमर तुल्य थे अब मृतक प्राय हो गए अब हमारे लिए वही एकता हो एक सञ्जीविनी औषधी है जो हमें फिर जिला सकती है ॥

समाचारावली ॥

ज्यों त्यों कर रूम रूस का घोर संग्राम निपटा बेचारे तुरकों को रूसियों ने खूब उलटे छूरा मूड़ा योरप के सब बादशाह हाथ पर हाथ रक्खे बैठेही रह गए किसी से कुछ न बन पड़ा कि बिचवई हो कर रूस को रूम के ऊपर मन मानता लबड़धोंधो न करने दे तो जो कुछ थोड़ा बहुत रूमियों के पास रह गया जिसे रूसी लोग न ले सके वह सब अङ्गरेजी सरकार की कृपा से क्यों कि सेवा अङ्गरेजों के रूसियों से किसी ने यह भी तो न पूछा कि तुम तुर्कों से सुलहनामे में ऐसी सख़ शरतें क्यों लिखाते हो यदि अङ्गरेज लोग न बोलते तो रूमियों का सब जङ्गी जहाज बुलगेरिया और मिसिर देश का कर भी रूसी अपने हाथ में कर लेते तो तुर्कों के पास कुछ भी न रह जाता ।

आज कल कलकत्ते में विसूचिका की बहुत अधिकाई है । बि॰ब॰

मथुरा के टीलों के खोदने में बुद्ध की एक मूरत निकली है । क॰ब॰सु॰

भगवान् बड़ा कारसाज है वह अपनी सब सृष्टि भर की फिकिर रखता है तो क्या हम अखबार वाले बेचारों की फिकिर उसे न हो ? क्यों न हो, न हो तो काम कैसे चले और हम लोगों को कागद रँगने के लिए कहां से रोज रोज एतनी सामग्री मिल जाय कई साल से देखते आते हैं कुछ दिन तक बरोदा था फिर युवराज प्रिन्स अफवेल्स आए उस के उपरान्त दिल्ली दरबार समाप्त होने नहीं पाया कि रूम रूस का राम रसरा छिड़ा गया यह जो राम राम कर किसी तरह समाप्त हुआ तो अब लाइसेन्स टैक्स और अखबारों की स्वच्छन्दता अपहारी एक् हो गया है हम लोगों को कुछ न कुछ अपना एक निराला तान गाने लिए मिल जाना चाहिए ।

यहां जो जुआ पकड़ा गया था उसके मुखिया को ३०० रुपया जुर्माना और ३ महीने के कारागार का दण्ड हुआ।

नया अन्न काट कर मंडियों में आने लगा पर १२ सेर के ऊपर गोहूं चना चावल आदि का भाव न बढ़ा; अब धान १२ सेर जो सुनते थे सो देखने में आया। लक्ष्मी सरस्वती और दुर्गा तीनों ने तो कभी से हम लोगों को छोड़ रक्खा है अब अन्नपूर्णा ने भी कदम बढ़ाना शुरू कर दिया।

यहां के अपूर्व रत्न पण्डित शिवसहाय राम शास्त्री फाल्गुण शुक्ला द्वादशी को श्री काशी में स्वर्ग वासी हुए, पुराने ढङ्ग की संस्कृत के वे एक अद्वितीय विद्वान थे और रीवा के महाराज विश्वनाथ की सभा के मुख्य पण्डित थे महाराज के बैकुण्ठ वास पाने पर पण्डित जी विरक्त हो यहां आकर चिरकाल तक वेद संन्यास ले त्रिवेणी सेवन करते रहे इसी समय इन्हों ने वाल्मीकि का एक नया तिलक बनाया और यहां के एक बणिक की सहायता से मुद्रित कराया है जिस्से उक्त महाशय की कीर्ति चिरस्थायी रहैगी उपरान्त श्री काशी नरेश के अवलम्ब से अब ये बहुधा काशी में रहा करते थे और वहां ही इन्हें गङ्गा लाभ हुआ।

मार्च की १० तारीख रविवार को श्री मुंशी हनमान प्रसाद वकील हाईकोर्ट के मकान पर हिन्दी वर्द्धनी सभा के आधीन मोरेगणेश पाठशाला के विद्यार्थियों को पारितोषिक देने के लिए एक सभा का समारम्भ किया गया जिसमें राय मक्खनलाल बहादुर सदरआला सभापति किएगए थे विद्यार्थियों को पारितोषिक देने के उपरान्त पण्डित नवल बिहारी वाजपेयी मातृ भाषा की वृद्धि के विषय में एक बड़ी उत्तम वक्तृता की जिससे सब सभासद लोग अत्यन्त प्रसन्न हुए उपरान्त सभा भङ्ग हुई इसी हिन्दीवर्द्धनी की गत मास की सभा में पूना सार्वजनिक सभा के प्रसिद्ध देशानुरागी गणेश बासुदेव जोशी पचाहृतो कचहरी स्थापित करने कला आदि के द्वारा विलायत की बनी चीजों को यहांही बनाकर व्यापार की वृद्धि करना और सब हिन्दुस्तानी समाचार पत्रों के संपादकों का ऐक मत्य होने के विषय में एक बड़ी रमणीक वक्तृता किया था गत नम्बर में स्थान न मिलने के कारण बासुदेव महाशय की वक्तृता न छप सकी॥

आज काल यहां बम्बई से पारसियों की एक नाटक कम्पनी आई है ये

REGISTERED No. 31.

नित्य नए २ नाटकों का अभिनय करते हैं जिसमें दर्शकों को बड़ी भीर जुड़ती है ॥

स्वीकृत ।

कानपूर से पाक्षिक पत्र शुभ चिन्तक का दूसरा नम्बर हमे प्राप्त हुआ एक नए बन्धु के जन्म का हमे बड़ाही हर्ष है क्या ही अच्छा होता यदि पश्चिमोत्तर के प्रत्येक नगरों से ऐसाही एक एक समाचारपत्र निकला करते इस पत्र का मूल्य केवल एक पैसा मात्र है डांक व्यय समेत बर्ष के तेरह आने हैं इस्से सस्ता समाचार पत्र अब और क्या होगा रद्दी के भाव भी न पड़ा अब भी जो हमारे देश में समाचार पत्र पढ़ने वाले अंहगी रहें तो लाचारी है।

पबलिक बिलडिङ्ग फण्ड कमेटी को सूचना। आज कल इस सार्वजनिक गृह (आर्य्य जन हाल) की ओर लोगों का चित्त खिंच रहा है जगह २ इस की चरचा होती है ट्रिव्यून भी इसका इशारा दो एक बार कर चुका है हमसे भी लोग तरह २ की बातें कहते हैं इस लिए कमेटी को उचित है कि इधर ध्यान दे और जो काम होता जाय उसको प्रसिद्ध किया करे जिसमें लोगों को कहने की जगह न रहे।

सूचना ।

जिन महाशयों ने अब तक मूल्य नहीं भेजा है उनसे ३) वार्षिक के हिसाब से लिया जायगा क्योंकि २) अग्रिम मूल्य था ॥

सूचना ॥

जो महाशय इस पत्र को न लिया चाहें वे कृपा करके हमको पत्र लिख भेजें यदि वे इस पत्र ही को लौटा देवेंगे तो कदाचित वे पत्र हम को न मिले तो वे लोग इसके ग्राहक समझे जांयगे ग्राहक लोगों से प्रार्थना है कि हिन्दीप्रदीप का मोल और इस द्रव्य सम्बन्धी पत्र नीचे लिखे हुए पते से भेजें ॥

"मैनेजर हिन्दीप्रदीप
मीरगञ्ज
इलाहाबाद ।

और लेख आदि इस नीचे लिखे हुए पते से ॥ "सम्पादक हिन्दीप्रदीप
मीरगञ्ज
इलाहाबाद"

मूल्य अग्रिम वार्षिक	...	२)
डाक महसूल	...	।✓)
छमाही	...	१।)
डाक महसूल	...	✓)
एककापी का	...	।)

बनारस लाइट प्रेस में गोपीनाथ पाठक ने हिन्दीप्रदीप के मालिकों के लिए छापा।

10/9/80

THE

HINDIPRADIPA

हिन्दीप्रदीप।

मासिकपत्र।

विद्या, नाटक, समाचारावली, इतिहास, परिहास, साहित्य, दर्शन, राजसम्बन्धी इत्यादि के विषय में

हर महीने को १ ली को छपता है ॥

शुभ सरस देशसनेह पूरित प्रगट ह्वै आनंद भरै ।
बचि दुसह दुरजन बायु सों मणिदीपसम थिर नहिं टरै ॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरै ।
हिन्दीप्रदीप प्रकाशि मूरखतादि भारत तम हरै ॥

ALLAHABAD.—1st May 1878. [Vol. I. No. 9.]

प्रयाग वैशाखकृष्ण १४ सं० १९३५ [जि० १ संख्या ९]

चेतावनी ।

ग्राहक जन यह तो निश्चय है कि बिना सुध दिलाए आप काहे को चेतेंगे वर्ष समाप्त होने पर आया पर अभी तक मूल्य भेजने की याद आप को न आई इसी चेत दिलाते हैं कि २) कृपा कर इस मास के भीतर मूल्य भेज हमें अनुग्रहीत कीजिये ॥

ऐक्ट ९ ।

इस ऐक्ट को बे सोचे समझे ऐसी जल्दी जारी कर देने से जो भूल इसमें है उसे हम नीचे प्रगट करते हैं ॥

इस ऐक्ट के सेक्शन २ के अनुसार अखबार उसे कहते हैं जिसमें खबरें छपें या खबरों की समालोचना छपे भला यदि कोई पत्र (सैनरूफ़) हाथ से लिख

कर १०० या २०० कापी निश्चित समय पर निकाला करे तो वह अखबार कह-लावेगा या नहीं यदि सरकार के विरुद्ध हम लोग कोई बात सर्व साधारण को प्रगट किया चाहेंगे तो क्या इस तौर से नहीं कर सकते तब सरकार हमारा क्या करेगी क्योंकि उसमें (प्रिण्टेड) यह शब्द है जिस के माने लोहे की टाइप का छपा हुआ अथवा पत्थर या काठ के छापे का छपा हुआ या फोटोग्राफ में छपा हुआ अखबारों के (एडिटर) स-म्पादक निडर रहें क्योंकि उनके लिए यह ऐक्ट नहीं जारी हुआ उन का इस ऐक्ट में कहीं पर ज़िकिर नहीं है उनको तभी डर है जब वे अखबार के पबलिशर भी हों अर्थात जो छाप कर प्रचलित क-रता हो इस ऐक्ट से सरकार ने जो मत-लब चाहा था वह न हुआ क्योंकि लि-खने वाले लिखेहींगे छापने वाला कोई बेवकूफ मिलो जायगा जो होगा सो छापने वाले के सिर पड़ेगो ॥

इस ऐक्ट से यही मतलब नहीं है कि केवल अखबार वाले कोई बात सरकार के विरुद्ध या किसी मत के विरुद्ध कोई बात न छापें बरन किताबें या पुस्तकें भी ऐसी न छपें। न छपेंगी नहीं सही लेखकों का रोजगार चमका क्योंकि जो कोई ऐसी बात लिखेगा और लोगों को पसन्द आवेगी तो उसकी नकलें क-रवा लेंगे क्या जो लोग नहीं किताब छपवा सकते तो क्या उन की किताब कोई पढ़ता ही नहीं सैकड़ों आदमी नकल कर लेते हैं और अपने दोस्तों को सुनाते हैं इस ऐक्ट से लिखना तो किसी बात का बन्द न होगा केवल छपेंगी नहीं देशी भाषा की ज़बान में इल्म की तरक्की होना अलबत्ता बन्द हो गया। इस ऐक्ट के इजरा होने से हमें बड़ा लाभ यह हुआ कि पादरी लोग जो सै-कड़ों किताब रामपरीक्षा धर्मतुला आदि हर साल छाप २ गँवारों के हाथ मेलों में बेंच उनसे पैसा ठगते थे वह तो बन्द हो गया भागी भूत का जो कुछ मिला वही सही ॥

अखबार वालों की बड़े हानि की दूसरी बात इसमें यह है कि जब इस ऐक्ट के विरुद्ध कोई बात पत्र में छपेगी तो ज़िले का मैजिस्ट्रेट उस अखबार के पबलिशर या प्रिंटर को लोकल गवर्नमेन्ट की आज्ञा लेकर तलब करेगा और धम-की दे देवाय उस्से एक मुचल्का लिखवा लेगा कि फिर ऐसी बात जिस में न छापे; वाह क्या न्याव है जो मैजिस्ट्रेट प्रिन्टर के लेख को बुरा समझेगा वही

मुनसिफ़ बन उसे मुचलका भी लिखवा लेगा भला ऐसा भी कभी सुनने में आया है कि जो किसी को दोष लगावे वही उसका न्याव भी करे लोकल गवर्नमेण्ट से केवल पूछना ही पूछना है परन्तु मेजिस्ट्रेट साहब के जो मन में आवेगा वही करेंगे यदि मेजिस्ट्रेट की बात को गवर्नमेण्ट नामंजूर करेगी तो मेजिस्ट्रेट साहब बिगड़ खड़े होंगे और अन्त को गवर्नमेण्ट को मेजिस्ट्रेट की खातिर करना ही पड़ेगा नहीं तो कुल सिविल सरवेण्ट एक हो कर हौरा मचाने लगेंगे और पायोनियर की गोलियां नेटिवों पर छुटना शुरू हो जायंगी ; फिर इस की अपील गवर्नर जेनरल की कौंसिल में इस वास्ते होगी कि जिस में कौंसिल वाले आर्टिकिल का मतलब मनमानता जैसा चाहैं वैसा समझ फैसला कर दें क्योंकि दूसरी कचहरियों में अपील होने से बड़ा धूम धाम मचैगा ; अच्छा तो फिर धूमधाम के लिए न्याव छोड़ दिया जाय ॥

इस ऐक्ट की एक दूसरी बात और भी ध्यान देने योग्य है कि सरकार की ओर से एक अफिसर प्रूफशीट देखने के लिए नियत किया जायगा जो आर्टिकिल उसे पसन्द न आवैगा वह न छापा जायगा अर्थात् (पबलिक ओपीनियन) सर्व साधारण की अनुमति नहीं किन्तु (गवर्नमेण्ट या ओफिशियल ओपीनियन) राजकीय पुरुषों की राय छपैगी और संसार जानेगा कि यह सर्व साधारण की अनुमति है ; अफिसर बहुत साफ हाथ का लिखा क्यों न देख लिया करें अफसरों को तो सिर्फ हाथ का लिखा पढ़ लेने का विचार किया गया और अखबार वाले का बार बार प्रूफशीट के छपवाने का खर्च देने में जो उस बेचारे का देवाला निकलेगा वह कोई बात न ठहरी इस सब का तो साफ २ यही मतलब मालूम होता है कि देश भाषा में अखबार छपना एककलम बन्द कर दिया जाय। आगामी संख्या में यदि स्थान मिलेगा तो इस ऐक्ट की समालोचना हम फिर लिखेंगे ॥

दो दूर देशी ।

पहिला—हाय हाय अब तो हम तुम दोनों का जो न मिलने के लिए एक बड़ी चौड़ी नई खाड़ी दोनों के खोद दी गई अब हम दूर घाट तो तुम और घाट एक तौर पर हम तुम दोनों का मिलना अब कहां से हो सकेगा ।

दूसरा—नहीं; हमे तुम्हारी परवाह क्या है मिलना तो समान शील का होता है हम तुम से मिलही के क्या करेंगे तृण और अग्नि का संयोग कभी निबहा है आग जब तिनके को पावेगी तभी जला डालेगी और फिर हम तुम दोनों का मेल कैसा हम तुम्हारे शिक्षा गुरु तुम हमारे चेले हम श्वेत तुम कृष्ण हम सभ्य तुम असभ्य हम जेता तुम जित हम उठे हुए मानिन्द आसमान के तुम पस्त मानिन्द ज़मीन के छि: कहां हम कहां तुम।

पहिला—भाई ऐसा न कहो ज़रा खुदा के कहर से डरो हम तुम दोनों उसी के बनाए हैं बल्कि यह तो तुम्हारी ही तालीम है कि हम सब भाई हैं क्या भया जो देह के रङ्ग और मजहब में फरक हो गया है और हमारा तुम्हारा दूसरा नाता यह भी तो जुड़ गया कि हम तुम दोनो एकही राजा की प्रजा हैं इसे ऐसा करो कि दोनों मिल जुल कर रहैं जिसमे उसका राज्य दिन २ बढ़ता जाय।

दू—उ: हम मूर्ख नहीं हैं जो अपना स्वार्थ नष्ट कर डालें तुम निपट कोरम चन्द हो एतना भी नहीं जानते "स्वार्थ भ्रंशोहिमूर्खता „ ऐसी छोटी २ बातों में खुदा के कहर से कहां तक डरा करें तुम जानते नहीं हम रोमन पालिसी के पैरोकार हैं फिर आकबत की विपत को कौन झीखे "आकबत की खुदा जाने अब तो आराम से गुज़रती है।

प—वाह तुम्हारी समझ का परिचय इसे अच्छी तरह मिल गया हम जान गए तुम निरे घोंघाबसन्त हो रैयत की खुशनूदी सलतनत के ऐसे भारी काम को तुम छोटा काम कहते हो हम तो तुम्हारीही भलाई के लिए कहते हैं तुम हम से नहीं मिलना चाहते तो न मिलो "तुम्हें गैरों से कब फ़ुरसत हम अपने गम से कब खाली। चलो अब हो चुका मिलना न हम खाली न तुम खाली"।

हिन्दुओं की बेहतरी की उपाय।

भाई हिन्दुओ कलि पुराण में तुमारी बेहतरी की बहुत उत्तम२ उपाय लिखी है. उसे यदि मानोगे तो भलाई होया न हो पर बहुत जल्द सर्वनाश होने में तो किसी तरह का सन्देह नहीं रहैगा पहिली उपाय यह है कि दुहिता के जन्म दिवस के पांचये दिन विवाह कर दिया करो ऐसा न हो कि कहीं कन्या

रजस्वला हो जाय नही तो धर्म्महीनष्ट हो जायगा और २१ पुरखा नर्क में पड़े पड़े २ चिल्लाया करेंगे, महा कृपणता से कौड़ी २ माया जोड़ो पर लड़कों के व्याह में गंजिया की गंजिया लुढ़का दिया करो इससे बड़ा नाम और यश होगा तुम से न बन पड़े महाजनों से सीखलो वे इस काम में बड़े व्युत्पन्न हैं घर के भीतर सात तह खानों में सदा बन्द रहो बाहर न निकलना बाहर निकले और जात गई दूसरी बड़ी हानि इससे यह होगी कि कहीं ऐसा न हो कि विदेशी सभ्य जनों की हवा तुम्हे लग जाय; हाथ पांव ढीला कर अदृष्टपर विश्वास किए चुप चाप बैठे रहो जिसमें पुरुषार्थ की जड़ कटी रहे क्या तुम द्वा-पान्तर वासी हो जो साहस धैर्य्य और पुरुषार्थ का आदर कर पृथ्वी के सब म-नुष्यों में विद्या सभ्यता कला शिल्प वि-ज्ञान में आगे बढ़ जाओ "नश्यशान:पत-त्यध: " इस न्याय का अनुसरण कर आंख में पट्टी बांधे सोते रहो उसे खोलना नहीं कहीं ऐसा नहो कि तुम्हे सूझने लगै और हिये की जो फूटी है सो खुल जाय। जेहालत की गठरी सिर पर से मत उतारो सो यह कुतर्ककौमुदी ग्रंथ तुम्हारे लिए तैयार किया गया है इसे पढ़ो क्योंकि अब काल बड़ा कराल आया है कहीं ऐसा न हो कि तुम्हारी दुर्बुद्धि का शोधन हो जाय तो फिर दुर्व्यसन खुदगर्ज़ी फ़जूल खर्ची बाल्य विवाह बैर फूट आदि बेचारे किसके सहारे रहेंगे कुतर्ककौमुदी सब चाहे न पढ़ो पर इसके दो सूत्र "धर्म्मकर्म्मणोलोप: " "अनाचारस्यवृद्धि: " अवश्य याद रक्खो, सम्हले रहो देखो ऐसा न हो कि औरों की देखा देखी तुम भी अवनति को दूर बहा उन्नति की सीढ़ी पर पांव रखने लगो। खुशामद इस मूल मन्त्र के जपसे कभी मुंह न मोरो काम पड़ने पर हां मे हां मिला दिया करो देश का चाहे सत्यानाश हो अपना मतलब तो खूफ़ न होने पावेगा। कुछ थोड़ी सी बातें बिलायती सभ्यता की भी सीख रक्खो पड़ी रहेगी तो जून पर तुम्हारे बड़े काम आवेगी पहली बात यह है कि खान पान का विचार बिलकुल मन से ढीला कर डालो याती आठ कनौजिए नौ चूल्हे रहे नहीं तो सर्वभची हुताश:। यह मत समझो कि सब सिद्धि हुक्केही में है नए फ़ैशन के अनुसार चुरट भी तो सभ्यता का सार है। सो खुशी मनाओ भांग अफ़यून और मदक के सेवा ब्रांडी और शाम्पेन भी तुम्हारे

भाग में चल निकली है। इन सबों का अभ्यास कर प्रतिष्ठा पत्र प्राप्त कर लोगे तो हम कलि पुराण की दूसरी अध्याय भी सुनावेंगे ।

सर्वंत्यक्काहरिंभजेत् ।

सब तज हरि भज यह कहावत बहुत ही ठीक है क्योंकि कोई काम करने लगो एक न एक बाधा आगे खड़ी रहती है पर भगवद्भजन सब अवस्था में निर्दोष और बाधा रहित रहता है यदि प्रत्यक्ष में कोई उपाधि खड़ी भी हो गई तो सच्चे भगवद्भक्त के भजन में उससे कुछ बाधा नहीं उपज सक्ती और न भजन का गुण कभी नष्ट हो सक्ता है बरन भजन करते २ अवगुणी और मलिन जीव भी धर्मात्मा और साधु हो जाते हैं जैसा गीता में श्रीभगवान ने अर्जुन से कहा है "क्षिप्रम्भवतिधर्मात्मा सश्वच्छान्तिंनियच्छति। कौन्तेयप्रतिजानीहि नमेभक्तःप्रणश्यति" शास्त्रकारों ने अपनी २ बुद्धि के अनुसार ऐसे २ अनेक भजन के माहात्म्य लिखे हैं और हम अखबार वालों के लिए तो नए ऐक्ृ के अनुसार सब ओर से निरास कर दिए गए सेवा करि भजन के अब रह क्या गया है अच्छा चलो इसी पंथा का अनुसरण करें आश्चर्य नहीं कदाचित करुणा निधान जगदीश्वर हमारा आर्तनाद सुन अपनी भक्तवत्सलता हम पर प्रगट करें॥

भजन ॥

जय जय जय करुणा कर माधव अशरण शरण मुरारी। पतित पतङ्ग हीन गति पति को तुम प्रभु झटिति उबारी॥

बेद छेद टारन के कारन मच्छ सुभग तन धारी। ह्वै बराह कनकाक्ष असुर पति बसुधहि त्वरित उबारी। कच्छप बपु बिशाल करि जग सब निज सुपीठ पर धारी॥ हरनाकशिपु बिदारक नरहरि भक्त प्रणत दुख टारी। बलि छलि प्रगटि अलौकिक लीला सुर गण बिपति निवारी॥ भृगुपति गहि कराल शस्त्रन कहं मलिन क्षत्र संहारी। रघुकुल तिलक बिप्र श्रुति पालक हत दशमुख मद भारी॥ बसुधा भार निवारक यदुकुल हलधर कृष्ण बिहारी। करुणा सिंधु असुर सम्मोहन बुद्ध रूप अनुसारी॥ गो द्विज त्रासक दुष्ट दमन लगि ह्वै हो फिरि असिधारी। द्रुपद सुता गज आरति मोचन लखि बिभु रीति तिहारी॥ भारत आरत शरण पुकारत धावहु बेगि खरारी॥

धन वृन्दावन धन बंशीबट। रूप उजागर सब सुख सागर छबि आगर बिहरत नागर नट। धन गोगी आपी श्रीहरि रस चित चोपी रीकी अति दुर्घट; लोक लाज कुल कान न तोड़ी तोड़ी निगम निगड़ तिनुका षट ॥ पिय हिय पायन रूपनि कुञ्जन की चख भख भपन तपन तनया तट; परखीं निपट निपट ही परखीं सरखी नहिं हरखीं जो हरे पट। गावत गावत पार न पावत जाको बश दश आठ चारि खट; युगल जाहि शिव धरत समाधा ताहि लगी राधा २ रट॥

जय जगदीश परेशपरात्पर शमन दमन मदनारे। जटा जूट पुट बद्ध समुद्धतरय सुर तटिनी वारे। भूति बिभूषित भोगि विराजित दुस्तर भव संसारे। भक्तजनाश्रय दीन दया मय कुरु करुणां त्रिपुरारे॥

काम क्रोध तजि हरि भजो यही जगत को सार। पार जाहु भवसिंधु के राधारवन निहार॥

शिवा जी महरठे का जीवन चरित्र।

हमारे पाठकों में ऐसे एक पुरुष का चरित्र पढ़ने की किस की रुचि न होगी जो अपूर्व रण पण्डित होगया है और जो इस टूटी दशा में भी हिंदुओं के प्राचीन गौरव का एक दृष्टान्त हो गया जिस ने दुर्दान्त यवनों का दमन कर दक्षिण के दूर देशों तक अपनी बिजय पताका का खम्भ गाड़ दिया और जिसने केवल अपनी कुशल बुद्धि और बाहु बल से समस्त महाराष्ट्र मही मण्डल का मुसल्मानों के हाथ से उद्धार कर एक नवीन राज्य स्थापन किया; यह असम साहसी महाबली और प्रतापी पुरुष शिवा जी था॥

शिवा जी के जन्म के कुछ दिन पहिले दक्षिण तीन मुसल्मानी राज्यों में बँट गया था और इन तीनों राज्यों में तीन जुदा जुदा मुसल्मान बादशाह राज करते थे; एक की राजधानी बीजापुर दूसरे की अहमदनगर और तीसरे की गोलकुण्डा थी और इन्ही ३ नामों से वे बिख्यात भी थे। महाराष्ट्र देश जिस की सीमा शास्त्र के अनुसार वर्दा नदी से समुद्र तक पूरब पच्छिम और सतपुरा पहाड़ी से गोआ नगर तक उत्तर दखिन है इन्ही राज्यों में थी; यह संपूर्ण प्रदेश पर्वत मय है जो समुद्र से चार या पांच सहस्र फुट ऊंचा है यहां के निवासी बड़े कुरूप कृष्ण वर्ण और ह्रस्वकाय होते हैं जो कि सुरूपवान और सुडौल राजपूतों और सिक्खों के लंबे डील से अत्यन्त विरुद्ध है तौ भी शारीरिक बल युद्धोत्साह चालाकी और परिश्रम में उन से कम नहीं हैं; ईसवी सन की सोलहवी

शताब्दी के सैकड़ों वर्ष पहिले तक ये महराठे इन्ही राज्यों में केवल पटवारगीरी या दूसरे इसी प्रकार के लिखने पढ़ने के कामों से अपनी जीविका किया करते थे और महराठों के कुलीन घराने अपना पता भी बीजापुर या अहमद नगर इन्ही दो राज्यों में से एक को देते हैं जब कि वे इन बादशाहों से किसी मुल्की या जङ्गी ओहदे पर नियत किए गए थे जिनकी ओर से कितने महराठों को जागीर और भांत भांत की पदवी मिली थी जिस में कि इन के आपस के झगड़े लड़ाइयों में वे अपनी अपनी जथा साथ ले आ कर इनकी सहायता किया करें; १६ वी शताब्दी के अन्त में सात महराठे छोटे राजा या सरदार बीजापुर की सेना में गिने जाते थे और दो अहमद नगर की सेना में; इस प्रकार वे जो पहिले निरे पटवारी या खेतिहर थे धीरे धीरे शस्त्रधारियों का एक समूह हो गया जिन में क्षत्रियत्व के वीरता की उमङ्ग भी दिन दूनी रात चौगुनी होती गई और उस उमङ्ग की पूर्णता का अधिकारी यही शिवा जी हुआ॥

मल्लोजी भोंसले जो अहमद नगर की अश्वारोही सेना में एक प्रसिद्ध घोड़ सवार था उसकी स्त्री बहुत दिनों तक निस्सन्तान होने के कारण उस देश के किसी महश्रूरी पीर शाहशेफर की दरगाह में पुत्र होने के लिए कुछ मन्नत माना था इस कारण लड़का पैदा होने पर उसी पीर की यादगारी में अपने पुत्र का नाम शाहजी रक्खा। शाहजी सन ईसवी १५९४ में पैदा हुआ था यद्यपि मल्लोजी अपने जन्म का पता चित्तौर के सूर्यवंशी राजाओं के कुल का देता था परन्तु यादोराव के एक कुलीन महराठा की कन्या से जब उसने अपने पुत्र शाहजी का विवाह करना चाहा तब यादोराव ने इसे नीच समझ पहिले अङ्गीकार न किया पीछे से जब मल्लोजी को अहमद नगर से पूना और सोपा में कुछ जागीर मिली और इस की पूर्वदशा में बहुत कुछ परिवर्तन हो गया तब यादोराव ने अपनी कन्या इसके पुत्र शाहजी के साथ व्याहने में कुछ आगा पीछा न किया १६२० में मल्लोजी के मरजाने पर उसकी सब जागीर और धन शाहजी के अधिकार में आई अब उसने अपनी स्वच्छन्द सेना भरती करना प्रारम्भ किया और क्रम २ राजनीति के छल बल से अपने पुत्र शिवाजी के जन्म समय १६२८ में यह सम्पूर्ण पूना की जागीर और एक बड़ी अश्वारोही सेना का स्वामी हो गया था।

सन १६२७ मे शाहजी के शिवाजी उत्पन्न हुआ जिसे हिन्दी के प्रसिद्ध कविभूषण ने अपनी कविताओं मे शिवराज इस नाम से विख्यात किया है। २ वर्ष के उपरान्त दूसरा विवाह करने पर शाहजी ने दादाजी पंथ को उसका शिक्षक और रक्षक नियत कर उसे उसकी मा समेत पूना मे रहने के लिए भेज दिया; दादाजी पंथ ने पूना की थोड़ी सी जागीरों का जो शाहजी ने उसके आधीन कर दिया था बड़ी चौकसी और ईमानदारी से इन्तिजाम किया उस जागीर का जो कुछ उचित देन पौत था बराबर साल ब साल भेजता रहा और अपने परिमित व्यय के कारण कुछ थोड़ा २ रुपया हर साल पूना में भी जमा करता गया देश और काल के अनुसार अपने भरसक वह शिवा जी को पढ़ाने लिखाने के यत्न से भी न चूका पर पढ़ना लिखना भली भांत तो शिवा जी को न आया तीर तलवार और दूसरे शस्त्र जो उस समय के उन पहाड़ी देशों के लोगों में प्रचलित थे उनके चलाने की विद्या में अलबत्ता वह बड़ा प्रखर हुआ घोड़े की सवारी और और सिपाहियाने की बातें उसने खूब अच्छी तरह से सीखा। उसका शिक्षक दादा जी उसे गो ब्राह्मण की भक्ति और देवपूजन आदि मत सम्बन्धी बातों के सिखाने से भी न मुह न मोड़ा ऐसा कि अन्त को वह बड़ा पक्का हिंदू और मुसल्मानों का दिली दुशमन हुआ; महाभारत और रामायण के युद्ध के इतिहासों को नित्य २ पढ़ते सुनते बीरता और युद्धोत्साह भी उस में दिन दूना रात चौगुना बढ़ता गया॥ शेषभागे।

चन्द्रसेननाटक

संख्या ८ के ८ पृष्ट से।

तृतीय अङ्क। प्रथम गर्भाङ्क। स्थान। बिहार देश मे वही घर जहां मदनलतिका के विवाह का उपक्रम हो रहा था।

कुबड़ा कपड़ा पहिन रहा है दर्पण मे अपना मुह देख।

कु—क्या भया जो मै कुबड़ा हूं पर सुन्दरताई मे तो किसी से कम नहीं हूं कूवर से जो सुन्दरताई मे कुछ हीनताई होती तो नल कूबर क्यों सुरुप वालो मे मुखिया समझे जाते रम्भा अपसरा जान पड़ता है केवल उनके कूबर पर मोहित हो उन्हे बरा था; और जो कूबर कोई दोष भी समझा जाय तो एक दोष हमारी सब सुन्दरताई नहीं बिगाड़ सकता किसी कबिने यह अच्छा कहा है "एक दोष के रहे तें नहिं

बहु गुण को हानि। जैसे चन्द्र कलङ्क युत पे जग सुख की खानि" । (दर्पण मे फिर मुह देख) वाह हमारे ये आगी के दो दांत शूकरावतार भगवान् वाराह जी का अनुकरण करते हैं और ये सूपसे कान गौरी पुत्र गजानन गनेस जो का; वाह धन्य हैं हम ऐसे कान याती कुम्भकर्ण के थे या इस समय अब हमारे ही हैं हाहाहा (हंसता है) देखो यह हमारा माथा कैसा ऊंचा है हम बड़े भाग्यवान हैं अजी भाग्यवान न होते तो यह परमसुन्दरी नारी हमे कैसे मिलती रहा कूबर सो इस्से क्या होता है मर्दई में तो हम कम नहीं हैं अलाउद्दीन की भगवान बढ़ती किए रहे देखा जायगा कुवांरपन तो मिटा जाता है बड़ी बात भला हम गृहस्थ तो भए व्याह करते हैं लड़के वाले हो होंगे सुलतान की कृपा हम पर हुई है धन की हमे कुछ कमती न रहैगी शाही दर्बार के अमीरों में अब हमारी गिनती भी होगी वादशाह तक हमारी रसाई हो जाने के लिए यह मदन कलिका मौजूदही है फिर क्या चैन है सच है एक दिन घूरेके भी दिन फिरते हैं हमतो आदमीही हैं क्या कुबड़े हुए तो बह गए (नेपथ्य में कोलाहल का शब्द सुन आश्चर्य से) हां यह क्या ?

(अमहदरा चित्ररथ कलानाथ का प्रवेश)

चित्ररथ (कुबड़े को लात मार) हट यहां से व्याह करने चला है तेरे मुंह लायक वह सुन्दरी है।

कु० हाय रे मरा रे मरा (चिल्लाता हुआ भागकर एक कोने में जा लुकता है)

चित्ररथ कलानाथ का पुराना कपड़ा उतार विवाह का वस्त्र उसे पहिनाय सब लोगों की भीड़ में उसे कर वे दोनों चले जाते हैं (भीड़ के लोग उसे देख) पहिन आया कपड़ा क्या करता था अवतक बड़ी देर किया तूने चल जल्दी से (सब लोग उसे वही कुबड़ा जान विवाह के लिए ले गए)

दूसरा गर्भाङ्क । (स्थान)

उसी घर का वहिर्भाग। अलाउद्दीन के दो सर्दार तुराब खां और मौजूखां का प्रवेश। तुराब० मौजू खां ।

मौजू० जी जनाब ।

तु० जो हम चाहते थे वह तो हो गया है और उन दोनों की न सिर्फ शादी ही करा दी गई बल्कि वे दोनों हम बिस्तर भी कर दिए गए अब इन्द्रमणि क्या कर सकता है तो अब कैद से उस की मुखलसी कर देना चाहिए शायद अब भी मान जाय तो क्यों शाह को उस्से नाराज रक्खें ॥

मौजू० जो आप बजा फरमाती हैं ।

तु० अच्छा तो चलो उसे छोड़दें (दोनो गए)

चित्ररथ और प्रमद्वरा का प्रवेश ।

चि० (मुसकिराकर) प्रमद्वरे हम दोनों का वह यत्न तो सफल हो गया पर यदि पृथ्वी के कीड़े इन मर्त्य जाति के लोगों को अभी और ज्ञान देना हो तो एक काम और करना चाहिए (हंसकर) परन्तु ये लोग खूब छके अच्छा भया ये सब बड़े दुष्ट होते हैं ये अपनी बुद्धि और पुरुषार्थ के सामने हम लोगों को कुछ मालही नहीं सम झते यह नहीं जानते कि हम लोग देव योनि हैं अणिमादि सिद्धि सदा हमारे हाथ में रहती है हम लोग अ-मर हैं मरने को भय हमे छूई न है फिर क्या जो चाहे सो कर डालें किन्तु भाई इन लोगों को अभीं और छका ना चाहिए । शेषआगे ।

प्रेरित ॥

भोजन पदार्थ ।

संख्या ५ पृष्ट १० से ॥

गरमी शरीर में किस प्रकार से उत्पन्न होती है इसका वर्णन हो चुका है अब कौन सी वस्तु खाने से और किस प्रकार से मांस शरीर का बढ़ता है और इस के बढ़ाने को क्या आवश्यकता है इन सब का वर्णन किया जाता है ॥

मांस में नैट्रोजन (notrogen) रहता है और जिन वस्तुओं में यह तत्व पाया जाय उन्हीं वस्तुओं के खाने से शरीर में मांस बढ़ सकेगा ॥

शाकज (vegitable foot) अथवा वृक्षादि से निकले हुए खाने की चीजें जैसे गोहूं जव आदि में तीन वस्तु रहती हैं और यही तीनों जीवों के मांस में भी पाई जाती हैं । इन तीनों को अंगरेज़ी ज़बान में आलबुमिन (albumen) फाइबरिन (fibrin) और केसियन (casien) कहते हैं । और ये सब दो प्रकार के प्राणिज और शाकज होते हैं ॥

आलबूमिन को ठीक वही चीज़ समझना चाहिये कि जिस को अण्डों की फोकलाई बनी होती है परन्तु यह और भी चीजों में पाया जाता है जैसे आलू में भेद दोनों में केवल नाम का है एक तो प्राणिज अलबुमिन (animal albumen) है और दूसरा शाकज आलबुमिन (vegitable abumen) है ॥

फाइबरिन खूब धोये हुये मांस को समझना चाहिये यह सघन (solid form) अवस्था में तो मांस के सदृश होता है

परन्तु जल रूप (biquidform) में यह रुधिर में पाया जाता है । और ठीक यही चीज गोश्त में भी है । आलबूमिन के तरह एक प्राणिज और दूसरा शाकज फाइबरिन है ॥

केसियन ठीक वही चीज जानना चाहिये जो कि दूध फाड़ने पर खोये की तरह अलग हो जाता है और यही वस्तु मटर में भी पाई जाती है । इसमें भी प्राणिज और शाकज का भेद है ॥

आलबुमिन, फाइबरिन और केसियन में आपुस में लगभग कुछ भेद नहीं है बल्कि एक दूसरी की सुरत में बदल भी जा सकता है जैसे कि दूध पीने से उस में की केसियन पेट में बदल कर अलबुमिन और फाइबरिन हो जाता है अर्थात मांस हो जाता है । इसी प्रकार से इन तीनों में से जो कोई वस्तु खाई जाती है वह शरीर के भीतर बदल कर प्राणिज आलबुमिन हो जाती है और ज्यों २ रुधिर शरीर के भीतर घूमता है त्यों २ यह आलबुमिन फाइबरिन होता जाता है ॥

इस लिये रुधिर को जब अणुवीक्षण यन्त्र (microscope) से देखो तो उसमें छोटे २ पिण्ड देख पड़ते हैं यही फाइबरिन है ॥

हम यह सर्वदा देखते हैं कि जीव मात्र अपना कलेवर बदलते हैं जैसे सर्पादि केंचुल छोड़ते हैं पक्षी आदि भी पर गिराते हैं और सब जानवर भी अनेक २ प्रकार से कलेवर बदलते हैं इसी तौर से शरीर के भीतर क्षण २ में मांस के परमाणु नष्ट होते रहते हैं और नये २ बना करते हैं ।

जो मनुष्य कि दिन भर श्रम करता है उसके शरीर के भीतर नष्ट होने का हिस्सा उस मनुष्य से जो कि कुछ परिश्रम नहीं करता तीनगुना अधिक होता है परिश्रम से हमारा अर्थ शारीरिक और मानसिक श्रम दोनों है ॥

श्रम करने के उपरान्त सुसती मालूम पड़ती है और यदि कोई पहिले और फिर श्रम के उपरान्त तौला जाय तो श्रम के उपरान्त यह मनुष्य तौल में कम ठहरैगा ऐसा देखने में आया है कि जो मनुष्य लोहे के भट्ठियों के आंच के सामने काम करते हैं और लोहे का काम करने में जिनको परिश्रम भी अधिक पड़ता है वे मनुष्य एक घण्टे में ढाई सेर तौल में घट जाते हैं । इतना तौलमें घट जाने का कारण पसीना निकलना मुंह से

श्वास के साथ कीयले का निकलना और शरीर के भीतर मांस के परमाणु का नष्ट हो जाना है। जहां२ के यह परमाणु नष्ट हो जाते हैं वहां २ छिद्र हो जाता है और जब नए २ परमाणु रुधिर के साथ आते हैं तो यह छिद्र बन्द हो जाते हैं दिन भर शरीर का नष्ट होना जारी रहता है और जब प्राणी आराम से रात को सोते हैं तब नया परमाणु का बनना जारी रहता है। इस लिए जब सोने का कम समय मिलता है और परिश्रम अधिक करना पड़ता है तब नष्ट होने का हिस्सा नए बनने के हिस्से से अधिक हो जाता है तो शरीर दुर्बल हो जाती है और अन्त को नाश हो जाती है इस लिए शरीर में मांस बढ़ाना आवश्यक है और यह मांस बढ़ाने वाले पदार्थों के खाने से प्राप्त हो सकता है।

शेषआगे ।

एक तर्क ।

चने रहे तब दांत न थे दांत हुए तो चने नहीं हैं ।

जब रुपया पास था तब समझ न थी वैभवोन्माद में उन्मत्त थे यह जानते ही न थे कि किस तरह इसे खर्च करें, भांत भांत की फजूल खर्चियों में उसे मनमानता खूब उड़ाया पुड़ाया यहां तक अपव्यय करते रहे कि लक्ष्मी को लातों मार भगाया ; अब जो समझ हुई है कि धन पास हो तो अनेक देश की भलाई के ऐसे काम किए जांय कि जिस के न होने से हमारा सर्वनाश हो रहा है तो कुछ है नहीं; जब पास पूंजी थी तब नित की लूट मार राज बेराजी से उसकी रखवाली करने वाला कोई न रहा जब अङ्गरेजी राज्य की छाया में सब ओर से आराम और किसी तरह की बाधा नहीं है तो पास सांग धोंधी नहीं ठुकती जब तक हम लोग भली भांति पढ़े लिखे न थे तब यह कहने को था कि तुम लोग इस लायक तो हो सरकार को कोई उजुर तुम्हारी तरक्की करने में नहीं है अब जो हम लोगों में बहुतेरों ने योग्यता प्राप्त कर ली तो हजूर वाइसराय साहब अपनी स्पीच में फरमाते हैं कि एज्युकेशन इस लिए सिर्फ नहीं दिया गया कि पढ़ लिख सबके सब केवल नौकरीही की खोज करें और न पाकर सरकार को बदनामी दें ; जब कोई कहने सुनने और हाथ पकड़ने वाला न था तब मारे डर और शङ्का के कुछ बोल नहीं सकते थे अब जो बोलते

को हिम्मत बांधा तो मुह बन्द कर दिया पढ़ लिख कर फावड़ा भांजने से रहे समझे थे चलो सरकार के यहां जीविका नहीं मिलती नहो सही लेखनी के बल भांति भांतिकी पुस्तक और किताबें रच रसिक जनों को प्रसन्न कर उसी से जिन्दगी काटेंगे सो भी न रहा ; अब यह कहने को है कि क्यों जात पांत का कैद लिए बैठे हो दूर देशों में जहाज के द्वारा जाकर तुम भी सौदागरी से खूब धन क्यों नहीं कमाते कोई तुम्हे मने किए है तुम तो आप अपने कर्म से दरिद्र बने हो सो यह भी हम हाल हाल तो तुम पात पात पछिले तो धनही एतना पास नहीं है माना कि किसी तरह मिल जुलकर धन एतना सञ्चय कर लेंगे तो कोई ऐसा पचचड़ लगा दिया जायगा कि उभड़ने न पावेंगे अन्त को इसी वही कौड़ी के तीन तीन होना हैं सो होंगे ।

समाचारावली॥

तीर्थ स्थान का अनादर।

हमको प्रमाणिक वृत्तान्त के द्वारा विदित हुआ है कि यहां दशाश्वमेध से ले कर त्रिवेणी सङ्गम आदि मुख्य तीर्थ स्थानों में मछुओं ने बड़ा उपद्रव मचा रखा है विशेष कर ऐन त्रिवेणी सङ्गम पर और धर्मशील जनों के स्नान दान के समय जिस्से उन धर्म शील जनों को उन के तीर्थस्थान में यह हिंसा कर्म के कारण महाग्लानि और जी में क्लेश उपजाता है

इस महा तीर्थ में ऐसा अन्याय और तीर्थ का अपमान कभी नहीं हुआ क्षेत्र में रहने वाले साधु सन्त इस अन्याय से दुःखी हो और उन मछुओं को इसका कुछ दण्ड देने में बिवस हो हो एक ने मारे ग्लानि के अन्न छोड़ दिया है एक बार किसी इन्सपेक्टर पुलिस ने मछुओं को मना भी किया पर उन दुष्टों ने नहीं माना आशा है कि हमारी दयालु गवर्नमेण्ट जो न्याय करने का बाना बांधे है हिन्दू प्रजा का जी दुखाने वाले इस चाण्डाल कर्म के दूर करने को शीघ्र उपाय करेगी क्योंकि सरकार के कानूनों का यह मुख्य उद्देश है कि किसी समुदाय के मत को कोई दुःख न देने पावे ।

हा टेक्स तेरी भयङ्कर सूरत ने सूरत नगर में अशुभ महूरत प्रगट किया। पर किया क्यों न करे उत्पात केतुग्रह का उदय कभी व्यर्थ हुआ है खैर तीन ही चार हिन्दुस्तानियों के बलिदान से इस को शान्ति हो जाय तौ भी हम गनीमत समझें ।

कलकत्ते के दो समाचार पत्र सुलभ समाचार और सहचर दोनों नए एक्ट के आहार हो गए; सुनते हैं अवध पञ्च पर भी इसका प्रहार होनहार है प्रदीप तूं देखता है कि तार कुतार लग रहा है कड़ाई को छोड़ क्यों नहीं सुधाई पकड़ता।

गत वर्ष के इजाफा और लगान के नए बन्दोबस्त में २०७२८५ रु० बढ़ती की गई यह बन्दोबस्त मुरादाबाद मथुरा और आगरा की केवल ७ तहसीलियों में किया गया।

इस साल पश्चिमोत्तर के जिलों में ५७४२४१२५ रु० आमदनी हुई और १८८८००२३ खर्च हुआ।

नैपाल के मुख्य आमात्य महाराजा रणदीप सिंह राणा बहादुर का इन दिनों शिक्षाविभाग पर बहुत कुछ ध्यान है इनका इरादा है कि नैपाल की राजधानी काटमांडू में एक कालेज स्थापित करें जिसमें से कलकत्ता के विश्व विद्यालय की परीक्षा के लिए प्रति वर्ष छात्र आया करें। धन्य है नैपाल की प्रजा जिनको ऐसा देशोपकारी आमात्य मिला है हमारे इन प्रान्तों के अमीर और राजाओं को ऐसी २ बातें काहे को कभी सूझैगी उन्हे अपने देहाराम और पूजा पाठ से एतनी फ़ुरसत कहां जो इन बातों पर गौर करें वे जो इन बातों को करने लगें तो दस हजार गुरिया का माला कौन जपे।

भावनगर के ठाकुर ने एक लाख रुपया काठियावाल राजकुमार कालेज को दान दिया है।

रावलपिण्डी में दुर्भिक्ष से लोगों को बड़ी पीड़ा है।

विएरा में पानी का काल हो रहा है कूआं सब सूख गई हैं बर्षा जल्दी जो शुरू न हुई तो वहां के निवासी मारे प्यास के मर जायगी। इं० डि०

हिन्दुस्तान से कई एक पलटनों को माल्टा द्वीप में जाने की आज्ञा हुई है बड़े खुशी की बात है कि सरकार की सहायता करने में हमारे देश वाले भी काम आए यह बड़ाही उमदा मौका हाथ लगा है हमारे हिन्दुस्तानी अफ़सरों और सिपाहियों को चाहिए कि जो तलवार और बन्दूक चलाने का काम पड़े तो जी खोल कर लड़ें मरना एक दिन अवश्य है तो फिर क्यों ऐसा उमदा मौका पाकर नाम न पैदा कर जो इस समय चूक जाना मानो सदा के लिए कायरपन का जामा पहिन लेना है; अ[illegible] याद करो तुम वही हिन्दुस्तानी

REGISTEED No. 81.

हो जो अपना खून पानी की तरह बहा कर देशी बादशाहों को हिंदुस्तान में कायम किया यह तुम्ही लोगों के भुज बल का प्रताप है कि मुगल खानदान हिन्दुस्तान में सैकड़ों वर्ष तक स्थिर रहा और यदि तुम लोगों से पिछले मुगल बादशाह एतना दुर्भाव न कर लेते तो एतनी शीघ्र नष्ट न हो जाते जिस देश का भूतकाल अच्छा नहीं होता उसका भविष्य सुधरने में अलबत्ता सन्देह रहता है आप लोगों का भूतकाल कैसा अच्छा था कि रामचन्द्र से लेकर आल्हा ऊदल और राजा मान तक कैसे २ योद्धा हो गए हैं ब्राह्मणों में श्री परशुराम और द्रोणाचार्य जी हो गए हैं कि वे जो इस समय होते तो रूम रूस को फूस के माफिक जला देते ; रूस फरासीसियों से हार चुका है अङ्गरेजों से भी पहिले कई लड़ाइयां हार चुका तो क्या तुम उसे न जीत सकोगे ? यह पहिली दफा है कि आप लोगों को योरप वालों से लड़ना पड़ा है देखिए अपने मुल्क का नाम न जाने पावे जान भी जाय तो चली जाने दीजिए जिसमें बाप दादों का नाम तो रहे इस मौके पर शुभकों आपके दूर देश जाने का भी कुछ सोच नहीं है जाइये २ और जीत [illegible]॥

सूचना।

जिन महाशयों ने अब तक मूल्य नहीं भेजा है उनसे ३) वार्षिक के हिसाब से लिया जायगा क्योंकि २) अग्रिम मूल्य था॥

सूचना॥

जो महाशय इस पत्र को न लिया चाहैं वे कृपा करके हमको पत्र लिख भेजें यदि वे इस पत्र ही को लौटा देवैंगे तो कदाचित वे पत्र हम को न मिले तो वे लोग इसके ग्राहक समझे जायेंगे ग्राहक लोगों से प्रार्थना है कि हिन्दीप्रदीप का मोल और इस द्रव्य सम्बन्धी पत्र नीचे लिखे हुए पते से भेजें॥

"मैनेजर हिन्दीप्रदीप
मीरगञ्ज
इलाहाबाद।

और लेख आदि इस नीचे लिखे हुए पते से॥ "सम्पादक हिन्दीप्रदीप
मीरगञ्ज
इलाहाबाद"

मूल्य अग्रिम वार्षिक	...	२)
डाक महसूल	...	।/)
छमाही	...	१।)
[illegible]	...	।/)

बनारस लाइट प्रेस में गौरी नाथ पाठक [illegible]प्रदीप के मालिकों के लिए छापा

THE

HINDIPRADIPA.

हिन्दीप्रदीप।

—xxxx—

मासिकपत्र।

विद्या, नाटक, समाचारावली, इतिहास, परिहास, साहित्य, दर्शन, राजसम्बन्धी
इत्यादि के विषय में

हर महीने को १ लो को छपता है ॥

शुभ सरस देशसनेह पूरित प्रगट ह्वै आनंद भरै ।
बचि दुसह दुरजन बायु सों मणिदीपसम थिर नहिं टरै ॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरै ।
हिन्दीप्रदीप प्रकाशि मूरखतादि भारत तम हरै ॥

ALLAHABAD.—1st June 1878. [Vol. I. No. 10.]

प्रयाग ज्येष्ठ कृष्ण १४ सं० १९३५ [जि० १ संख्या १०]

कहौंकहौंगोपालकी गईचोकड़ीभूल ।
काविलमेंमेवाकिए व्रजमेंकिएकरील ॥

हमारी सरकार राजनीति की काट ब्योंत मे यद्यपि बड़ी कुशल है पर वरन्याकुलर प्रेस ऐक्ट के मामिले मे चूक गई जो परिणाम बिना सोचे सम झे एकही बैठक मे उसे पास कर दिया पर जब अपने स्वाभाविक न्यायशील[illegible] पर सरकार को ध्यान आया तो इसे निरा पोथी का भाटा करना पड़ा और जो समाचार पत्र वेलवाफ़ लिख देने के सबब से बन्द हो गए थे वे फिर बहाल कर दिए गए; एक मछरी तमाम जल गन्दा कर दे सकती है यह कहावत बहुत ठीक है अखबार पढ़ने वालों को [illegible] होगा कि मिस्टर ईडिन जब

बङ्गाल के लफटिनेण्टगवर्नर हुए थे उसके थोड़े दिन बाद एक स्पीच में उन्हों ने देश भाषा के समाचार पत्रों के सम्पादकों को बहुत कुछ भला बुरा कहा था। इस कारण क्या अब भी किसी को कुछ शक हो सकता है कि यह ऐक्ट केवल उन्हीं साहब के करतब से कौंसिल में पेश किया गया और झट पट पास भी कर दिया गया ; ईडन साहब के विषय में बङ्गाल के समाचार पत्रों में बहुत कुछ लिखा गया है सो वह सब क्या झूठ है क्या ईडिन साहब इस लायक न थे? समाचार पत्र वालों को केवल लिखना ही लिखना हाथ लगा ईडिन साहब के हाथ सभी कुछ था जो चाहा सो कर गुजरे। हम श्रीयुतबाबूमराय को तौभी धन्यवाद देते हैं भला जो सबेरे का भूला सांझको आवे तो उसे भूला नहीं कहते अथवा श्रीयुत का भी इसमें क्या अपराध है कलकत्ते की हवाही ऐसी है कि जिसके लगतेही मनुष्य और का और हो जाता है यह गुन तो केवल शिमले की शीतल वायु में है जो बुद्धिको सदा स्थिर रखती है और बहकने नहीं देती फुलर्स केस की जांच यह शिमलेही की शीतल वायु का गुण था पायोनियर लिखता है मेजिसट्रेटों को इस कानून से पूरा इख्तियार न मिलने से लोग न डरेंगे क्योंकि विना लोकल गवर्नमेण्ट की इजाजत के मेजिसट्रेट कुछ काररवाई नहीं कर सकता पर हम तो देखते हैं कि मेजिसट्रेट क्या लोकल गवर्नमेण्ट भी इस योग्य नहीं है क्योंकि बङ्गाल की लोकल गवर्नमेण्ट की काररवाई से यह निश्चय हो गया कि लोकल गवर्नमेण्ट सर्वथा इस काम के अयोग्य है इस लिए अब गवर्नमेण्ट आफ इण्डिया जब मंजूर करेगी तब कुछ काररवाई इस ऐक्ट को की जायगी। अब हम यह पूछते हैं भला ईडिन साहब गवर्नर जेनरल कर दिए जांय तो क्या हो? हम समझते हैं कोई अखबार हिन्दुस्तान में न रहने पावें खास करके बङ्गाल के ; अब जो गवर्नमेण्ट आफ इण्डिया की इजाजत से कोई अखबार पर कुछ किया जायगा और फिर अपील भी वहांही होगी तो अपील से क्या लाभ निकलेगा अन्तको यही हुक्म होगा कि इस से जो कुछ करना था वह सब पहिलेही से खूब सोच समझ कर किया गया है इसमें अब कुछ नहीं हो सकता। हम अपने लफटिनेण्ट गवर्नर सरजार्ज कूपर की बुद्धि मत्ता और गौरव की प्रशंसा क[illegible] हैं जिन्हों ने अपनी नेक मिजाजी

का पूरा नमूना इस प्रेस ऐक्ट के मामिले में प्रगट कर दिया जो ये भी ईडिन साहब के समान बेलवाग्ड लिखवाने के लिए उधुम मचा देते तो हम लोग क्या कर सकते थे ; ईश्वर से प्रार्थना है हमे सदा ऐसे ही प्रजा हितैषी हाकिम मिला करें और ऐसे हाकिम पर जगदीश सदा अपनी छाया बनाए रहें।

हिन्दुस्तानी राजा।

अपने पूर्व सञ्चित पाप कर्मों का भुगतमान भुगतने को यदि हत भाग्य इस भारत भूमिही में हमे जन्म लेना था तो राजा क्यों न हुए जो घुंघुर वाली लम्बी २ जुलफों मे हेरों अतर और फुलेल का सहार करते ; कच भार और रत्नों का हार धारण कर गुड़िया से बने राज सिंहासन पर बैठे दिन रात पान चबाया करते ; हां जी हां जी करने वाले निपट नादान मनुष्य के तन मे खर समान दीवान मंत्री आदि प्रधान कामदार पर राज का सब कार बार छोड़ हम या तो आठो पहर पूजा किया करते नही तो भांड़ पतुरियों मे मजा उड़ाते ; हमारों कामिनी जनों से अन्तःपुर गुलजार रहता दीन दुखिया प्रजा का धन हरण कर खाली दिखाने [illegible] हाथी घोड़ा साथ लशकर डङ्का निशान से विभव का अभिमान प्रगट करते ; बन्दीजनों से झूठा गुणगान सुन २ फूले न समाते ; केवल हद्दा के द्वारा विभव बढ़ाए रहते; मान अपमान पर कुछ ध्यान न दे विदेशी नरपति हमे काठ की पुतली बनाय जैसा नाच नचाते वैसाही नाचते लगते खाली २ अघर की पदवी और सलामी ब९ आने के लिए व्यर्थ हैरान रहते ; अकिल के दुशमन होकर जिन विदेशी राज पुरुषों को हम मोल ले सकते हैं उनको आज्ञा को वर प्रदान सदृश समझ दिल्ली से कलकत्ते तक ठोंकर खाया करते। जैसा हजारों लाख के तीनकौड़ी पंचकौड़ी वैसेही इस समय के महाराजाधिराज हो रहे हैं धन्य हैं बुद्धि के कूर आंख के सूर हमारे देश के महाराजाधिराज जो अपनी वर्तमान परतंत्र दुःख दशाही को सकल सुख का सार माने बैठे हैं जैसा कुत्ता सूखी हड्डी चबाय २ अपनेही मुख का रुधिर चूस परम सन्तुष्ट होता है वैसाही हमारे नरेश धनेश श्रीमन्त हो रहे हैं जो सिंह कासा पुरुषार्थ करना तो जानतेही नहीं जो दूर देशों में जाय परदेशी नरेशों पर हस्त प्रक्षेप कर उन्हे अपने प्रचण्ड भुजदण्ड से आक्रान्त कर लेते ये तो क-

बल घरही से घेरौंदा खेलने जानते हैं भिखारी धन हीन प्रजा का धन छीन केवल अपनेही सुख औ आराम के लिए अपव्यय कर उस धन का सत्यानाश करते हैं राजा का सुख प्रजा के सुख चैन के आधीन होना उचित है पर यह बात इन दिनों के भारतीय नरेशों में भला काहे को होनेवाली है यह तो श्रीरामचन्द्र के आजानुबाहु के आधीन थी परशुराम के तीक्ष्ण परशु की धार में विश्राम करती थी विक्रम भूपाल के पराक्रम की कण्ठमाल थी ; यदि हम इन श्रीमन्त और नरेशों को सुखी माने क्योंकि ये समस्त विभव के आधार हैं सो भी नही है विचार कर देखो तो उनका अनुराग उनकी बुद्धि सच्चे सुख की ओर कभी स्वप्न मे भी नहीं दौड़ती वे दिन को रात समझते हैं और रात को दिन मिट्टी को सोना और सोने को मिट्टी कुमार्ग को सुमार्ग और सुमार्ग को कुमार्ग ; कौन सा विचार वान पुरुष होगा जो इनके इन कुचरित्रों को देखसुन नेत्रों से जल न गिराता हो परन्तु क्या किया जाय यह ईश्वरही को मंजूर है कि भारत का उत्थान कभी न हो नही तो क्या इस प्रकाश के समय जब सब लोग सुचेत और सावधान हो संभलते जाते हैं हमारे राजा महाराज वैसाही कोरे के कोरे बने रहें और कुम्भकरण की सी गाढ़ निद्रा मे सदा मग्न हमारी लेखिनी को शोक सागर में डुबाने का हेतु हों ।

भारतवर्ष का प्राचीन राजधर्म ।

पूर्व काल में भारतवर्ष का राज धर्म ऐसा उत्तम था कि जिससे राजा प्रजा दोनो प्रशंसा के योग्य थे सब से बड़ी बात यह थी कि यहां के उत्तम कोटि के मनुष्य जो ऋषि मुनि कहलाते थे जिन के रचे हुए सकल शास्त्र हैं उन्होंने राजा की महिमा को अत्यन्त बढ़ा रक्खा था यहां तक कि राजा को अपूर्व देवता लिख गए हैं जिस में वे कई देवताओं के गुण मानते थे और सारी प्रजा के चित्त में यही बात जमा दिया था कि राजा को मनुष्य मत समझो यह बड़ा भारी देवता है जैसा मनु ने कहा है "बालोऽपिनावमन्तव्यो मनुष्यइतिभूमिप: । महतीदेवताह्येषा नररूपेणतिष्ठति" दसो दिक्पाल के अंश राजा में रहते हैं इसकी प्रसन्नता में लक्ष्मी बसती है पराक्रम में विजय क्रोध में मृत्यु इस लिए राजा की इच्छा के विरुद्ध कभी कोई बात न चेतनी चाहिए क्योंकि जगदीश्वर ने सब जीवों का रक्षक जो ब्रह्म

... रूप दण्ड है उसे राजा के लिए पहिले ही उत्पन्न किया है इन्ही शास्त्र वचनों पर अटल बिश्वास रख भारतीय प्रजा सदा से राजभक्त होती आई है ; उन पूर्व काल के नरेशों ने प्रजा को पुत्र से अधिक पाला है और दण्ड में ऐसे बयशासन रहे कि कभी कोई मर्यादा से बार बराबर भी बाहर नहीं हो सकता था जैसा कवि वर कालिदास लिख गए हैं " रेखामात्रमपिक्षुण्णा दामनोर्वर्त्मनःपरम् । नव्यतीयुःप्रजास्तस्य नियन्तुर्नेमिवृत्तयः " नीच कर्म्मा और मलिन प्रकृति वालों को यह सामर्थ्य न थी कि सत्कर्मी और शुद्ध प्रकृति वालों का अपमान या उनके स्वत्व का अपहरण कर सकें या और किसी प्रकार का उलटा पुलटा काम नहीं होने पाता था चारो वर्ण और चारो आश्रम अपने २ धर्म कर्म में प्रवृत्त रहते थे उन के न्याय और दण्ड केवल धर्म रक्षा और मर्यादा स्थापन के लिए थे न कि राज कोष भरने के लिये वे डरते थे कि यदि हमारा न्याय और दण्ड धर्म बिरुद्ध होगा तो हमारा समूल नाश हो जायगा " धर्माद्विचलितंहन्ति नृपमेवसबान्धवम् " राज कर वे संपूर्ण पैदावरी का छटवां भाग लेते थे अब के समान सब का सब नहीं गटक जाते थे और खितिहर बेचारे जिन को दिन रात घाम छांह सह कठिन परिश्रम करते दांतों पसीना आता है वे कोरे के कोरे रह जाते हैं ; प्राचीन भारतवर्षी नरेशों में एक बड़ी अच्छी बात यह थी कि न्याय और दण्ड के कामों में उन लोगों से सहायता लेते थे जिन को समझ लेते थे कि यह पवित्र धर्मशील यथार्थ बादी कभी क्रोध वा लोभ में आ कर पक्षपात न करेगा ; अभिमानी शत्रुओं को जब कभी दण्ड देते थे तो घर की बकरी का अहेर न करते थे किन्तु अपने आधीन की न्याय पूर्वक रक्षा करते थे जैसा मनु ने लिखा है " स्वराष्ट्रे न्यायवृत्तः स्याद्भृशदण्डश्चशत्रुषु " उन को अपना राज पाट बढ़ाने और केवल राज पुरुषों के हृष्ट पुष्ट रखने के प्रयोजन से प्रजा का सर्वस्व हरण की अभिलाषा न थी किन्तु प्रजा का सुखी और धनवान होना अपने लिए परम सुख समझते थे वे निश्चय कर जानते थे कि प्रजा को बिना सताए और अन्याय कर्म बिना किए शिलोञ्छ से भी अपनी जीविका कर लेंगे तो सुयश पृथ्वी तल में सदैव प्रकाशित और फैलता रहेगा जैसा विंदु मात्र तैल जल में फैल जाता है जैसा मनु अ । ७ श्लोक । ३ ३ " एवम्वृत्तस्यनृपतेः शिलोञ्छेनापिजी-

वित: । विस्फोर्यन्तियथोल्कां तेजविन्दुरिवाग्निः "॥ क्रमश: ।

धन्यवाद और अवशिष्ट प्रार्थना ।

हम अपनी न्यायशीला गवर्नमेण्ट को इस हेतु विशेष धन्यवाद देते हैं कि उस के कर्ण पुट में जो यथार्थ निवेदन का शब्द जान पड़ता है तो वह उसके मान लेने में हठ धर्मी नहीं करती वरन झट पट अपनी भूल चूक के सुधारने में और न्याय करने में प्रवृत्त हो जाती है; हमारे हिन्दीप्रदीप के नं० ७ में जो शब्दों की यातना पर आशय लिखा गया था सो हमारी विद्या गुण निधान गवर्नमेण्ट की आज्ञा से २७ अप्रैल के उर्दू गवर्नमेण्ट गज़ट में पुस्तक के उन नामों का शोधन हो गया; यद्यपि अक्षर तो फारसी ही शरीफ के हैं पर लिख की गलती मिटा दी गई मुसम्मा बीजगणित का सुलभ बीजगणित बना दिया गया। और सुता पर बोझ का सुताप्रबोध इत्यादि उक्त अशुद्ध सब ठीक कर दिए गए इसके सिवा एक बात और भी की गई कि जो नई छपी हुई पुस्तकें और छपवाने वाले का नाम आदि की फिहरिश्त अंगरेजी में छपती थी उसमें सरकार की आज्ञा से यह प्रबन्ध किया गया कि जिस भाषा की पुस्तकें हों उसी भाषा के अक्षरों में छपा करें अर्थात् संस्कृत को नागरी अक्षरों में और फारसी उर्दू को उर्दू में छपा करें० यहां तक हमारा धन्यवाद सम्बन्धी आशय हो चुका; अब अवशिष्ट प्रार्थना यह है कि दीवानी अदालत के इत्तिला नामा और अर्जी नालिश की नकल भी हिन्दी में जारी हुआ करे तो प्रजा और सरकार दोनों का हित हो प्रजा का हित इस प्रकार हो कि जब देहातों में फारसी अक्षरों में इत्तिला नामा पहुंचता है तो उन्हें किसी तरह नहीं मालूम होता कि इसमें क्या बला लिखी है देहातों में दूर२ तक फारसी नवीस मिलते नहीं और जो कहीं कोस दो कोस पर थाने पुलीस आदि में हैं भी तो उनका रोब ऐसा गालिब रहता है कि किसी की हिम्मत नहीं पड़ती कि उनसे पढ़ने को कह सके और एक यह भी डर लगा रहता है कि इसमें कोई भेद की बात लिखी हो तो सब कोई जान लेगा इत्यादि कारणों से उन बेचारों को सदर मुकाम में वकील मुख्तार के पास तुरन्त दौड़ना पड़ता है उस घबड़ा हट से न जबाब दिही का सामान साथ ला सक्ते हैं न अकबाल करने में यथार्थ हानि वा लाभको समझ सक्ते हैं

हिन्दी में होता तो खुद आप पढ़ लेते जैसा कि बन्दोबस्त के इजाफा लगान आदि को नालिशों में नागरी का छपा हुआ इत्तिलानामा जाता है; यदि दीवानी अदालत भी तनिक दिवानापन छोड़ प्रजा की सच्ची भलाई पर दृष्टि कर नागरी अक्षरों में इत्तिलानामा और अर्जी नालिश की नकल का भेजना अङ्गीकार करै तो लोगों के हक में इन्साफ और अदालत की आमदनी बढ़े क्योंकि लोग फारसी के इत्तिलानामे के न पढ़ सकने के कारण घबड़ाहट में सबूत आदि न ले जाने से या तो मुकद्दमा हार बैठते हैं या लाचार हो एकबाल कर लेना पड़ता है और बातों से कुछ भी नहीं करते बन पड़ता जब वकीलों से इत्तिलानामा पढ़वाया तो उन्हों ने कहा इसमें फलाना कागज चाहिए फलाने कागज़ की नकल जरूर है तब वे बेचारे घर को ओर दौड़ते हैं दो तीन दिन इसी दौड़ धूप में बीते मुकद्दमे की पैरवी भी न हुई तारीख भी बीत गई गैरहाज़िरी में मुकद्दमा खारिज होगया तो फिर किसी काम के न रहे अक्सर ऐसा देखा गया है कि एकही चपरासी कई गांव का इत्तिला नामा लेके चलता है रमते रमाते जब जी में आया तब पहुंचा ऐसा भी हुआ है कि कल मुकद्दमा है तो आज शाम को चपरासी साहब पहुंचे इत्तिलानामा क्या हुआ गिरफतारी ठहरी ठेल पेल के उसको अदालत को डेहुड़ी तक पहुंचा देते हैं और इत्तिलानामा का मतलब समझते समझाते रूबकारी का ठीक समय पहुंच जाता है तब उससे कुछ नहीं बन पड़ता यही कारण है कि बार बार के अन्याय होने अधिक क्षोभ पाने और अपरिमित खर्च पड़ने से अदालत करने का लोगों का जी टूट गया है जिसका परिणाम यह हुआ कि दिन प्रतिदिन मुकद्दमा कम दायर होते हैं, जब उनको इत्तिला देने का भी कोई सुगम उपाय नहीं किया जाता जिसमें सर्कार का कुछ बड़ा खर्च भी नहीं है और प्रजा की अत्यन्त भलाई है तो और बातों की कौन कहे; यही दशा चुङ्गी के शरिश्ते में है व्यौपारियों को फारसी में रक्खा मिलता है जिनको न वे पढ़ सकें न चपरासी साहब उन्हें रक्खा देखाते हैं; क्या हिन्दी में रक्खा का छापना दुस्तर है? हां "वचनेपिदरिद्रता" इस में हमारी सरकार का क्या दोष है यह तो नीचे के ओहदेदारों का काम है सो उन्हें क्या गोली बारूद कहीं जाय नौ-

करी मे काम यह चला तो अखबार न-वीसों के बाटे पड़ो है कि पत्थरों पर सिर पीटा करें ; शहर के अन्देशे काजी दूबर हिन्दी निगोड़ी के भागही फूटे हैं, और कहां तक कहें सड़कों के नाम और पते भी जहां कहीं उसमे लिखे हैं उनमे भी गलती रांड मुहबाए बैठी है पादरी डेविस साहिब के हाते के नैऋत्यकोण की ओर लिखा है सड़क शैहैर की और चाहिए था सड़क शहर की न जानिए किस आलिमफाज़िल ने शकार और हकार पर व्यर्थ दो मात्रा का बोझ रख दिया है और वे बेचारे कई वर्षमे इस अनुचित बोझ को सह रहे हैं इसी प्रकार कई एक सड़कों के नाम अशुद्ध लेख से अङ्कित हैं पर देखता कोई नहीं देखे कौन बड़े २ ओहदेदार हिन्दी जानते नहीं न उसकी कुछ कदर करने से उन्हे मतलब है दूसरे लोगों की जानकारी कुछ गुणदायक नहीं हो सक्ती; यद्यपि इन बातों से सर्कारी आमदनी में कोई हानि नहीं है पर शरिस्ते तालीम में दाग लगाने के लिए बहुत है; खैर हिन्दी भाषा का प्रचार न हो सके तो नागरी अक्षरों ही का बरताव सरकारी कामों में हो तब भी हम लोग अपने को कृतार्थ माने।

भूकम्प निरूपण।

भू तत्वानुसन्धायी लोगों का यह अनुमान है कि यह पृथ्वी किसी समय प्रज्वलित पिण्ड के आकार थी क्रम क्रम इसका पृष्ठ भाग ज्यों २ शीतल होता गया त्यों त्यों प्राणी वर्ग के बास के योग्य हो गया किन्तु इस भू पिण्ड का अन्तर्भाग अब तक शीतल नहीं हुआ इस कारण कहीं २ अग्नि के उत्पात से द्रवी भाव को प्राप्त हो जाता है और उस द्रव पदार्थ वा उसके समीपवर्ती तचे हुए पत्थर वा मिट्टी को किसी तरह जल का स्पर्श होने से वाष्प उत्पन्न होता है वही भाफ उद्घाटन शक्ति द्वारा भूमिकम्प अथवा भूकम्प के घोर२ उपद्रव हो उठते हैं; रसायन विद्या पारदर्शी कोई२ विद्वानों का यह मत है कि चूर्ण बीज (काल्शियम) क्षारबीज (पोटेशियम) खड़ीज (मिलोशियम) इत्यादि केतनी धातु विशेष पृथ्वी के अन्तर्भाग मे विद्यमान हैं उनका जल के साथ स्पर्श होने से आग पैदा हो जाती है वही अग्नि उस स्थान की मिट्टी पत्थर आदि पदार्थों को द्रव कर देता है वही द्रव पदार्थ विस्तारित और परस्पर संघर्षित और विलोड़ित हो भूमि को कम्पित कर देता है और जगह २ प्रस्फुटित हो आग्नेय गिरि (लावा)

पैदा करता है। लोह चुन और गन्धक थोड़े से पानी में मिला कर मिट्टी में उसे सान पृथ्वी के नीचे गाड़ दो कुछ समय में उन पदार्थों का प्रस्फोट हो वहां के चारो ओर की पृथ्वी कांपने लगेगी ; यह बात देख कोई २ रसायन वेत्ता यह कल्पना करते हैं कि गन्धक मिश्रित लोहे की खान में जल आजाने से यह उपद्रव उत्पन्न होता है ; ये सब उनके अनुमान सयुक्तिक भी मालूम होते हैं क्योंकि गन्धक क्षार यौग और कट्टोल आदि दाहक पदार्थों का अग्नि और जल के साथ बहुत निकट सम्बन्ध देखा गया है दक्षिण आमेरिका में ये पार्थिव द्रव्य बहुतात से हैं इस कारण वहां भूकम्प भी बहुत हुआ करता है इस आपत्ति के समय पृथ्वी के भीतर से बड़ा भयङ्कर गड़ गड़ाहट का शब्द होता है पृथ्वी फट जाती है बड़े २ घर गिर पड़ते हैं पशु भय से कम्पित कलेवर हो पांव फैलाय अपनी रक्षा की चेष्टा करने लगते हैं पक्षी झुण्ड के झुण्ड आकाश में उड़ने लगते हैं मनुष्य अपना २ घर बार सब छोड़ छाड़ मैदान में जा पड़ते हैं तौ भी उन्हें स्थिरता नहीं होती ; समुद्र थोड़ी देर तक तट से बहुत दूर फैल जाता है और ३० या ४० हाथ ऊंची लहरें उछलने लगती हैं ; सम्वत १८६८ में अमरिका का काराकास नगर जो १२००० मनुष्यों की बस्ती थी इस आपत्ति से सम्पूर्ण नष्ट हो गया ; चिली देश १२० वर्ष में ३ बार भूकम्प से उथल पुथल हो गया ; १८ सौ वर्ष बीते इटली में भूकम्प के द्वारा हर्कूलिनियम और पाम्पाई नगर २० हाथ मिट्टी के नीचे दब गया खोदने से खण्डहरादि के निशान अब तक मिलते हैं ; सम्वत १८३९ में इटली के दक्षिण प्रान्त कालेब्रिया में जो भूकम्प हुआ था उस में कई एक छोटे २ पर्वत अपने स्थान से सरक कर दूसरे स्थान में जा पड़े; थोड़े दिन हुए कच्छ देश में जो भयानक भूडोल हुआ था उसमें सिंधुनदी का गर्भ २१ फुट पहिले से अधिक गहिरा हो गया है और उसी भूडोल में भुजप्रदेश का एक भाग ५० कोस तक अत्यन्त ऊंचा हो गया जिसे अब अल्ला बान्ध कहते हैं, सम्वत १८१२ में लिसबन नगर में जो भूडोल आया था उसमें पहले बिजली के गड़गड़ाने के माफिक शब्द हुआ पीछे ऐसा भयानक भूकम्प हुआ कि संपूर्ण नगर एकाएक हिल गया और दो मिनट में ६०००० मनुष्य नष्ट हो गए यह भूकम्प प्रति मिनिट २० कोस फैलता गया थोड़े ही समय में संपूर्ण योरप और अ-

फ्रिका खण्ड के कुछ भाग में व्याप्त हो गया समुद्र ठौर ठौर अपनी नियमित सीमा से २०, ३० वा ४० हाथ ऊपर उठ निकटवर्ती भू भागों में प्रलय मचा दिया; भूकम्प का स्थिति काल बहुत थोड़ा रहता है जितना ज़ोर से भूडोल आवता है उतना ही कम समय तक ठहरता है अत्यन्त भयङ्कर कम्पन एक विपल से अधिक समय तक नहीं ठहरता; योरुपी विद्या विशारद महाशयों ने परीक्षा द्वारा निश्चय किया है कि भूकम्प ३ प्रकार का होता है; पहिला उत्क्षिप्त कम्पन इस भूकम्प में ऐसा जान पड़ता है मानो पृथ्वी ऊपर को उठती आती है; दूसरा ऊर्मिवत् कम्पन इसमें पृथ्वी जल की लहर के समान हिलने लगती है सामान्य भूकम्प प्रायः इसी प्रकार का होता है; तीसरा घूर्णित या अर्द्ध घूर्णित कम्पन यह अत्यन्त भयानक होता है लिसबन और कालेफ्रिया का भूकम्प इसी प्रकार का हुआ था। भूकम्प से केवल गृह इत्यादि गिर पड़ें यही नहीं होता किन्तु पृथ्वी ठौर ठौर फट जाती है पुराने सोते लुप्त हो जाते हैं और नए २ झरने प्रगट हो आते हैं और उन फटे हुए दरारों से जल भाफ कीचड़ धुआं धातु मिश्रित पदार्थ निकल निकल दूर जा पड़ते हैं पाम्पाई नगर का विनाश इसी प्रकार हुआ था॥

प्रेरित।

कहना और करना।

कहना और करना ये दोनों बातें भिन्न २ हैं जो बोल सकता है वह कर भी सकता हो सो बात नहीं है बहुत से लोग बोलने में साक्षात बृहस्पति होते हैं पर करने में निरे शुद्ध बुद्ध हमारे देश में इन दोनों की कमी है और ये दोनों गुण एक ही पुरुष में हों इसका तो अभाव भी कह सकते हैं; यद्यपि सभा और कमिटियों में बहुत सा समय बोलने और लेकचर व्याख्यान सुनाने में बीतता है पर सार्वजनिक मतलब की बहुत कम बातें कही सुनी जाती हैं प्रायः सभाओं में जो कोई कुछ बोला तो वक्ता के तात्पर्यार्थ पर दृष्टि न कर उस पर बाद विवाद होने लगता है इसमें मुख्य विषय तो रह जाता है और कोई न कोई झगड़ा अलबत्ता उठ खड़ा होता है; ऐक्यता २ बहुत सुनते हैं पर एक दूसरे से मेल करने के बदले अपने सेवाय दूसरा कोई नहीं है यही देखने में आता है सेल्फ रेस पेक्ट जाति अभि-

मान खाना पीना सब आ एक हो यही सब बातें मन में भरी हैं कोई कभी अपने सजातीय के सुख वा दुःख का पूरा साथ देने वाला हुआ हो यह कभी न देखने में आया जब बेटा बाप को भी मुरौवत नहीं करता तो और किसी की कौन कहे मेल तो बिना एक दूसरे की सहे कभी होही नहीं सकता; सभा में बोलना मानो एक तमाशा है खूब हाव भाव दिखलाय जोर २ चिल्लाए सभा के लिए छोड़ आए बाहिर निकलने पर उस के विचार की कौन कहे उस का समाचार भी सुनना इष्ट नहीं रहता यदि कोई कहने गया तो फ़ुरसत की सवत बगल में बैठी ही है कह दिया फ़ुरसत नहीं है; करतूत पर ध्यान करो तो इस्से भी अधिक सोच होता है सभा स्थापित हो जाने पर बरस छ महीने उस के कानून बनने में बीतते हैं ज्यों त्यों कर कानून तैयार हुआ और कामदार नियत हुए तो फिर सेक्रेटरी के हाथ उस सभा का कन्यादान कर दिया गया फिर किसी सभासद से कुछ प्रयोजन नहीं जब कानून बन कर पेश होता है तब ज़रा ज़रा सी बात पर एतना झगड़ा होता है मानो सबके सब कसम खाये बैठे हैं कि जो प्रबन्ध ठहर गया है उसके विरुद्ध कभी न चलेंगे कानून में जो महीने में एक बार सभा जुड़ना लिख दिया गया हो तो सबके सब चिल्ला उठेंगे too late बहुत अन्तर होता है पन्द्रहवें दिन सभा होना चाहिए आध घण्टे के झगड़े मे ठहरा कि महीनाही ठीक है, दूसरी सभा में देखो तो न पन्द्रह दिन वालों का मुख चन्द्र देखाता है न महीनेवालों का दो चार उत्साही जो लगा कर काम करने लगे तो उनको सहायता देने के बदले दोष लगाना और किसी दिन भीतरही भीतर विचार कर दस बीस आदमी जमा हो चलते काम में विघ्न डाल कामदारों की अदल बदलकर उठ जाना; जब कभी किसी विषय पर वाद विवाद भी और मत भेद आ पड़े तो दो चार सभासदों को बहकाकर अपने साथ कर लेना और साफ कह देना कि हमारा कहा नहीं होता तो फिर ऐसी सभा के मेम्बर हम न रहेंगे; चन्दा खुलता है तो उसदिन चन्दे की किताब भर जाती है जब चपरासी किताब लेकर मांगने जाता है तब सिर दुखने लगता है जो कुछ चन्दा वसूल भी हुआ तो मेज, कुर्सी, लैंप आदि में खर्च हो गया बचा सो सेक्रेटरी साहब का भोग लग गया; सब शहरों का इतिहास लिखना तो

रही एक प्रयाग हीका इन्स्टटूट के स्थापित होने से आज तक का हाल लिखा जाय तो पृथ्वीराय रायसा से और रूम रूस की लड़ाई के क़िस्से को भी मात कर दे। पुराने लोग इस बात को डरते थे कि जो हमारे बोलने में प्रमाणिकता न हो वा जो काम हाथ में ले उसे पूरा न कर सकें तो हमारी योग्यता प्रतिष्ठा सब मिट्टी में मिल जायगी और हम तुच्छ समझे जांयगे पर अब इसका डर नहीं रहा अब तो पुराने विद्वानों की योग्यता लोगों के आधीन है जो चाहे रक्खें जो चाहे छीन लें अब तो योग्यता से रजिस्टरी होती है रजिस्टरी शुदा योग्यता प्राप्त हो तो चाहो हम जैसा करें चाहे। जो कहें सब हमारी माफ है किसी की क्या ताकत जो ज़रा चूं कर सके नहीं तो इन्स्टूट को नालिश के लिए दीवानी खुली है; अब हमारी यह प्रार्थना है कि इन सब बातों को हमारे देश बासी अपने जी में स्थान न दें और जैसा कहते हैं वैसा करें भी जो काम हाथ में ले उस के पूरा करने में यत्नवान रहें लोग क्या कहते हैं उधर ध्यान दें, चन्दा वसूल कर उसे शिव निर्माल्य समझें सभा के नियम के अनुसार तन मन से उसका काम करें नहीं तो चन्दा जमा कर उसे हज़म कर जाना प्रत्यक्ष चौर्य्य कर्म है।

फौज की रवानगी में बदइन्तिज़ामी ।

अखबारों से मालूम हुआ कि गत मास में जो फौज माल्टा को भेजी गई उसमें फौज के आराम और खाने पीने का बड़ा खराब इन्तिज़ाम था जहाज पर रसोंई की जगह अच्छी नहीं बनी थी आटा बहुत कम था चावल बहुत सा लाद लिया गया था जिसे पठान और सिक्ख बहुत कम खाते हैं पायजामे और कोट ऐसे छोटे बने थे कि सिपाहियों को अटते न थे लोहे के हौज जिसमें पीने के लिए पानी भरा था चूते थे और जो हौज काठ के बने थे उसका पानी बिगड़ गया था ऐसी २ कितनी बे इन्तिज़ामियां हुईं इस सबका कारण यही है कि अङ्गरेज़ी ओहदेदार हिन्दुस्तानियों की राय नहीं लेते अपनेही मन की सब बात करते हैं अगर पहिले से अफसरों ने रेजिमेण्ट के हिन्दुस्तानी अफसरों से पूछा होता कि किन २ सिपाहियों के लिए कौन २ सी चीज़ें खाने पीने को चाहिए तो वे बाखूबी बतला देते और यह बदनामी कि सिपाहियों ने Mutinous spririt बगावत

करना चाहा कभी न होतो एक तो सिपाहियों ने सरकार के लिए घर द्वार और धर्म्म के छुट जाने का कुछ विचार न कर दूरदेशों में जहाज़ पर चढ़ जाना स्वीकार किया, दूसरे उनके आराम की कोई फ़िकिर न की गई तिस पर भी उन बेचारों को बदनामी मिली; यदि सरकार को और फौज भेजना मंजूर हो तो इस बातका एक हुक्म सब रेजिमेण्टों में भेज दिया जाय कि कामसरियट के ठीकेदार हिन्दुस्तानी अफसरों से सलाह कर एक फिहरिश्त तैयार रक्खें कि फलानी रेजिमेण्ट के सिपाहियों को फलानी चीजें दरकार होंगी। जैसा हमारे सिपाहियों ने बाहर जाकर लड़ने में खुशी दिखलाई है वैसाही सर्कार को भी उनकी खातिर करना उचित है क्योंकि जब दूसरी पलटन इस बात को सुनेंगी कि फलानी रेजिमण्ट की बड़ी इज्ज़त की गई तो वे भी खुश हो दिलोजान से सरकार के लिए लड़ने को मुस्तैद रहेंगी नहीं तो सब तकलीफों का हाल सुन फिर काम पड़ने पर काहे को राज़ी से जांयगी और जबरदस्ती जांयगी भी तो यह जोश न रहैगा।

इसे इलाहाबाद कहैं या खाकाबाद।

नहीं २ यह तो पश्चिमोत्तर की राजधानी है और हिंदुओं का बड़ा तीर्थ है; हां जाना तभी सबेरे से सांझ तक खाक उड़ा करती है खास कर ऐन चौक में कि कोई आदमी किसी काम के लिए बीच चौक होकर कोतवाली तक गुजरे तो क्या मज़ाक कि सिर से पैर तक धूल में न नहा जाय चौक क्या है मानो सहारा का रेगिस्तान ठहरा; इसका धन्यवाद किसको दें मेरा म्यूनीसिपालिटी के जिस के बदौलत नित्य यहां वालों को तीर्थ की रज में स्नान मयस्सर होता है, नहीं नहीं सम्पूर्ण धन्यवाद और प्रतिष्ठापत्र म्यूनीसिपालिटी ही ले लेगी तो हमारे ठीकेदार साहब कहां जांयगे जिन्हों ने छिड़काव का ठीका लिया है दिन भर जो गर्द उड़ा करती है रात को जो दीपक रहित लालटैनें उजाड़पुर का अनुकरण करती हैं, इत्यादि बातें क्या थोड़ी हैं म्यूनिसिपालिटी को धन्यवाद देने के लिए फिर बरसात तो आने दो म्युनिसिपालिटी कितना धन्यवाद लेगी मारे धन्यवाद के बोझ के सिर तो उठा हो न सकेगी पर यह तो हमारे ठीकेदारजी साहब का हक है जिसका जो हक

इसे न अदा करना भल मनसाहत के बईद है, विशेष कर हम अखबार वालों के लिए जिनकी लेखनी सदा इसी ताक में रहती है ; अन्धे हो देखने नहीं शाम को छ बजे तमाम चौक दो एक मशक पानी तावा की बूंद के समान छिड़क दी जाती है बस इतना थोड़ा है चौक क्या अङ्गरेजों के बंगलों के सामने की ठण्ढी सड़क है वज़ेदार खुश पोशाक जो अकसर शाम को चौक में टहलने जाते हैं उनको भी तो कुछ मालूम हो कि हम टहलने गए थे ; उन खुश पोशाकों में म्युनिसिपल कमिटी के मेम्बर भी तो होंगे फिर क्यों नहीं इसे देखते ; सब कुछ देखते सुनते हैं पर क्या हमारे समान उनको भी खलल दिमागी हो गई है कि व्यर्थ सर मगज़न करें जो सब की गति सो अपनी भी इन रायज मसलपर क्यों न अमल कर चुप बैठे रहें।

समाचार संग्रह।

यहां के कलक्टर क्लिनटन साहब यहां के जज्ज नियत किए गए और उनकी जगह मारखम साहब कलक्टर हुए हैं बूड़े के साल जब मारखम साहब कायम मुकाम कलक्टर हो गए थे उस समय की इनकी मुस्तैदी से जो हम लोगों की रक्षा हुई थी उस्से विश्वास है कि उक्त साहब हम लोगों परम उपकारी होंगे यदि पुलिश के वशीभूत न हुए ; प्रजा वात्सल्य और न्यायशीलता आदि उत्तम गुण विशिष्ट श्रीयुत लैन साहब के बदल जाने का यहां की प्रजा को बड़ा रंज था पर वह सब क्लिनटन साहब का सीधा पन और समान भाव से लोग भूल गए थे आशा करते हैं मारखम साहब भी उसी मार्ग पर चलेंगे।

एक बार पायोनियर से किसी ने पूछा था कि हिंदुस्तानी पत्रों में कौन सा पत्र (लायल) राजभक्त है ताकी सरकारी फौज में जारी किया जाय इस पर पायोनियर अपनी राय काशीपत्रिका को दी है ; वाह तेहवारों में बड़ा तेहवार लक्ष्मी छह अखबारों की गिनती में कौन पायोनियर की परिणीता वधू काशी पत्रिका ; भला बड़ी बात हिन्दी पत्रों में कोई तो लायल हुए जिसे पिया चाहें वही सोहागिन सही।

हम अपने राजा महाराजों को चेताते हैं कि वे रूस से लड़ने के लिए तैयारी कर सेना ठीक किए रहें राजा महा-

राजा राणा राव नौवाब आदि जिन्हों ने भांत २ की टाइटिल और व्यानर्स आदि अनेक प्रतिष्ठा के चिन्ह पाए हैं उसका बदला चुकाने का दिन आज आया है; शाह वाजिदअली की आदतों को तज महाराजा सेन्धिया और काश्मीराधिपति के समान सेना दुरुस्त करें आनरेरी जेनरल की पदवी प्राप्त करने का यत्न करें बेगम भूपाल की सी हिम्मत बांध अपनी सेना मालटा भेजने के लिए सरकार से प्रार्थना करें; सरकार को भी उचित है कि एक एक ब्रिटिश आफिसर राजाओं की सेना में नियत कर दे जिस्से कि थोड़े दिनों में वे युद्ध विद्या सीख शूर वीर सिपाही हो जांय ॥

जिस समय देशी पलटने मालटा गई हैं उस वक्त गोरों की अपेक्षा उन के चेहरों पर विशेष उत्साह प्रगट होता था सब लोग विजय सूचक पदों को हरी महाराणी राज राजेश्वरी विक्टोरिया की जय; राजा रामचन्द्र की जय; सरकार अङ्गरेज की जय कह कह कई बार चिल्लाए परन्तु केसरहिन्द की फतह किसी ने न कहा जिस के लिए सरकार ने लाखों रुपया खर्च किया है ॥

कायस्थ ॥

कायस्थ जाति के वर्णनिर्णय के विषय में अवध गज़ेटियर नाम सर्कारी पुस्तक के द्वितीय भाग के पृष्ठ ३७४ का उल्था नीचे लिखते हैं ।

"अब तक इस जाति के वर्ण के विषय में मतभेद था । अंग्रेजी ग्रंथकारों में से कोई इसको शूद्र वर्ण में पहिला नम्बर बनाता था कोई क्षत्री व वैश्य के बीच में मानता था । हिंदू शास्त्रों में अब तक एका न था कोई इस को शूद्र ठहराता था कोई क्षत्री मानता था ॥

पद्मपुराण के मानने वाले इस जाति वालों को सूर्य व ब्रह्मा की पोतियों से चित्रगुप्त का वंश मानते हैं कायस्थ नाम काया से बना है अर्थात ब्रह्मा की सर्व्व काया से उत्पन्न हुआ और लेखनी वृत्ति ठहराई गई इसी पर काशी काश्मीर बङ्ग मुम्बई के पण्डितों ने थोड़े दिन हुए सम्मति किया था जिन से बनारस के महाराजा ने इसी वंश के एक प्रतिष्ठित मनुष्य की प्रेरणा से प्रश्न किया था ।

अब इन पण्डितों की सम्मति और जाति की रीति व्यवहार के मेल से व शास्त्र के वचनों के अनुसार यह सिद्ध

हुआ कि ये कायस्थ नाम क्षत्री वर्ण है युद्धवृत्ति की जगह इन की लेखनी वृत्ति है" ॥

महीना भर तक नित्य आंधी और पानी आया कि ए जिस्से हम लोगों को यही प्रतीति हुई कि ईश्वर ने सृष्टि का कुछ नया इन्तिजाम करना बिचारा है कि वैशाख और जेठ में नित्य वृष्टि हो और ठंढी हवा चला करे लगत आषाढ़ ही से खुल जाय और सावन भादों में लू की धूम मचे पर इधर चार पांच दिनों से आकाश का रङ्ग बदला देख पड़ता है लू चलना शुरू होगया और गरमी भी खूब चङ्ग पर चढ़ी हुई है; ईश्वर के करतब से भला किसकी अकिल परमार सकती है उसकी कुदरत वही जाने हां पर खरबूजा और आमका तो इस आंधी पानी ने खासकर सत्यानाश किया।

अन्त को इनकम टैक्स हत्यारे ने हम हिन्दुस्तानियों का पिण्ड न छोड़ा जिस का इन दिनों यहां खूब शोर शोर है यदि वर्षा का भी परसाल का सा हाल हुआ जिसका की पूरा आसार अब तक देखने में आया है तो हम सब कोश कोए से भी न जायेंगे और बिन मौत हो काल कलेवा होंगे।

हम कानपुर के रसिक और उत्साही महाशयों को बहुत २ धन्यवाद देते हैं वहां समाचार पत्रों के पढ़ने लिखने का विशेष प्रचार जान पड़ता है क्योंकि वहां से प्रति मास दो एक नए ग्राहकों की मांग आती है; हमारे संस्कृत कवियों का अनुभव क्या कुछ ऐसा वैसा था। "उत्पत्स्यतेऽस्ति मम कोऽपि समानधर्मा कालो ह्ययं निरवधिर्विपुला च पृथ्वी"।

बड़ी खुशी की बात है कि फौज माल्टा पहुंच गई आशा है हमारी हिंदुस्तानी फौज सरकार को जो कुछ काम आ पड़ेगा उससे किसी तरह मुह नमोड़ेगी।

इन दिनों जो तारे के समाचार आए हैं उन से निश्चय होता है कि अब सुलह अवश्य होगी आशा है कि अब दूसरे महीने से रूस रूम का झगड़ा हम लोगों के कर्ण गोचर नहो चलो अच्छा हुआ अखबार वालों को लिखने को कुछ थोड़ा विश्राम तो मिला।

सूचना।

जिन महाशयों ने अब तक मूल्य नहीं भेजा है उनसे ३) वार्षिक के हिसाब से लिया जायगा क्योंकि २) अग्रिम मूल्य था ॥

मूल्य अग्रिम वार्षिक	...	२)
डाक महसूल	...	।≠)
छमाही	...	१।)
तीमाही	...	॥≠)

बनारस लाइट प्रेस में गोपीनाथ पाठक ने हिन्दीप्रदीप के मालिकों के लिए छापा।

मासिकपत्र।

विद्या, नाटक, समाचारावली, इतिहास, परिहास, साहित्य, दर्शन, राजसम्बन्धी इत्यादि के विषय में

हर महीने को १ ली को छपता है॥

शुभ सरस देशसनेह पूरित प्रगट ह्वै आनंद भरै।
बचि दुसह दुरजन बायु सों मणिदीपसम थिर नहिं टरै॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरै।
हिन्दीप्रदीप प्रकाशि मूरखतादि भारत तम हरै॥

ALLAHABAD.—1st July 1878. [Vol. I. No. 11.]

प्रयाग आषाढ़ शुक्ल १ सं० १९३५ [जि० १ संख्या ११]

प्रदीप॥

पाठक वर्ग आप लोगों का भली भांत मुझ पर प्रेम है या नहीं यह तो मैं अच्छी तरह नहीं जानता तौभी एतना तो कह सकता हूं कि मैं आप का प्रणयाकाङ्क्षी हो कोई बात नहीं छोड़ रक्खा जिस्से आप लोगों के चित्त को बिनोद और देश का हित साधन है परन्तु इस थोड़े से समय एक वर्ष में मुझे यह तो स्पष्ट रूप से प्रगट हो गया कि यह हिंदी भाषा अभी जैसी हीन दीन और बेकदर है वैसी कोई दूसरी भाषा न होगी हुआ चाहै जिस देश में प्रमोद निद्रा मग्न धनिकों के यहां कुछ आदर नहीं है दहिने बाएं कहीं खड़े होने का स्थान जिसे नहीं है सामने सपत्नी समान एक

कुलटा यवनी गरज रही है जहां कांच और काञ्चन दोनो एक से हैं भ्रमर गुञ्जन और मेंढ़ककी टरटर दोनों समान है जहां एक श्रेणी के लोग धन के उन्माद से अन्धे हो कार्य अकार्य विवेक शून्य हो रहे हैं दूसरे श्रेणी के लोग हा अन्न हा अन्न चिल्लाते व्याकुल हैं जहां मूर्ख मण्डली रसिक समाज गिनी जाती है और अज्ञों का नाम सर्वज्ञ भट्टाचार्य्य महा महोपाध्याय है मातृ भाषा न जानना ही पाण्डित्य हां जी में हां जी मिलाना हो जहां पुरुषार्थ और चोखी बात समझी जाती है वहां सब भांत निराश्रया भाषा को इतना भी अवलम्ब होने से निश्चय होता है कि इस का भविष्य काल सर्वथा अन्धकार पूर्ण नहीं है अब वक्तव्य यह है कि जिन महाशयों ने मुझे अवलम्ब दिया है वह केवल जिह्वा मात्र से न हो किन्तु उस का वास्तविक फल भी अब होना चाहिए नहीं तो आप लोगों ने मुझे अवलम्ब क्या दिया अच्छी तरह निरे–बनाया कि पास का दाम भी खर्चैं नई नई बातें सोच मस्तिष्क को पीड़ा दें और समय इतना व्यर्थ जाय उसकी कुछ गिनती ही नहीं है इस्से जल्द इस साल का हिसाब चुकता कर दीजिए क्योंकि दूसरे वर्ष से मेरे मालिकों का कुछ नया प्रबन्ध करने का बिचार है॥

अन्त को सखी और सूम दोनों बराबर हो जाते हैं॥

कई साल से देखने में आता है कि अकाल हम लोगों का पिण्ड नहीं छोड़ता पहिले बङ्गाल और उड़ेसा में हुआ उपरान्त बिहार और तिरहुत में फिर बम्बई और मदरास में अब पश्चिमोत्तर अवध और पञ्जाब में व्याप्त हो रहा है जिसके कारण किरोड़ों हीन दीन मनुष्य इस बिकराल अकाल के कलेवा हो गए और होते जाते हैं हमारी सर्कार ने असंख्य रुपया खर्च किया और रात दिन इसी सोच में रहती है कि किस तरह हिंदुस्तान से इस का कण्ठ मुख कर इसे दूर बहावें इस की जांच के लिए शिमले में एक कमिशन भी बैठाला है इन सब बातों से क्या होता है जब तक सरकार इस सिद्धान्त पर न आवेगी कि प्रजा की भलाई और वृद्धि तभी होती है जब राजा जी से चाहता है; जब हम अकबर आदि पुराने बादशाहों के समय का अब से मुकाबिला करते हैं तो कौड़ी मोहर का फरक देखने में आता है यद्यपि उन बादशाहों की मालगुज़ारी अब

से बहुत कम थी तथापि उन्हें टैक्स लगाने की कोई ज़रूरत नहीं पड़ती थी तवारीखों से प्रगट है कि उस समय काल बहुत कम पड़ता था गेहूं का भाव एक मन से भी अधिक था उनकी सालगिरह के दिन सोना चांदी जवाहिर आदि की तुला होती थी जिस्से गरीब कङ्गालों का बड़ा उपकार होता था अब की सालगिरह किस दिन बीत जाती है सिवा सरकारी नौकरों के किसी को मालूम तक नहीं होता उन बादशाहों के उठने बैठने दरबार आदि के स्थान हीरा जवाहिरों से ऐसे चमकते थे मानों आकाश में तारे चमकते हों सरकारी नौकरी में हिन्दू मुसमान का कुछ ख्याल न था यहां तक की वजीर आज़म (prime minister) भी राजा बीरबल कौम के हिंदू ही थे लेईन्स और चुङ्गी आदि का नाम तक कोई नहीं जानता था इन्साफ भी भरपूर किया जाता था शाहजहां की मालगुजारी ३२ किरोड़ से अधिक न थी और उसने फजूलखर्ची भी बहुत की तौ भी २४ किरोड़ रुपया छोड़ कर मरा ७ किरोड़ का तख़्त ताऊस ताज़गञ्ज का रौज़ा क़िला जिमा मसजिद आदि ऐसी ऐसी इमारतें बनवाईं जो आज दिन दुनियां के परदे में कहीं नहीं है प्रजा को अपने लड़के के समान पालता था अब की सरकार और देशी प्रजा में बड़ा अन्तर देख पड़ता है किसी हिंदुस्तानी को कोई बड़े ओहदे नहीं मिलते तो बीरबल और टोडर मल के से ओहदे पाने की कौन आशा है सिवा भीख मांगने या मेहनत मज़दूरी के प्रजा के लिए कोई उद्यम न बच रहा जो पढ़े लिखे हैं उन पर बड़ी कृपा की गई दफ़्तर की पिसौनी मिली धरती का बन्दोबस्त नित २ कड़ा होता जाता है जिसे ज़िमीदार और खेतिहर किसी तरह नहीं दे सकते गौता भर ज़मीन भी खाली नहीं बच रही जिसमें लोगों के पशु चरा करें अगले पादशाहों ने जो बहुत सी पृथ्वी बिन जोती बोई छोड़ रक्खी थी उस का यही कारण था कि जिसमें गरीबों के पशु चरें और दूध घी खा हृष्ट पुष्ट हो ताकतदार तेज़ हिम्मत और आली हौसला हों जब कभी फौज की नई भरती होती थी तो उस समय एक से एक बढ़ कर योद्धा भरती होते थे अब उन बेचारों को खाने तक को नहीं मिलता वे भला क्या बहादुरी देखावैंगे पहिले प्रजा का रोज़गार भी अच्छा था काम पड़े पर कुछ पूंजी भी निकलती थी अब की सी खुक प्रजा

नहीं थी खुश हुआ चाहें जो आते हैं सिवा रुपया बटोरने के और कुछ जानते नहीं दस पांच लाख की पूंजी जहां जुड़ गई बिलायत की राह ली हिंदुस्तानी ज़रा भी किसी बात में उभड़े उनके दबाने की फ़िक्र की गई बम्बई वालों ने कपड़े की कल जारी किया मैनचेस्टर के बने कपड़ों पर टैक्स कम कर दिया गया जिस में वहां का कपड़ा सस्ता पड़े जितना ही सरकार अपनी आमदनी बढ़ाती जाती है उतना ही अकाल आदि के बन्दोबस्त में खर्च हो जाता है अन्त को साल भर में लेखा डेहुड़ा बराबर हो सखी सूम दोनों एक से पड़ते हैं क्या कारण जो यहां की प्रजा बाबर के वंश के बादशाहों का अब तक स्मरण करती है जिस में हुमायूं अकबर जहांगीर शाहजहां आदि एक से एक बढ़ कर प्रजा पालक हुए परन्तु औरङ्गजेब ने हिंदुओं को बे दिल कर दिया मानों मुसलमानी पादशाहत के जवाल रूपी आग में घी की धार छोड़ा उसके पीछे महराठों का राज हुआ परन्तु प्रजा का ठीक ठीक न्याय वे भी जब न कर सके तब परमेश्वर ने देखा कि मेरी प्रजा की अच्छी तरह रक्षा नहीं हो सकती इस कारण अङ्गरेजी सरकार के हाथ में हिंदुस्तान की बाग दी गई॥

पुलिस।

यह एक ऐसा महकमा है जिससे अमीर गरीब फकीर सब को काम पड़ता है पर इस महकमे में कानस्टेबिल से ले इन्सपेक्टर तक बहुधा बे पढ़े लिखे जाहिल और अक्खड़ होते हैं जिस कारण सर्व साधारण को बड़ी पीड़ा पहुंचती है पुलिस की जो कुछ वर्तमान अवस्था है उस्से तो हम यही नतीजा निकाल सकते हैं कि जैसा भांत२ का टैक्स और चुङ्गी आदि का इन्तिज़ाम प्रजा की बेचैनी के लिए सरकार ने नियत किया है वैसाही पुलिस भी हम लोगों को एक मस्तक का शूल है मुख्य प्रयोजन पुलिस के नियत करने का यह है कि इस्से भले मानुषों की रक्षा हो और चोर जुवारी बदमाशों का शासन हो सो बात सर्वथा विरुद्ध देखने मे आती है यार लोगों का काम जारीही रहता है पान फूल जो कुछ पुलिस वाले चाहें वह भी हाजिर है पुलिस ऐसे कहां के बड़े नेक पाक हैं कि आवते लक्ष्मी टटिया दें बल्कि वहां तो रातोरात पेशगी का हिसाब रहता है हुआ चाहै क्योंकि उसमें

तो चुन चुन कर वैसेही आदमी भरती किए गए हैं जो देश भर के छुटैल छटे और कूड़ा हैं ; जिनमें ऐसी ऐसी उमदा सिफतें हैं उन्हें भले मानुषों को तङ्ग करने में कौन सा मीनमेख है एक साधारण कानस्टेबिल भी तेहवारों पर इनाम आदि न पाय दरवाजे पर कूड़ा मैला नहीं तो नापदान बहने का बहाना तो कहीं गया ही नहीं कोई न कोई बात पाय झूठी सच्ची रिपोर्ट करकराय एक न एक मुकद्दमा खड़ा कर सकता है शैतान ने न जान मारा तो हलाकानही किया सही ; हमारे देश की अशिक्षित प्रजा जैसी कम हिम्मत डरपोक है इस विषय पर हम लेखनी को देर तक नही बिलमाया चाहते तबियत से बिलकुल जोश न रखने के सबब कोतवाली तक जाना जेलखाने से बढ़ कर बे इज्जती की बात समझते हैं वोचही से उनकी पूजा कर जिस तरह हो सका अपना पिण्ड छुटाया पुलिस क्या है छूत ठहरी टैक्स से भी एक गुना ज़ादा है टैक्स तो वैसी छूत है कि साल में एक बार पेट काट दे दिया शुद्ध हो गए पर पुलिस की छूत तो महीने२ और पन्द्रहें २ खड़ी रहती है ; वाह पुलिस से भले मानुषों की कैसी रक्षा होती है और जिस इरादे से उनकी बुनियाद कायम की गई है वह मनशा सरकार का कैसी अच्छी तरह से इन सूबों के द्वारा पूरी होती है ; यदि १० या १५ रुपया माहवारी के वेही हेड कानस्टेबिल स्कूलों के प्रिन्सिपल और हेडमास्टर के मारफत रक्खे जांय तो उनके शिक्षित और नेक चलन होने के कारण क्यों सर्व साधारण को क्लेश पहुंचे और पुलिस को सरकार ने जिस प्रयोजन के लिए स्थापित किया है कि सज्जनों की रक्षा और दुष्टों का दमन जो राजनीति का बड़ा भारी स्तम्भ है वह भी सिद्ध हो ; सुशिक्षित जन जो पुलिस में भरती किए जांयगे तो वे यह तो भली भांत समझेंगे कि पबलिकडूटी -अर्थात सर्व साधारण के हित के लिए हमें क्या करना उचित है ।

पक्षों की सोहबत ।

अहाहाहा क्या गुल खिले हुए हैं ज़रा पक्षों की भी कैफीयत देखने लायक है अबे तुझे कुछ होश है आज सोहबत का मेला है देखता नहीं चोथ के चन्द समान प्रकाशमान ये कौन चले आते हैं इनका इस्मिशरीफ है पुंश्चलीवल्लभ गणिकादास

आंख के अंधे नाम नैनसुख इतने दिनों से हम इन पर हाथ मल मल रहते थे आज ऐसे गाढ़े लगने लगी कि सिमटी देखलाते चले ही जाते हैं गोया कि मुरौवत की कहीं छींट भी नहीं पड़ी मियां तुम ऐसे गुलबदन के तन को जेब यह नहीं देता कि बरमों कामुलाहिजा गली सा चीर फाड़ अलग कर डालो क्या बाल भाल पाके से कोई बूढ़ा हो जाता है दिल का शौक तो वैसा ही चोंकन बना है तब तो मेला देखने आए हैं हय अबे ओ पाईजामे चारजामे को ओ तुझे कुछ सुध बुध है बड़ा मुहजोर हुआ है तेरे मुंह में लगाम नहीं है अगाड़ी पिछाड़ी की भी कुछ खबर रखता है हम भी कुछ कहेंगे तो (तोबड़ा सा मुंह लटका तड़ा हो घर की ओर सरपट भागेगा देखता नहीं शहर के बड़े बड़े रईस महाजन और धनवानों की मण्डली यहां एकट्ठा है लाला शतरञ्जदास वा) बूफीलदास राय सुतरबख्श लाला घोड़मुहे राय अपने २ पार्षद वर्गों को साथ लिए उत्पात केतु ग्रह के समान आसमान में अपनी २ पतङ्ग बढ़ाए उड़ा रहे हैं इमदा २ लटाइयां अपनेमालिक की खूबसूरती का अभिमान ज़ाहिर कर रही हैं हर एक लटाइयों में डोर क्या चढ़ी है मानो उन लम्पटों की नर्क में खींचने को रस्सी है कर्ज़दार लोगों के डेरे हैंखड़े हैकलात लगी सुथरा फर्श बिछा हुआ है तुक्कल और डोर के पिण्डों से भरे हुए संदूक मानो यह कह रहे हैं कि इन कूढ़ बुद्धियों के दुर्व्यसन और दुष्कर्म के खजाने इसमें भरे हुए हैं जो जल्दी से छिन्न नहीं होंगे ठौर २ घड़ों में जल भरे हुए ऐसे मालूम होते हैं मानो बिपत्ति राजधानी में इन को राज गद्दी का अभिषेक करने के लिए वैतरणी और कर्मनाशा आदि नदियों से जल मगाया गया है तीन मन की तोंद लिए यह लट्टूदार पगड़ी कौन है मतिमन्द लाला तिलोकचन्द ओ लाला ज़रा सम्हल कर आसमान ताको कहीं लट्टूदार फिसल न पड़े पतङ्ग उड़ाते २ पसीने में लोथ पोथ डाढ़ी फड़काए यह छज्जू भाई कौन चले आते हैं मियां मीरू मियां खोदा के वास्ते ज़रा होश में आओ हमें खौफ लगता है कि पसीनों में पिघल पानी हो पानी कहीं न हो जाओ डेढ़ दमड़ी की पतङ्ग लिए यह कौन आए लाला झुकाउलाल वह काटे बस फिस तिल्लिल। भाई वाह सत्या-

नाली दास का एका तो खूब झर्राटे का है सेठ बुड्मल साह की पालकी भी खूब सजी है और यह मूर्ख भक्त बाबू कूढ़चन्द का टमटम तो रावण के रथ से भी ऊंचा है आहा ये घिस्सी मल के कनकौए धर्म कर्म और विद्या गुण का कान काटे कैसे उड़े जाते हैं ओ मियां खब्बू खबर-दार रहना पेंच पड़ा है देखना कोई तोड़ न ले चलो अभी बहुत देखना है ये कौन हैं धनिकों का धन चूसने वाली जोंक आहा धन्य हैं ये कलि कल्मष सिद्ध पीठ की योगिनी यह इन्ही की कामदार जूतियों की नोक में इतना असर है जिस की ठोकर रसियों के जी पर भरपूर लगती है इनके चारो ओर कहकहे उड़ाते ये महादेव के गण कौन खड़े हैं ओ बीबी जरा एक नज़र यारों की तरफ भी अबे तू किस गुन का है जान साहब ऐसा मत कहो हम तुम पर धाराधार बहे जाते हैं तुम हम से किनारा कश होती हो तुम तो एक ही खेवे में सैकड़ों को पार कर देती हो तुम ने जो हम पर जरा भी तवज्जो न दी तो हम नाले भर भर मर जायेंगे बस बस चलो यहां से इन की नजर एक बार बिजली सी इस ओर भी चमक अब बदली सी बदली अहा यह क्या तिलिस्मात है अबे यह भी नहीं जानता इसी की बदौलत तो यह सोहबत का मेला है देख यह जगह बजगह गाज़ी मियां के झंडे खड़े हैं और रौज़े पर बड़े ज़ोर शोर की भीड़ हो रही है हर एक झण्डे के पास डफाली लोग रवाना बजाते और गाते हैं (पक्ष महाराज खड़े हो सब चरित्र देखने लगे) नीच जाति की स्त्रियां सिर हिला हिला नाचती कूदती उछलती चली आती हैं डफाली लोग उनसे पूछते हैं हजरत आप कौन हैं अरे तू हमें नहीं जानता हम गाजी मियां हैं हम फाति-मा बीबी हैं इसने हमारे नाम की रोट नहीं चढ़ाई इसे मार डालूंगा छो-ड़ूंगा नहीं इन स्त्रियों के घरवाले पांव पर गिर नाक रगड़ माफ करो हम अंधे आदमी कच्चा पिण्ड हम तुम्हारा भेद का जानी तोबा सौ बार तोबा; चिराग़ जलता है कितने भले मानुष रेवड़ी म-लीदा आदि चढ़ाय २ दण्डवत कर चले जाते हैं; डफाली रवना बजा२ जो गीतें गाते थे उनका स्वर और ताल एक निरालेही ढङ्ग का था पक्ष महाराज ने बड़ी सावधानी से कान लगाकर जो सुना उसे नीचे लिखते हैं।

इफ़ालिक गीते रवाना ताले।

रवाना बजता है।

झकमी व झकझक झकनी क झकझक।
अरे मोर कुदकड़ी घोड़ी पर चढ़ि आवहु देवत: ॥
जोबन अङ्ग सुरेर मजा दरसावहु देवत: ।
लम्बी लट छिटकाय खूब कुदरावहु देवत: ॥
सुहबत मेलवा मझार सुरंग बरसावहु देवत: ।
सब दिन लाज शरम को कसक मिटावहु देवत: ॥
रसियन छैल चिकनियन मन ललचावहु देवत: ।
प्रेम को डोर बढ़ाय खूब तरसावहु देवत: ॥
अंचरा खुलि २ जांय पेट चमकावहु देवत: ।
सब को अन्ध बनाय खूब पुजवावहु देवत: ॥
सोधा रतन पदारथ की झारि लावहु देवत: ।
गंठपूरे आंख अन्धे हिंदुअन धरि लावहु देवत: ।
मुसलमान हुसियार दूर टरकावहु देवत: ॥
बकरी मुर्ग गले पर छुरिआ फिरावहु देवत: ।
बनिया भूंज कलार सबै पञ्चपिरियन देवत: ।
जो फुसलाय फसावैं वह लोगवन देवत: ॥
इल्मि हुनर की बात जल्द छुड़वावहु देवत: ।
धरम करम को लोक सबै मिटवावहु देवत: ॥
सब ह्वै जांय वेवकूफ हमैं पुजवावहु देवत: ।
पोथिया पुरान छिपाय हमै मगवावहु देवत: ॥
चढ़ि २ पतुरियन झुण्ड जमावहु देवत: ।
सुहबत मेलवा बढ़ाय पतंग उड़ावहु देवत: ॥
मड़ मदमी कोठीवालन मुढ्ड बनावहु देवत: ।
हम सब करैं कलोल सोई ढङ्ग लावहु देवत: ॥ इत्यादि

शिवा जी का जीवन वृत्तान्त संख्या ९ के ९ पृष्ट के आगे से।

शिवा जी को युद्ध करने का उत्साह यहां तक बढ़ा कि वह उसे गोप्य न कर सका और १६ वर्ष की अवस्था मे लुटेरे और चोट्टों के एक समूह मे इस इच्छा से मिला कि उनके साथ लूट मार करने में वह अपने जी का हौंसला पूरा कर सकेगा; दादा जी तरुण वयस्क शिवा जी को लुटेरों के साथ मिलते देख अत्यन्त असन्तुष्ट हो उसे बहुत कुछ डांट डपट कर इन दस्यु जनों की सङ्गत छुड़ाने के लिए शिवा जी के हाथ में जागीर का बहुत सा काम काज सौंप दिया; तब से वह कुछ २ सावधान हो कर चलने लगा किन्तु एक बारगी बिलकुल उन लुटेरों का साथ उस का न छुटा। उपरान्त शिवा जी घोड़ सवारों की संख्या नित २ बढ़ाने, लगा अपनी जागीरों में जहां से उसे जितने घोड़े मिल सके उन्हे एकत्र कर अपने आधीनजन सुभक्ती लोगों की एक सेना जोड़ उन्हे कवायद सिखाने लगा ३ वर्ष में एक अच्छी अश्वारोही सेना सज्जित कर १९ वर्ष की उमिर में अति दुर्गम एक पहाड़ी किला टोरना को पहिले पहिल अपने हस्त गत करते अपने युद्धोत्साह के पूरा करने में कमर बांध उद्यत हुआ; दूसरे वर्ष उसने अपनेही खर्च से अपना निज का एक किला और भी तयार करवाया जिसका नाम उसने राय गढ़ रक्खा। इस समय बीजापुर के राज कर्मचारी लोगों में परस्पर बड़ी ईर्षा द्रोह हो गई थी और राजका बन्दोबस्त बड़े हल चल में पड़ गया, अली आदिल वहां का बादशाह था परन्तु बालक होने के कारण इसका कुछ इन्तिजाम न कर सका सर्वोपरि शिवा जी की दुष्टता से उसको अधिकतर क्लेश हुआ। इस अभि प्राय से ५ सहस्र अश्वारोही और ७ सहस्र पैदर सिपाही की एक सेना अफजल खां नामक एक मुसलमान को इसका सेनापति नियत कर पुरन्दर के किले में शिवा जी के शासन निमित्त भेज दिया; शिवा जी यह समाचार पाय अफजल खां को खुश देने के लिए बड़ी नम्रता पूर्वक कई एक पत्र लिखा जिस्मे साफ २ यही मालूम पड़ता था कि वह अपने पूर्व कृत अपराधों की क्षमा मांगता है जो बीजापुर के राज्य लूटने पाटने में उससे बन पड़ा था और भावी समय के लिए फिर ऐसा न करने का प्रण कर सन्धि चाहता है; सन्धि सूचक प्रस्तावों का मर्म्म जानने के लिए

बहुत कुछ सोच बिचार पन्तजी गोपीनाथ नामक एक ब्राह्मण को उसके पास भेजा ; पन्तजी गोपीनाथ का शिवा जी ने बड़े आदर सत्कार पूर्वक आतिथ्यकर अपने शिविर मन्दिर के समीप उसे टिका दिया रात को जब सब सो गए शिवा जी छिप कर उसके डेरे में गया और उसके साथ हिंदू मत की बहुत सी चर्चा करने के उपरान्त उसने कहा कि भगवती दुर्गा ने मुझे आज्ञा दिया है कि तुम हिंदू धर्म्म के उद्धार के लिए हिंदू धर्म्म नाशक यवनों का उच्छेद करो ऐसी ऐसी अनेक प्रकार की वचन रचना से पन्तजी गोपीनाथ को उसने मोहित कर लिया और कुछ थोड़ा सा धन भी दिया यह ब्राह्मण तो थाही धन देख फिसल जाते कितनी देर। अफजल खां शिवा जी के बारंबार विनय गर्भित पत्रों से कुछ मुलायम होही गया था पन्त जी के शिवा जी विषयक परोचना वाक्यों से उसे पूरा विश्वास हो गया कि शिवाजी सर्वथा नम्र हो गया है अफज़लखां से उसकी रूबरू मुलाकात होनेके लिए पन्त जी ने शिफारिस किया उसे अफजल खां ने मंजूर कर लिया ; यह सब वृत्तान्त सुन अपने अभीष्ट साधन की उत्तम उपाय जान शिवाजी बहुतही प्रसन्न हुआ प्रतापगढ़ जहां शिवा जी उस समय रहता था उसी के समीप एक स्थान दोनों की मुलाकात का ठहराया गया, जिसके चारों ओर उसने ऐसा रूंद कर दिया था कि केवल एक रास्ता आने जाने के लिए रह गई और कई एक हज़ार मुधली जाति की सेना वहां से कुछ थोड़ी दूर पर छिपा रक्खा जिससे अफजल खां के मारने का अपना निठुर विचार प्रगट भी कर दिया, अफजलखां सर्वथा असन्दिग्ध चित्तहोकर केवल एक भृत्य पालकी के आगे २ राह दिखाने को साथ ले उसी स्थान में पहिलेही से जा रहा ; इधर शिवा जी अपना नित्य नैमित्तिक पूजा पाठ आह्निक कर्म्म समाप्त कर वस्त्र के नीचे लोह निर्मित कवच पहिन जिसमें कई एक छोटे २ शस्त्र छुरी आदि छिपाय अंगुलियों में महरठों में प्रचलित बाघनख पहिन अपनी माता के चरणों की वन्दना कर खां से मिलने के लिए चल खड़ा हुआ ; यहां खां बड़ी देर पहले से आ बैठे थे और शिवा जी को एक साधारण नौकर के माफिक आते देख हिन्दुस्तानी दस्तूर के मुताबिक यह उससे आप आगे बढ़ कर गले से लिपट कर ज्योंही मिला त्योंही शिवा जी ने बाघ नख उसकी छाती में गड़ा

दिया यह हाहा कार चिल्लाया और तलवार निकाल शिवा जी को मारा पर यह उसके लिरापोश से कब असर करने वाली है थोड़ी देर के द्वन्द युद्ध के उपरान्त खां साहब गत प्राण हो पृथ्वी में गिर पड़े। खां की फौज अपने सरदार की मौत का हाल सुन एक बारगी सबकी सब शिवा जी पर टूट पड़ी पर एक तो यह बे मालिक की फौज थी दूसरे शिवा जी की सुशिक्षित सुभक्तियों की सेना से कब पार पा सकती थी। ४००० अख्वारोही कुछ पैदर और रसद की जिन्हें सब शिवा जी के हस्त गत हुई मैदान खाली पाकर इसने मनमाना लूट मार की और बीजापुर के राज्य के कई किलों को अपने आधीन कर महीनों तक दुन्दमार मचाए रहा; अन्त को अपने वृद्ध शिक्षक दादा जीपन्त को मरणोन्मुख सुन इसे पूना लौट आना पड़ा दादाजी यद्यपि जीते जी सदा इस मे एक न एक टोंघड़ी लगाता रहा पर उस समय इसने शिवा जी के साहस और वीरताकी बड़ीही प्रशंसा की और इसी तरह करते जाने के लिए उसे प्रोत्साहित किया पर गौ ब्राह्मण और खेतिहरों के रक्षण और पालन में विशेष यत्नवान रहने के लिए उसी बहुत ताकीद कर दिया शेषभागी।

संग्रह ॥

कबित्त।

चैन नहीं दिन रैन परै जब तें तुम नैनिन नेक निहारे। काज भुलाय दिए घर के ब्रजराज मैं लाज समाज बिसारे॥ मो बिनती मनमोहन मानियो मोसों कहूं मति रूठियो प्यारे। मोहि सदा चित सों अति चाहियो नौके के नेह निबाहियो प्यारे॥

चन्द्र लजातु है देखि के रूप मृगा जो लजातु है देखि के आंखन। बिम्ब लजातु है देखि के होंठ लजातु है दाड़िम दन्त की पाखन॥ सांवरे रूप की कोमलता उपमा के लिए सों लजातु है माखन। लैहै करोट तो जैहै खरोंट गड़ैन गुलाब की पाखुरी गातन॥

मुकुट के रङ्ग पर इन्द्र को धनुख वारों अमल कमल वारों लोचन बिशाल पर। कुण्डल प्रभा पै कोटि प्रभाकर वारि डारौं कोटिक मदन वारौं बदन रसाल पर॥ तन के बरन पर नीरद सजल वारौं चपला चमक मनमोहन की माल पर। चाल पै मराल वारौं मेरो मन वारौं और कहा कहा वारि डारौं प्यारे नन्दलाल पर॥

नीकी बनी हृषभानु लली छवि जासु नहीं उपमा जग माहीं। आनन को

द्युति देखि सुधाकर सोचहि तें घट बाढ़ सदाहीं ॥ कञ्जन जाय करें जल में तप नैनन को समता नहिं पाहीं । श्रीफल नीचे किए मुख झूलत जोबन की महिमा जिमि पाहीं ॥ चौबोला ॥

मोर मुकुट सिर दिए प्रभा रवि द्युति कुण्डल धर । कमल नयन सु कपोल नासिका बिच बुलाक बर ॥ उज्वल रसमय तड़ित पीत पट कटि तट सोहत । अमृत पूरि घन सघन श्यामसुन्दर मन मोहत ॥

कबित्त ॥

चल्यो नाहि जात अङ्ग भीजी जात स्वेद मांझ पुलकि तजात गात समुझी न बात है । सीत बिना एरी तेरो तन थहरात सब आनन को रङ्ग कछू आन भयो जात है ॥ आंसू चले जात ध्यान कौन सो देखाति है री तेरी दशा देखे मेरो हिय हहरात है । नेक ही निहारे मनमोहन को रूप आली तेरे रोम रोम में सनेह दरसात है ॥

की धौं नभ दर्पन में श्याम को मुखारबिन्द की धौं दिशा नारिन को श्वेत छटा छाज्यो है । कमला बिलास को तलाव की धौं तीन लोक जीत्यो कामदेव ताको स्वच्छ छत्र छाज्यो है । महादेव देव की नदी को की धौं पुण्डरीक भर मुसक्यान एक ठौर की धौं राज्यो है । तारा गण नायन में उज्वल हृषभ की धौं चांदनी पियूख कूप चन्द्रमा बिराज्यो है ॥

दया किए जाके गया गया मया माया पुरी हया हरि द्वार ज्ञान काशी में न छाया है । यम यमुना सम सरस्वती नियम गङ्गा सत्य प्राग त्याग गङ्गा सागर लखाया है ॥ जग्य जगन्नाथ जो अधीनता अवध शुद्ध चित्त चित्रकूट प्रेम वृन्दाबन भाया है । महादेव गाया यह काया सब तीरथ मयी जो याको भेद पाया सभी तीरथ नभाया है ॥

कामी कूर चाहैं धन कामिनी के भोगन को नामी धन चाहैं नाम करें हम जहान में । लोभी धन चाहैं जोर जोर सांप होन हेत खल धन चाहैं द्रोह ठानै हम महान सों ॥ धर्मी धन चाहैं हम पुन्न को पताका बांधे आलिम धन चाहैं इलमोयत के जुहान को । महादेव साधु धन चाहैं साधु सेवन को भली बुरे चाहैं सबै भेद है चहान में ॥

चन्द्रसेन नाटक संख्या ८ पृष्ट ११ के आगे से ।

प्रम० । चित्ररथ तुम ठीक कहते हो वास्तव में ये मनुष्य जाति के लोग जैसा तुम कहते हो वैसे ही हैं इन्हे अभी और दुख देना चाहिए येतो जितना ही छकें

उतना हो अच्छा भला तो अब तुम ने क्या करना बिचारा है ॥

चित्र० । चलो उस युवा को सोताही यहां से उठाकर कहीं अन्यत्र रख आवें ॥

प्रम०। अच्छा कहते हो चलो (दोनोंगए)

(इन्द्रमणि का प्रवेश)

इन्द्र० । (व्यग्रता पूर्वक) हाय मेरा क्या सर्बनाश हो गया और मैं अधम पापी क्षत्रियों में नीच कुछ न कर सका। हा ! करुणा बिमुख निर्दयी बिधाता इस भारत भूमि पर क्यों तेरा एतना कोप है कि तू इन निष्ठुर प्रकृति म्लेच्छों से इसका दमन किए डालता है ; हाय मैं मन्दभाग्य जन्मते ही क्यों न मरा जो मेरे कारण मगध बंशियों के कुल में एतना बड़ा कलङ्क लग गया ; हाय यह घाव काहे को जन्म भर पुरेगा ; परन्तु क्या करें तलवार भी मुझ से छीन ली गई नहीं तो अपना और मदनलतिका दोनों का सिर काट इस कलङ्क से बचता; हमारे कुल का नाश करने वाली काल भुजङ्गी वह कन्या कहां गई यहां तो हम किसी को नहीं देखते कदाचित इसी घर के भीतर न हो (केवाड़ा खट खटाता है और मदन लतिका आकर खोल देती है इन्द्रमणि उसके गले से लिपट जाती है) बेटो तू लज्जा लेते ही क्यों न मर गई हा तेरा नाम मदनलतिका किसने रक्खा है तेरा नाम तो बिषलता होना उचित था पुत्री यदि तू क्षत्रियों के कुल में अपना जन्म मानती हो तो किसी तरह अपना प्राण दे डाल जिसमें यह कलङ्क हमारे कुल में न लगने पावे ॥

मदन० । पिता जी आप क्या कहते हैं जिस बात से आप ऐसा अधैर्य्य हो महा दुखी हो रहे हो वह कोई बात नहीं भई ॥

इन्द्र० (आश्चर्य से) आं आं यह तू क्या कहती है अरे तुझे दिल्लीपति अल्ला उद्दीन के यहां लिए जाते हैं क्षत्रियों की कन्या म्लेच्छों को ब्याही जाती है कैसा भारी कलङ्क हमारे कुल में लगा चाहता है यह क्या बड़े दुख की बात नहीं है हम क्यों न अधैर्य हों ॥

मदन० । पिता जी यहां तो इस बात की कहीं चर्चा भी नहीं है एक अमर सुन्दर बिशालनेत्र युवा पुरुष मुझे मिला है आप को बिश्वास न हो देख लीजिए यह पड़ा सो रहा है (देखता है और पलँग पर किसी को नहीं पाता)

इन्द्र० । अरे तू झूठ कहती है यहां तो कोई नहीं है भला तू उस पुरुष का कुछ नाम गांव जानती है कि वह कौन था और कहां का रहने वाला था ॥

मदन०। हां यह हम ने पूछा था तब उसने कहा मेरा जन्म राथाओं के कुल में है और सु यहीत नामा चन्द्रसेन अपने पिता का नाम बतलाया पिता जी आप एतना घबड़ाते क्यों हैं फिर के तो देखिए (फिर देखता है और उसके कपड़ों में एक बटुआ पाता है उसमें एक कागद उसे मिलता है जिसमें कलानाथ और उसके बाप का सूक्ष्म वृत्तान्त लिखा है उसे पढ़)॥

इन्द्र० (स्वगत) ऐं यह कैसा परमेश्वर की कृपा से यह तो वैसा ही हुआ जैसा मैं चाहता था यह तो वही चन्द्रसेन का लड़का है जिसके साथ पहिले ही से अपनी कन्या का विवाह करने के लिए मैं बात हार चुका था पर यह सब घटना किस प्रकार हुई कलानाथ यहां कैसे आ गया किस तरह इस बात का पता लगे धन्य ईश्वर जो तू इन अघटित बातों को घटना करवा कर क्षत्रियों की प्रतिज्ञा पूरी करवा दिया; सच है विधिना का करतब ऐसा ही होता है "अघटित घटितानि घटयति सुघटित घटितानि जर्जरी कुरुते। विधि रेवतानि घटयति यानि नरो नैव चिन्तयते" अच्छा तो इस की खोज करें और यह सब वृत्तान्त किसी से न कहें (एक ओर कुबड़े को पड़ा देख उसे लातें से जगाता है और वह उठते ही चिल्लाते हुए भागता है)॥

कुबड़ा। छोड़ छोड़ हाय रे मैं मरा अब यह भूत मुझे जीते न छोड़ेगा अरे कोई है बचाओ यह भूत मुझे मारे डालता है हाय अब मैं क्या करूं॥

इन्द्र० (उसे रोक) हां हां सुन बतलाव तो क्या हुआ ओरजधर चिल्लाता क्यों है

कु०। नहीं २ हमें मत मार छोड़ दे तेरे पांव पड़ो हो उधिर जा (छुटा कर भाग जाता है और इसी चिल्लाहट में बहुत लोग एकत्र हो जाते हैं॥

समाचार संग्रह।

अब कि साल यहां दो चार आदमी नित्य लूह के बलिदान होते रहे सब लोग पानीही पानी पुकार रहे हैं जल का जीवन नाम इन्हीं दिनों में सार्थक होता है जिसके बिना एक क्षण भी मनुष्य का जीवन दुर्घट है अब तो परमेश्वर ही जीवन दान दे हम सबों के जीवन की रक्षा करे तो हो; हाय हाय दो साल से यह आषाढ़ जी को गाढ़ हो जाता है सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड मानों भाड़ सा धिकता है अमीरियों के शरीर की दुर्गति मानो गवाही है कि यह उसी भाड़ के फुटेरे हैं।

बुन्देलखण्ड से हमारे एक (करेस्पाण्डेंट) सम्वाद दाता लिखते हैं कि यहां ऐसी प्रचण्ड गरमी पड़ रही है कि कुएं सब सूख गए हैं अजय गढ़ की रियासत में सात सात मील तक मुसाफिरों को पानी नहीं मिलता शहर के रहने वालों को बड़ी दूर वावलियों से पानी लाना पड़ता है। पन्ना में ऐसा दुष्काल हो रहा है कि रुपया लेकर बाजार के एक सिरे से दूसरे छोर तक घूम आओ अन्न नहीं मिलता जब तक राजा की चिट्ठी पास न हो अन्न की मण्डियों में मनुष्य पर मनुष्य गिरते हैं। महाराज श्री रुद्रप्रताप सिंह कें सि एस आई जो इन दिनों विद्याबुद्धि में साक्षात वृहस्पति समान शील में सोम तुल्य राजनीति में शुक्र सदृश और प्रताप में सूर्य हैं अपनी प्रजा को दुष्काल से रक्षा होने के लिए बहुत सा अन्न खरीद रक्खा है इस कठिन समय में वही सबों के लिए आधार हो रहा है।

श्रीयुत मारखम साहैब के उत्तम प्रबन्ध से लाइसेन्सटैक्स के बारे में यहां प्रजा पर बहुत काम सख्ती की गई यदि सब शहरों में ऐसाही हुआ हो तो हम अपने लफटिनेण्ट गवर्नर सरजार्जकूपर को अनेक धन्यबाद देते हैं क्या भया जो स्टेटसमैन इनदिनों उनके बहुत बिरुद्ध है।

बहुमूल्य रत्न हानि।

हाय हाय लेखनी तू अपने कज्जल पूर्ण नेत्रों से मसीरूपी आंसू बहाय बहाय इस समाचार को लिखते तेरी छाती क्यों नहीं दरक जाती संस्कृत विद्या के एक मात्र आधार साहित्यार्णव कर्णधार सरस्वती के मूर्तिमान अवतार विद्वन्मण्डल मण्डन पण्डित वर श्रीगदाधर आषाढ़ कृष्ण ८ को इस असार संसार से सुर धाम वासी हुए पण्डित जी मिर्जापुर हाईस्कूल के प्रधान संस्कृताध्यापक थे ऐसे अल्प वय में इनका प्रयाण हम लोगों की आशालता के मुरझाने को मानो वज्रपात हुआ हा मृत्यु ते (रेक) बंचित होनेसे कोई नहीं बचता।

हिंदुस्तान के लिए अब की साल को सिविल सरविस की परीक्षा हुई उसमें केवल १२ आदमी उत्तीर्ण हुए पछतावे की बात है कि उनमें हिंदुस्तानी एक भी नहीं है. हिंदुस्तानियों के लिए १८ वर्ष की कैद का मतलबही यह था।

ता० २५ से यहां वर्षा का कुछ प्रारम्भ होती चला है पर आर्द्रा का जैसा बर्सना चाहिए वैसे कोई लक्षण नहीं देख पड़ते॥

Registered No. 31.

यहां का म्योर्स सेंट्रल कालेज चौथी जुलाई को खुलेगा।

अमरिका महाद्वीप के ब्रिटिश कालम्बिया में सोने की एक नई खान प्रगट हुई है।

इङ्गलैण्ड के बड़े विद्वान प्रोफिसर ह्यू जेस ने मैक्रोफोन नामक एक यन्त्र प्रगट किया है जिसके द्वारा अत्यन्त सूक्ष्म धुनि भी हम सुन सकते हैं जैसा (माइक्रासकोप) अणुवीचण यन्त्र के द्वारा अत्यन्त सूक्ष्म से सूक्ष्म पदार्थ हम देख सकते हैं ठीक उसी तरह यह यन्त्र शब्द सुनने में हम को उपयोगी है॥

बिरारा फेर पाने के विषय में जो सरकार और निज़ाम के बीच बात चीत थी वह ते हो गई पर यह नहीं मालूम कि क्या ते हुआ यदि यह ते हुआ हो कि बिरार न दिया जायगा तो इस्से बढ़कर अन्याय और कौन सा होगा और जो सर सालारजङ्ग से विचचण बुद्धिशाली ने इसे मान लिया हो तो इस्से अधिक मूर्खता और क्या होगी॥

सुनते हैं कि बंबई प्रान्त के २ समाचार पत्र और वरनाक्युलर प्रेस एक्ट के भोजन हुए हम लोग जे दिन जीते हैं गनीमत है परमेश्वर कुशल करे।

वरनाक्युलर प्रेस ऐक्ट को बिल मिस्टर ग्लैडस्टोन ने पारलियामेण्टमें पेश किया है देखें क्या होता है।

विज्ञापन विशेष!

जब से यह पत्र प्रकाश होने लगा है तब से पं॰ बालकृष्णभट्ट इस पत्र के एडिटर(Editor) और पबलिशर(Publisher) अथवा सम्पादक और प्रकाश करने वाले हैं और बाबू माधव प्रसाद इसके म्यानिजर अथवा कार्याध्यच रहे हैं जिस काम को कि अब उक्त बाबू साहेब ने छोड़ दिया है इस लिए आज से म्यानेजर का काम उक्त पं॰ बालकृष्ण जी करेंगे और रसीद पत्र आदि पर उनकी दस्तखत हुआ करेगी।

सूचना।

अब ग्राहक लोग कृपा करके मोल और द्रव्य सम्बन्धी पत्र नीचे लिखे हुए पते से भेजा करें॥

"मैनेजर हिन्दीप्रदीप
अहियापूर
इलाहाबाद।

और लेख आदि नीचे लिखे हुए पते से॥ "सम्पादक हिन्दीप्रदीप
अहियापूर
इलाहाबाद"

मूल्य अग्रिम वार्षिक	...	२)
डाक महसूल	...	।✓)
छमाही	...	१।)
तीमाहीं	...	॥✓)

Printed at the Light Press Benares, by Gopeenath Pateuk
and Published by Pt. Balkrishna Bhut at Ahiyapur, Allahabad

THE

HINDIPRADIPA.

हिन्दीप्रदीप।

—xxxx—

मासिकपत्र।

विद्या, नाटक, समाचारावली, इतिहास, परिहास, साहित्य, दर्शन, राजसम्बन्ध
इत्यादि के विषय में

हर महीने को १ ली को छपता है ॥

शुभ सरस देशसनेह पूरित प्रगट ह्वै आनंद भरै ।
बचि दुसह दुरजन बायु सों मणिदीपसम थिर नहिं टरै ॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरै ।
हिन्दीप्रदीप प्रकाशि मूरखतादि भारत तम हरै ॥

ALLAHABAD.—1st August 1878.
[Vol. I. No. 12.]

प्रयाग श्रावण शुक्ल ३ सं० १९३५
[जि० १ संख्या १२]

बर्ष पूर्ति ॥

बड़े आनन्द की बात है कि आज हमारा बर्ष पूरा हुआ अब से हम एक बर्ष के कहलावेंगे शनैः शनैः हमारा बाल भाव दूर होते चला और हमारे बचन में अब एक प्रकार गुरुता और प्रौढ़त्व आने की आशा होने लगी विशेष हर्ष हमें इस बात का है कि हम इ[illegible] बर्ष को झेल कर पार कर दिया सो समाचार पत्रों के लिए बड़ा घात बर्ष था और विघ्न पर विघ्न आते गए पर लड़ाई में उन से न हटे सच है "कोटिन योधा क्या करैं जो सहाय रघुबीर" दूसरा हेतु हमारी प्रसन्नता का एक यह भी है कि जिस क्रम से हम प्रारम्भ में चले उसी चाल पर आज तक चले आए और अप-

नो शक्ति भर रसिक ग्राहकों के प्रसन्न करने में बराबर यत्न करते रहे एतने पर भी जो ग्राहक जन दोष बुद्धि त्याग हम से तुष्ट न हों तो हम जानते हैं कि ईश्वर ही हम से रुष्ट है मनुष्य का जीवन मरन ईश्वर के आधीन है पर हमारे ईश्वर तो ग्राहक गण हैं क्योंकि हमारी मौत ज़िन्दगी इन्हीं के आधीन है इस्से उचित है कि जो कुछ प्रार्थना गुण स्तुति और धन्यवाद करना हो वह सब इस इन्हीं लोगों का करें जिन की कृपा कटाक्ष से यह शुभ अवसर आज हमें प्राप्त हुआ है ॥

दोहा ॥

धन्य घड़ी धन बार यह धन्य धन्य यह काल ।
कहा जन्म हम को लिए भयो आज एक साल ॥
धन्यबाद आशीष पुनि जो कछु शिष्टाचार ।
अधिकारी सब के वही ग्राहक जौन उदार ॥
जनन मरन जीवन यदपि कर्ता के आधीन ।
हमरे तो कर्ता वही ग्राहक जौन प्रवीन ॥
बच रचना यह सब उनहिं के प्रति जानहु मीत ।
जिनकी कृपा कटाच्छ सों हम यों गावें गीत ॥
कूढ़चन्द जो मूल्य छ देन समै सकुचाहिं ।
धन्यबाद आशीष यह कभौं उनन प्रति नाहिं ॥
पुनि वेक्ष लेवैं चहैं हमैं न कछू बिवाद ।
बर्षोत्सव में आज हम बाटैं यह धनबाद ॥
यह उन ही को उचित है सांचें निज मन माहिं ।
याके अधिकारी बनन लायक वे को नाहिं ॥
धन को तो हौं आपु ही भूखौं सुनहु सुजान ।
साधहुं बचनहि बांटि के उत्सव को दिन मान ॥
श्री माधव परसाद ने बड़ो कीन उपकार ।
धन्यबाद सब से अधिक इन को उचित [illegible]ार ॥

धन बल विद्या लहैं ये रहैं सदा सुख माहिं ।
ईश्वर इनहु सम बहुत कम साहसि देखे जाहिं ॥
काम परौ जब द्रव्य को बिन सकोच इन दीन ।
पूरो ओर सहायता तन मन धन सों कीन ॥
करौं कहां लौं बिनय मैं ईश्वर सों इन हेत ।
जो कछु मन सों चहत हौं नाहीं बाकी सेत ॥
ग्राहक जन पुनि तुमहिं सों बिनय करौं कर जोर ।
ऐसो ही कछु कीजिए रहौं प्रगट चहुं ओर ॥
है मुद्रा कछु होत नहिं एक पुरुष की मीत ।
पै वह दुइ २ दिहे से हम नित गइहैं गीत ॥

सोरठा ।

गयो आज एक बर्ष यातें इतो अनन्द मोहि ।
दुगुनो ह्वै है हर्ष जौन दिना है बीतिहै ॥

पायोनियर और स्टेट्‌समैन ॥

सावन के अन्धे को हरो ही हरी सब सूझती है ठीक ऐसा ही हाल पायोनियर का है स्टेट्समैन अथवा और अखबार जो कुछ सच्चा हाल प्रजा की पीड़ा और अकाल का लिखते हैं उसे यह अपनी कलेहराज़ी के ज़ोर से झूठ ठहरा कर स्टेट्समैन को भांत २ का ताना और गालियां देता है दिया चाहे नाई का दूध भात वाला मसला इस पर अच्छी तरह सुघटित होता है "एक कोई नाई किसी राजा का पांव दाबने को नित्य जाया करता था औरवह समय बड़े दुर्भिच्छ का था सारी प्रजा भूखों मरती थीं जैसा आज कल मर रही है कामदार लोग राजा से आ आ कर कहते थे महाराज दुर्भिच्छ से प्रजा भूखों मरी जाती हैं परन्तु जब राजा उस नाई से पूछते थे कि देश का क्या समाचार है तो वह कहता था महाराज सब लोग आनन्द मगन हैं और नित्य दूध भात खाते हैं यह बात सुन राजा की सावधानी हो जाती थी और प्रजा के दुख मिटाने का कोई उपाय नहीं

सोचते थे जब प्रजा की अत्यन्त पुकार मची और कामदारों ने राजा को फिर घेरा तब राजा ने साफ साफ कह दिया कि तुम झूठी पुकार मचाते हो हमारा खास नाई कहता है कि सब लोग नित्य दूध भात खाया करते हैं, और सब अमन चैन है तब उन लोगों ने जवाब दिया पृथ्वीनाथ इस का कारण यह है कि इसके यहां अब कि साल कुछ धान हो गया है और घर में भैंस दूध देती है इसी से वह अपने सुख पर दृष्टि कर जगत को सुखी मानता है राजा ने कहा हमें किस तरह निश्चय हो तब सब प्रधान गणों ने कहा महाराज इस को दिलजमई आप को थोड़े ही दिनों में हो जायगी उपरान्त प्रधान लोगों ने उस को वह भैंस और चावल सब उस्से छिनवा लिया दो एक दिन बाद राजा ने नाई से जब फिर वही बात पूछी तो वह रोरो कर कहने लगा महाराज बड़ी अंधेर मची है सारी प्रजा भूखों मरी जाती है चोरी चिकारी बढ़ती जाती है कोई खबर नहीं लेता यह बात सुन राजा सब जान गए और प्रजा की रक्षा में जी से उतारू हुए। इसी से हम कहते हैं कि कोई केतना ही मरो पायोनियर को दूध भात में कुछ कसर पड़ा हो नहीं क्योंकि इसकी आमदनी आज कल खूब बढ़ी हुई है और इस के गांहक भी बड़े ज़बरदस्त असामी हैं एडिटरसाहब बङ्गले के बाहर कभी पांव रखते तो प्रजा की पीड़ा का हाल उन्हें मालूम होता हमारी सरकार इसी की बात का प्रमाण मानती है माना चाहे इन के लिखने वाले हैं कौन वेही जिनके हाथ में हमारे देश का बूड़ना या उतरना रख दिया गया है स्टेट्समैन बेचारे या हम लोगों की उन आली दिमाग लम्बी २ डाढ़ी वालों के सामने कौन गिनती है और गिने तो उनका आली दिमागपन फिर कहां रह जाय जो हम लोगों की पोच बातें भी उस दिमाग में जगह पावें खैर जो हो स्टेटसैन से निष्पक्षपात और सच्चे प्रजा के उपकारी को अनेक धन्यवाद है जिन्हों ने एतनी पुकार तो मचाई मानो या न मानो इसका फैसला तो न्याय की कसौटी के आधीन है० यह पायोनियरही सरीखे पत्रों की करतूत है जिस्से बरनाक्युलर प्रेस को मुंह छुट होना पड़ा न्याय तो यह था कि ऐसे २ पत्रों के बन्द करने के लिए कोई ऐक्ट जारी किया जाता तो बरन्याकुलर प्रेस

आपही बन्द रहती क्योंकि पायोनियर ऐसी २ ताने की बातें लिखता है जिसे पढ़ या सुन हम लोगों से मारे कुढ़न के नहीं रहा जाता कहांतक लायल्टी को जीमे जगह दें जब हदसे ज़ियादा कोई चीज़ पक जाती है तो उसमे उफान आने लगती है यह केवल पायोनियर की बोली है जो हम लोगों के जीमे जाकर गोली सी बिध जाती है अन्त को लाचार हो हमे छोटे मुंह बड़ी बात कहना पड़ता है और जित ओर जीता का भाव जी मे उखड़ जाता है एक जान से दो जान होनाही नहीं है देहंवापातयामि कार्यं वासाधयामि पायोनियर अपना क्रम नहीं छोड़ता तो हम क्यों छोड़ दें इसी के कारण यहां तक हुआ कि प्रेस ऐक्ट जारी किया गया देखें आगे क्या होता है, हमारी समझ में इसका परिणाम कुछ अच्छा नही जान पड़ता देखें क्या हो ॥

क्या ईश्वर न्याय करना भी जानता है। क्यों नहीं ऐसा न होता तो क्या संसार के यावत सुख हैं सब हमी लोगों के हिस्से में पड़ते? ऐसा नसीबे का सिकन्दर कौन होगा नसीब वरी तो हम लोगों की पोड़ २ मे भरी है जिधर नज़र उठाकर देखो उधरही से सुख का समुद्र उमड़ा चला आता है दुःख में पच्यमान होना किसे कहते हैं यह हम भूलही गए क्योंकि निर्द्धनी होकर जीना कुछ कष्ट हई नहीं न भूखोंही मरना कुछ क्लेश है यह तो किसी निर्बोध महा मूर्ख की गढ़न्त है कि "कष्टं निर्द्धनजीवन कष्टात्कष्टतरं क्षुधा" फिर क्यों नही अपनी लेई पूंजी किसी न किसी बहाने सब सरकार के सुपुर्द कर देते दो साल से अवर्षण हुआ हो नही अन्न के बोझ से पृथ्वी दबी जाती है अब भी भूख क्या हमे सतावैगी और निर्लज्ज प्राण तन से बाहर न होंगे तुम्हारी कैसी उलटी समझ हो गई है क्या मरने में इस्से कुछ अधिक सुख रक्खा है जितना टिकस के बोझ से पिस जाने में और चुप चाप पुलिस का अत्याचार सह लेने में है "सर्वंपरवशंदुखं सर्वमात्मवशंसुखं" मनु के इस बचन पर हरताल क्यों नहीं लगा देते जिसमें यह कलक तो हमे न हो कि सदा से पराधीन होते आए हैं इस्से हम सुखी नहीं है; यह भी उसी न्यायी का एक न्याय है कि जिस भूमि में हमे जन्म दिया वहां सुमति का राम राज्य स्थापित कर आपस में भेद बुद्धि का कहीं अंकुर भी न

रहने दिया तब तो "जहां सुमति तहां सम्पति नाना। जहां भेद तहां बिपति निदाना॥ कहां तक उसके न्याय का उदाहरण दिया जाय विषमता तो कहीं उससे छू भी नहीं गई भला इससे कौन सी विषमता प्रगट हुई कि पृथ्वीतल के जितने देश हैं सब स्वच्छन्द रह कर मन मानता आमोद प्रमोद और स्वेच्छाचारी हो भला बुरा जो चाहें वह काम कर डालें यहां तक कि परलोक और ईश्वर का मानना भी उनको सभ्यता मे एक प्रकार का कलङ्क ठहराया गया है वे सब भांत सुखी रहें और हम जो फूंक २ पांव रक्खें और बात २ में ईश्वर की भय और परलोक साधन करते २ पिस गए तिनकी यह दशा है कि पृथ्वीराज के उपरान्त आज तक वावपर घाव चढ़ताही जाता है शताब्दी पर शताब्दी का कलेवा करते गए पर हम अपना वेमेही लतमर्द और गर्दखोरी में पड़े सड़ा किए खबरदार यह कभीं जीभ पर न लाना कि ईश्वर समदृष्टि नहीं है यह उसी की ईश्वरता है कि हम लोगों में जिस किसी मे कुछ विच्छित्ति विशेष और चमत्कार देखने में आवे उसका चट पट वारा न्यारा हो जाया करे और जो पृथ्वी के भार भूत आर्य्य जाति के मुन्ड के मालिक होंवे शतायु वरन सहस्त्रायु होकर जीते रहें "पापीचिरञ्जीव सुकृतीगतायुः" यह भी उसी की एक ईश्वरता है कि महाजन और धनी सब अल्पज्ञ होकर मूढ़ मग्ज़ हो जांय फजूल बातों में लखों बिलटाय रुपयों का सत्यानास करें एडिटरों के नाम फूटी झांझी भी न निकले और उनका कुपरिच टेख कुढ़न पैदा होने के लिए विशेषज्ञता हमारे बांट मे आवे; अमीरी करते २ अमीरों के दिमाग सड़ जांय हम लोगों के जी का हौसला कभी न पूरा होने के लिए सदा निष्किञ्चन रहने का फतवा हमें दिया जाय।

पावस।

झूमि २ घनन गगन तल घूमि घूमि मानो भूमि चूमि चाहैं लालसा सुगाढ़ को। एई प्राण गाहक वलाहक बिरहीनन के दाहकसो दामिनि करि जामिनि अपाढ़ को॥ मोर सोर लाय पिक चातकन गाय २ अम्बर जगायो इन बिरहा बिराढ़ को। त्रिविध समीर पीर देत बरबीर बिना आवनी न लागै मोहि आवनी अषाढ़ को॥

कारे घनन ए दतारे सम झूमि झूमि घेरि २ आयो दल भूपति समान के॥

मानो मोर कोकिला पपीहा ए नकीब बोलैं चपलन की चमकै मानो चमक है कृपान के ॥ अम्बर उदंड है यह पावस प्रचण्ड आयो बिरहिन के दंडै को हरै लै पञ्चबान के। भांभारी असान सुनत घोर घमकान आजु बाजत नगारे भारे कारे बदरान के ॥

सरद सिरानो हिम ज्यौं त्यौं बितानो ऋतु शिशिर बसन्त पुनि वैसही गए गए। ग्रीषम जनायो खस खास नै छवायो दिन यामिनी बितायो तन तापैं तए तए ॥ प्रीतम न आयो कछु औरै मन लायो धुन मोरन सुनायो अति छबिसों छए छए। पावस जनायो अब क्यों कर बितायो जाय कादर करत मोहि बादर नए नए ॥

कारे अरुणारे पियरारे धवरारे अति धावत धरातैं मिलि बोझरी लए लए। धूमरे धुमारे मतवारे जलधारे फिरि बरसत तरारे दै अकास मैं छए छए ॥ घहरैं घटाकै घेर घुमरैं घमाकै नभ हहरै हियो मेरे अतन तए तए। प्यारे बिन कैसे लाज चादर सम्हारौं अलि कादर करत मोहि बादर नए नए ॥

बरसैं चहूं ओर सै कारी घटा गरजैं घनघोर मचावत सोरा। बोलत मोर पपीहरा दादुर पापी हियो दरकावत मोरा ॥ हाय दई अब कैसी करूं कहँ जाय बसे हमरे चित चोरा। काहे गए परदेस सुधाकर सूझत ना मोहि को कहुं ओरा ॥

सावन मैं मनभावन जाय कहां परदेस मैं छाय रहे। करि प्रीति मुझे दुख दीनो महा अरु औरन को हरखाय रहे॥ का अपराध कियो है तिहारो पिया मुख इंदु दुराय रहे। कर जोड़ सुधाकर तोसौं कहौं अब काहे हमैं तरसाय रहे ॥

अस का हम सौं अपराध बन्यो जो पठायो नहीं हम को पतियां। असुपान सों सेज को सोचतो हौं नहि भूलैं कौउ बिधि तो बतियां ॥ मनमोहन प्यारे तिहारे बिना कौउ भांति कटैं नहिं ये रतियां। घड़घड़ घड़घड़ गरजैं बदरा सुनि कै धड़धड़ धड़कै छतियां ॥

नीति नहीं कहुं पावस मैं बदरा बिरहीनन के मन लूटैं। मोर पपीहरा चातक औ पिक कान रटान सुनै सुन फूटैं॥ हाय तिहारे बिना मनमोहन देह पिरात नसैं नस टूटैं। पापी सहै दुख एतो तउ मिलिहैं यह आस न प्रान न छूटैं ॥

फूल की माल औ लाल दुकूल ये एक

नहीं तन में हम छाय हैं। और सुनौ मत व्यर्थ बको कोज भांति सुगन्धि नहीं हम जाय हैं॥ जावें भलेहू सबै हम पै कहो कौन के सामुहे जाय दिखाय हैं। तौज हमारी वहै दिन होइ है जौन दिना मनमोहन आय हैं॥

घन घोर घटा घिरि आई सखी द्युति दामिनि दमकत है चहुं ओरा। पांपी पुकारत पापी पपीहरा बोलत हैं वन दादुर मोरा॥ कोकिल कूक करै कलरो चिड़िया चुचुहात मचावत सोरा। शिवराम कहै सुन प्राण पिया बिरहानल तें जिय जात है मोरा॥

अवध बितीत पत पाति हूं पठाई नाहिं उठत कराहि आहि करत रटाव री। बसन बिदार औ सिँगार हार तोरि डार खोल खोल सीस फूल बांधत जटाव री॥ भनत भुनारे भई बिरह बियोग मई दई दुखदाई तन तपन अटाव री। व्याकुल बिहाल बल हाल मुरझाय गिरी घटा ना देखाव बेग आंगन पटाव री॥

दादुर दरेरन दिलोई दिन दीन दुखो दामिनी दमकि दाबि दरद कटाव री। मारत मरोरै मारै मदन महीप मोहि मोरन के सोर चहुं ओर ते हटाव री॥ भनत भुनारे भुण्ड झिल्ली झनकारै झापि पातकी पपीहा फेर फेरि ना रटाव री। घायल सो घूमै घर नाहीं घनश्याम आली घटा ना देखाव बेग आंगन पटाव री॥

(कजली)

टिकस लागल रे कस कास कै छोड़हु अपना रोजगार। टिकस लागल आए न बादल पागल सब संसार॥ टिकस ला०

नगर नगर सब गलिन में घुमले छेकले आय दुआर। डगर डगर में चिपकल् कागजवा देखहु नैन पसार॥ टिकस ला०

कचहरिया से चलल पियदवा करिले आय पुकार। नौ तरीख लौं आपन टिकस दाखिल करहु निकाल॥ टिकस ला०

होय पास चुपके हि दयघालहु नाहीं कोहु उधार। गोरीं धरो जो ऐसे न पावो मेहरी को नथिया उतार॥ टिकस ला०

काल पड़ल वा अन्न न जुरलै मच रही हाहाकार। एती बिपतिया माथे पड़लेह टिकस कै धुधुकार॥ टिकस ला०

चैनी कजलिया बहु दिन गइले सुख ह्व कौन अपार। ऐसन फिरङ्गिया टिकस लगौले बिगड़ गयल सब तार॥ टिकस लागल रे कस कस कै छोड़हु अपना रोजगार॥

बर्नाकुलर प्रेस ऐक्ट॥

(डिसप्याच)

लार्ड क्रानब्रुक ने बर्नाकुलर ऐक्ट के बारे में जो डिसप्याच भेजा है उस्से मालूम होता है कि नए सेक्रेटरी आफ स्टेट साहब ने हम लोगों पर बड़ी कृपा की है अर्थात् यह लिख भेजा कि यदि हम सचमुच किसी अफिसर की बुराई देखलावें तो गवर्नमेण्ट को नाराज़ न होना चाहिए निस्सन्देह यह बात सेक्रेटरी साहिब ने न्याय समझ कर लिख भेजा है पर यह बात तो केवल कहने की है हम लोग जब ऐसा करते हैं तभी बुराई पैदा होती है उस डिसप्याच ही में लिखा है कि पहिले लार्ड नार्थब्रूक साहब ने भी बर्नाकुलर प्रेस पर कुछ करना चाहा था क्योंकि बर्नाकुलर प्रेस ने बड़ोदा के मामिले में लार्ड नार्थब्रूक को बहुत कुछ सख्त सुस्त कहा था; डिसप्याच में यह भी है कि हम लोग जेनरल डिनंसिएशनन करें अर्थात् समूह को बुरा न कहें किन्तु उसी एक को जिसने कुछ अन्याय वा अनुचित किया हो हम लोग समूह को बुरा कहां कहते हैं किसी एक अखबार ने बिना समझे बूझे कुछ कहा तो क्या सब बरन्याकुलर पत्र बुरे ठहरे फिर समूह को बुरा कहने के लिए हिम्मत चाहिये हम लोगों में ऐसा एका कहां है जो ऐसा साहस करने का मन करेंगे यों तो छिद्रदर्शी किस में छिद्र और दोष नहीं निकाल सकते पर इन्साफ न पूछो तो बरन्याकुलर प्रेस सरकार का किसी तरह हानिकारक नहीं है॥

(पार्लियामेण्ट की काररवाई प्रेस ऐक्ट की अर्जी पर)

वाह धन्य पारलियामेण्ट! ऐसी बड़ी सभा जहां अनगिनत बुद्धिमागर सुनने में आते हैं सुशोभित होते हैं वहां का न्याव और सभासदों की बुद्धि निस्सन्देह प्रशंसा के योग्य है सच है "नाम बड़ेरा दर्शन थोड़ा" जहां की आजादगी निचोड़ सिद्धान्त और "लिबर्टी आफ प्रेस" "लिबर्टी आफ स्पीच" अर्थात् लेख और कथन की स्वच्छन्दता है वहां का यह न्याव नहीं नहीं हम भूल गए हाथी के दांत देखने के अलग और खाने के अलग होते हैं यह भी एक हम लोगों की बुरा नसीबी है कि ऐसी २ महा सभा से भी यथोचित विचार और न्याय हम लोगों के लिए किया जाता है बस अब यह समझना

मूर्खता है कि वहां जो कुछ होता है सब ठीक २ होता है फूले नहीं समाते थे कि क्या भया जो यहां की गवर्नमेण्ट बहुधा अनुचित और अन्याय कर उठती है पारलियामेण्ट में समझ लेंगे सो वहां की कारखाई का परिचय लइसेन्सबिल और इस प्रेस एक्ट से भली भांति मिल गया। २३ तारीख को मिस्टर ग्लैड स्टोन ने जो प्रेस एक्ट वाली अर्जी पार्लियामेण्ट में पेश की थी जिस में १५१ सभासद इस के पोषक थे और २०८ बिरुद्ध थे इस सबब से प्रेस एक्ट जैसा का तैसा रहा॥

संस्कृत की परीक्षा में प्रशंसा पत्र और उपाधि दान॥

बङ्गाल की गवर्नमेण्ट की आज्ञानुसार जो जो जुलाई के गवर्नमेण्ट गजट में मुद्रित है उसका सारांश हम नीचे प्रकाश करते हैं यद्यपि यह केवल बङ्गाल देश के निमित्त है पर हम भाग्यहीन पश्चिमोत्तर देश वालों के लिए यह अद्भुत स्वरूप बातों का सुनाना ही हर्षदायक है। पहिले संस्कृत कालेज में परीक्षा वर्षवें दिन हो कर उसके फलानुसार विद्यार्थियों को छात्र वृत्ति (स्कालरशिप) दी जाती थी और जो छात्र परीक्षा में उत्तीर्ण होने पर भी एक बर्ष और पढ़े उसको विद्यासागर तर्कवागीश न्यायरत्न आदि की उपाधि दी जाती थी और प्रतिष्ठापत्र मिलता था यह रीति १८२८ ई॰ तक प्रचलित रही पहिले शिक्षा सम्बन्धी सभा के अध्यक्षों का स्वाक्षर प्रतिष्ठापत्र पर होता था जब यह सभा उठ गई तो संस्कृत कालेज के प्रिन्सिपल और शिक्षा बिभाग के डैरेक्टर के हस्ताक्षर होने लगे। अब वहां के डैरेक्टर ने यह रिपोर्ट की है कि जो विद्यार्थी संस्कृत भाषा की उत्तम कसौटी में पूरे उतरा चाहें सेवा संस्कृत कालेज के विद्यार्थियों के और लोग भी इसमें शरीक हो सकते हैं यह बात संस्कृत पढ़ने वालों के उत्साह बढ़ाने के लिए इस प्रकार सार्थक समझी गई कि राज द्वार से उन की योग्यता का स्वीकार उन को अत्यन्त सन्तुष्ट और संतुष्ट करेगा यह परीक्षा एप्रिल में होगी ; जिन विषयों में परीक्षा होगी वे अङ्गरेजी और बङ्गाक्षर में छपेंगे ; परीक्षा देने वाले विद्यार्थियों को २) फीस और अपना प्रार्थना पत्र डैरेक्टर के निकट भेजना होगा॥

ग्रंथों के नाम जिनमें परीक्षा होगी॥

(साहित्य)

भारवि, माघ, नैषधपूर्वार्द्ध, मेघदूत, कादम्बरी, शकुन्तला, उत्तरचरित, मृच्छकटिक॥

(दर्शन)

सिद्धान्त लक्षण केवलान्वयी जागदीशी गादाधरी, सामान्यनिरुक्ति, सत्प्रतिपक्ष, अवयव प्रतिज्ञा लक्षण पर्यन्त, अनुमिति स्मृति निरूपण पर्यन्त, गोतमसूत्र विश्वनाथ कृत वृत्ति समेत, भाषा परिच्छेद, मुक्तावली, शब्दशक्ति प्रकाशिका जगदीश कृत, मुक्तिवाद गदाधरकृत, कुसुमाञ्जली हरिदास कृत टीका सहित, वेदान्तसूत्र शङ्कर कृत भाष्य सहित, वेदान्तसार, वेदान्त परिभाषा, छान्दोग्योपनिषद संभाष्य, सांख्यसूत्र प्रवचन भाष्य सहित, पातञ्जल सूत्र सभाष्य, तत्वकौमुदी वाचस्पति मिश्र कृत, सांख्यसार, मीमांसा सूत्र प्रथमाध्याय सभाष्य, न्याय माला माधवाचार्य्य कृत, अर्थसंग्रह लौगाक्षी कृत, सर्वदर्शनसंग्रह माधवाचार्य्य कृत, वेदान्त परिभाषा, कुसुमाञ्जली भोज वृत्ति सहित॥

(धर्म शास्त्र)

व्यवहार तत्व, दायभाग जीमूतवाहन मनुसंहिता कुल्लूक भट्टकृत टीका सहित, विवादचिन्तामणि वाचस्पति मिश्र कृत, व्यवहार मयूख नीलकण्ठ कृत, दत्तक मीमांसा, मिताक्षरा॥

(वेद)

ऋग्वेदसंहिता प्रथमाष्टक सायनाचार्य कृत टीका सहित, ऐतरेय ब्राह्मण सभाष्य, निरुक्त यास्क कृत, वैदिक व्याकरण सिद्धान्त कौमुदी से, माध्यन्दिनीय वाजसनेयि संहिता १-२-३-४ शतपथ ब्राह्मण प्रथम काण्ड, बृहदारण्यउपनिषद चतुर्थ अध्याय, सामवेद छन्दआर्चिक अग्नि और इन्द्रकाण्ड सभाष्य॥

चन्द्रसेन नाटक संख्या ११ पृष्ठ १२ के आगे से।

(तुराब खां का प्रवेश)

तुराब। यह सब क्या हो रहा है तुम लोगों ने क्या हुल्लड़ मचा रक्खा है वह कुबड़ा कहां गया?

(कुबड़ा आ कर तुराब खां के पांव पर गिर) साहिब मैं न करींगा ब्याह वाह कुछ इस पर तो कोउनो भूत है ये सब लोग न आ जाते तो मेरी जान गई रहा॥

तुराब (स्वगत) क्या इस पर कोई जिन है (प्रकाश) यह सब तू सच कहता है॥

कुबड़ा (रो रो कर) हजूर मुझे इसमें

कौन लाभ है जो झूठ बोलूं देखिये मारे डर के अब तक मेरी छाती धड़क रही है साहिब यह तो कोउनी भूतिन है मैं कुबड़ा हुआ तो क्या मुझे अपनी जान उभारू है जो इसके साथ ब्याह करूं आप यकीन मानो जो कोई इसे ब्याहैगा उसे यह जीता न छोड़ेगी ॥

तुराब। ज़रूर इस दुखतर पर किसी जिन की साया है अच्छा तो अब तू घबड़ाता क्यों है खैर मनाव बच गया खुदा के फ़ज़्ल से; इन्द्रमणि कहां है उस्से कह दो हटा ले जाय यह बला यहां से; हम सुलतान को इस की कैफीयत लिखते हैं तुम सब लोग चलो अब यहां से ॥ [सब गए]

(एक बूढ़े ब्राह्मण का प्रवेश)

ब्राह्मण। हा गरीबी कोट आपदा हम एक जन हद्ध ब्राह्मण दर दर मारे फिरते हैं कोई बात भी नहीं पूछता; हम कुछ ऐसे वैसे भी नहीं हैं कि कोरे लठ्ठदास ही हों पढ़े लिखे बहुत कुछ हैं चारों बेद छहो शास्त्र अठारहो पुरान चौदहो बिद्या सब हमारी जीभ के आगे नाच रहे हैं तो भी हमारी पूछ कहीं नहीं होती; अकेले होते तो कोई न कोई भांत निर्वाह कर लेते ब्राह्मणी को क्या करें वह अभी तरुणी है और हम वृद्ध हो गए "वृद्धस्यतरुणीभार्या प्राणेभ्योपिगरीयसी" आप हो गया हो बूढ़ा और स्त्री हो जवान तो प्राण से भी अधिक प्यारी होती है इस्से दिन रात हमें यही चिन्ता लगी रहती है कि किस भांत उसका संतोष करें; हा! इस बुढ़ापे ने हमारी क्या दुर्गति कर डाली कमर झुक गई दांत हिलने लगे बाल सब सफेद हो गए इन्द्रियां नित २ शिथिल होती जाती हैं एतने पर भी यह दरिद्रता इस दशा में भला हम क्या आशा करें कि वह ब्राह्मणी न बहकेगी परमेश्वर ही पत रक्खे; भला हम तो बूढ़े हैं इस कारण उस का मनोरञ्जन सब तरह हमें करना पड़ता है स्त्री के दास न हों तो कैसे बने हमारी कौन हमारा तो जो कुछ हाल है वह किसे प्रगट नहीं है, ऐसा कौन होगा जो अपनी घरवाली का दास न हो क्या पढ़े क्या अनपढ़े क्या सभ्य क्या असभ्य कौन ऐसा नहीं है। हमारी ब्राह्मणी क्या कोई साधारण स्त्री है हम उसे सात परदों के भीतर रखते हैं ऐसा कि सूर्य चन्द्रमा भी उसकी छाया देखने को तरसते हैं उसमें जो कुछ अनोखापन है उसे केवल एक इसी बात से जान लेना चाहिए

कि इसमें कोई तो ऐसी बात है कि हम ऐसे असाधारण महा पण्डित दिन रात उस की चरण सेवा में तत्पर रहते हैं बाहर चाहे कैसा हो औद्धत्यप्रकाश करें पर उसके सामने बड़े नम्र और बिनीत बेश से जाते हैं भगवान करै वह हमारी गृहेश्वरी चिरञ्जीव रहै हमारा जीवन तो उसी से है यह मत कोई समझे कि बनितादास चतुष्पाठी यह सब झूंठ कहते हैं किन्तु मैं इस शुष्क रज्जु (जोंज) की कसम खा कर कहता हूं कि यह किसो तरह मिथ्या नहो है। आज भोर ही से निकले हैं और पता दबाए २ न जानिए कहां २ घूम आए पर मूठी किसी ने गरम न की अब क्या उपाय करें बिना कुछ कमाए जो घर गए तो वह कर्कशा पेट भर खाने को भी न देगी समझे रहे कि इन्द्रमणि की लड़की का ब्याह होगा कुछ भूर दक्षिणा मिल जायगी सो वह भूतिन निकर गई तो अब क्या उपाय करें (सोंच कर) सेठ दमड़ीदास फकीरचन्द की हवेली में बोलाया है कदाचित् कुछ बोहनी हो जाय तो उस कुभार्या की झिड़की से तो बचेंगे भला स्त्रियों में तो अभी एतनी श्रद्धा भी है कि उन से कुछ न कुछ हमारा काम निकल आता है पर जिजमनवे तो ऐसे सयाने होते जाते हैं कि उन के सामने हमार कोउनो धूर्तता नहीं चलती ; तो अब जांय देर बड़ी भई ब्राह्मणी घबड़ाती होगी॥ (प्रस्थान)

[जवनिका पतन]

तृतीयोऽङ्कः।

निवापाञ्जलिः।

गुरुवर गदाधर शर्म्मणः प्रीतए।

सब बिधि मोहि असमर्थ श्रीगुरुवर तुम जानियो।
तुव निवाप के अर्थ बच रचनाहो करत हौं॥

हाय गदाधर तत्व धर मालवीय कुल केत।
ऐसे थोरे समय मे प्राण तज्यो कत हेत॥
मृत्यु सबै कोहोति है यद्यपि जानहुं हाय।
सुधि आए तुव गुणन की दूर ज्ञान चल जाय॥
हा अन्तक निर्दय निठुर तोसों का बस मोर।
तू अपनेहि मन की करै लाख मचावहुं सोर॥

केते अन्धे देखियत किते लुञ्ज जग माहिं।
सूझै नहिं चल नहिं सकैं रटैं रैन दिन चाहि॥
बांभ हेतु घर है नहीं तन पै वस्त्र न दाम।
पड़े रहैं पेड़न तरे सहैं शीत जल घाम॥
केते कँगले काल बस पावन अन्न न खाहिं।
किते पाय कबहूं कबहुं समय बितावत जांहिं॥
हाय नहा इन दुखिन तू पूछत काल कराल।
उलटोही सब देखियत दुर्गम विधि तुव चाल॥
जगमे जिनको सुख कछू पुनि सखो सुख जौन।
उन्हे देखिकै मृत्यु तू कोउ विधि धरत न मौन॥
एक शास्त्र जे जानहीं अस बहु हैं जग मांहि।
जो सब शास्त्रन को कहैं तुम सम बिरले देखाहिं॥
वैया करणी बहुत हैं नैयायिकहु अनेक।
सब शास्त्रन मे सिद्ध पुनि तुम सम कोऊ एक॥
खेदित चित को देखिके हरखावे कहि बात।
पुनि सबके मन को कहै अस कोउ नाहिं देखात॥
बुरो कर्म्म में देखि मन कियो न कबहूं कोप।
नित समुझायो बात करि दूजे पै करि रोप॥
कहा लिखौं का नहिं लिखौं एक लिखनहीं हाथ॥
तुमसों कोउ बिधि भेंट नहिं व्यर्थ पिरावन माथ॥

श्लोक।

विद्या हृद्या सदसि पटुता माधुरी माधुरी णा-
सौहार्दं तन्निखिल जनता ताप कर्पूर चूर्णम्।
कान्तिर्यौधिद्द दयवश्य श्लोकचन्नु: पवित्री-
सार्द्धं याता गतवति दिवं मालवीये गुरौन: ॥ १ ॥
धन्या देवगणास्तप: सुविहितं तैर्नूनमा वर्जितं
भूदेवप्रवरं गदाधर मद्दो पश्यन्ति हृत्तोषदम्।
विश्वयेन विनाद्य शून्य मखिलं येषां विभात्यद्यतो-
हा दैवेन पराङ्मुखेन सहसा सर्वे वयं वञ्चिता: ॥ २ ॥

अब्देबाणाप्ररिन्न ३नन्दे ८न्दु १भिरथ मिते१८३५वैक्रमे विक्रमारव्ये मार्त्तण्डे ह्युत्तराश्रां गतवतिशुचौ कृष्णपक्षेऽष्टमि-ष्याम् । वारेभानोर्भरानी पतिपदकमल-चित्तवर्येऽति वर्षीन्ब्रह्मानन्दं प्रयातो बुधवर गदापूर्वनामाद्विजेन्द्रः । २ ।

समाचार संग्रह ।

स्थानिक ।

आषाढ़ सुदी में दो तीन पानी हुए पर श्रावण में अभी तक कोई अच्छा पानी नहीं बरसा सवेरेही से ऐसा निचाट घाम निकलता है मानो नाम को भी वर्षाऋतु नहीं है ज्वर की बड़ी आधिक्यता है कहीं २ डेंगूफीवर का भी प्रादुर्भाव होते चला है ।

सुनते हैं कि दुर्भिक्ष पीड़ितों की सहायता के लिए यहां भी रिलीफवर्क का कुछ काम खुलने वाला है ।

यहां के शेशनजज्ज मिस्टर क्लिनटन इस महीने के अन्त में नैनीताल अकाल के बन्दोबस्तके लिए जो कमिशन नियत की गई है उसमें जांयगे और उनके स्थान से मिर्जापुर के सेशनजज्ज मिस्टर हरिशन आवैंगे ।

काले रङ्ग की फजीहत ।

देह का काला रङ्ग एक ऐसा गुनह हम लोगों के गले बध गया है कि जिस का प्रायश्चित किसी तरह नहीं हो सकता चाहो हम केतनीही विद्या और चतुराई वृक्ष २ साक्षात चतुरानन क्यों न हो जांय पर हम काले हैं यह कलङ्क कभी दूर होने वाला नहीं है इसीसे इस गुनह की भरपूर सजा हमें मिलना उचित है यहां तक कि आदमी आदमी के साथ कैसा बर्ताव रखते हैं सो भी नहीं बल्कि इनसान की भी सूरत पाकर भी निरेहैवान (ब्रूटक्रीचर) समझे जांय ; क्यों ब्रह्मा ने ऐसी भूल किया जो मनुष्य के तन में गढ़ रङ्ग हमारा काला कर दिया ; थोड़े दिन हुए मुंशी मन्नोलाल जो सरकार के बड़े खैरख्वाह और पुराने नौकर हैं और अब दोयम दरजे के मैजिस्ट्रेट हैं मारखम साहब मैजिस्ट्रेट के हुकुम से करनैलगञ्ज के थाने पर लोगों को पकड़ कर नए म्युनिसिपल कमिश्नर चुनने के लिए उनकी राय ले रहे थे एतने में डिसट्रिक्ट सुपरिन्टेण्डण्ट पुलिस केम्पबेल अचानक वहां आकर टूपटड़े मुंशी मन्नोलाल कदाचित यदि फुरसत से होते तो सुपरिण्डेण्ट साहेब का आ-

Registered No. 31.

गत स्वागत जैसा उनको पसन्द आता वै साही करते पर वह काम बड़े जरूरत का था इस्से साधारण सलाम साच कर अपने काम में लगे यह बात साहब को नापसन्द आई आया चाहि मन्नीलाल एक हिन्दुस्तानी होकर क्यों ऐसी वे अदवी से पेश आया कि साहब मौसूफ को अच्छत धूप से भली भांत देवता समान न पूजा क्या भया जो वेभी तहसीलदार हैं और दरजे में साहब से कुछ भी कम नहीं हैं पर हिंदुस्तानी तो हैं; इस्से तहसीलदार को साहब से जहां तक कच्ची पक्की सुनाते बन पड़ा अपने बलबुद्धि के अनुसार बहुत कुछ सुनाया और थाने के बाहर भी निकलवा दिया, मुंशी साहब नेभी अपने को वही काला आदमी समझ चुप चाप सब सह लिया और जिस काम को गए थे उसे ज्यों त्यों पूरा कर चले आए अब यह मामिला मारखम साहब के यहां पेश है देखिए क्या होता है।

सूचना।

अब तक जिन लोगों ने मूल्य नहीं भेजा उनके पास नए वर्ष से प्रदीप न जाया करैगा, खैर हमारा दो रुपया गया लोगों की परख तो हमे भरपूर होगई।

विशेष विज्ञापन।

जब से यह पत्र प्रकाश होने लगा है तब से पं॰ बालकृष्णभट्ट इस पत्र के एडिटर(Editor) और पबलिशर(Publisher) अथवा सम्पादक और प्रकाश करने वाले हैं और बाबू माधव प्रसाद इसके म्यानेजर अथवा कार्याध्यक्ष रहे हैं जिस काम को कि अब उक्त बाबू साहेब ने छोड़ दिया है इस लिए आज से म्यानेजर का काम उक्त पं॰ बालकृष्ण जी करेंगे और रसीद पत्र आदि पर उनकी दस्तखत हुआ करेगी।

सूचना।

अब ग्राहक लोग कृपा करके मोल और द्रव्य सम्बन्धी पत्र नीचे लिखे हुए पते से भेजा करें॥

"मैनेजर हिन्दीप्रदीप
अहिआपूर
इलाहाबाद।

और लेख आदि नीचे लिखे हुए पते से॥ "सम्पादक हिन्दीप्रदीप
अहिआपूर
इलाहाबाद"

मूल्य अग्रिम वार्षिक	...	२)
डाक महसूल	...	।~)
छमाही	...	१।)
तीमाहीं	...	॥~)

Printed at the LIGHT PRESS Benares, by GOPEENATH PATHUK and Published by PT. BALKRISHNA BHUT at Ahiyapûr, Allahabad.